<Prabandh.lp2><Aesthetics>< Literature><1979><Sri Ramanath Bhak>
<Prabandh-Sangrah>
❁

१
प्राचीन मैथिली-साहित्यक रूपरेखा

मैथिलीक साहित्याकाशमे विद्यापति सत्ये तीव्र तिग्मांशुक सदृश देदीप्यमान छथि जनिक प्रखर काव्य-प्रतिभाक तेजमे अन्यान्य हुनक पुर्ववर्ती, समकालीन, ओ कतहु कतहु तँ परवर्ती सेहो, कविलोकनिक कृति ग्रह-नक्षत्र-तारा जकाँ विलीन भए गेल। तँ बहुत दिन धरि इएह बुझल जाइत छल जे मैथिली साहित्यक आदि प्रवर्त्तक विद्यापति थिक रो रत्नाकरक खण्ड सभ जखन भेटल ओ प्रकाशित भेल तखन कविशेखराचार्य ज्योतिरीश्वर विद्यापतिक पितामह-भ्राता कहाए मैथिली-साहित्यक आदि प्रवर्त्तकक रूपमे प्रतिष्ठित भेलाह। बहुत दिन धरि हुनक परिचय भ्रमहिमे भोतिआइत रहल। भाग्यसँ हमरा हुनक परिचय पञ्जीमे भेटि गेल जाहि आधार पर आब सिद्ध अछि जे ज्योतिरीश्वर ठाकुर, पालीमूलक अबरझट्टा शाखामे संभूत, विद्यापतिक प्रपितामह धीरेश्वरक समकालीन, महाराज हरिसिंहदेवक आश्रित, तेरहम शक शताब्दीक आदिमे, विद्यापतिसँ गोटेक सए वर्ष पूर्व प्रादुर्भूत भेल छलाह। परन्तु हुनक वर्णरत्नाकरक पर्यालोचनासँ जँ किछु स्पष्ट प्रतीत होइत अछि तँ इएह जे मैथिली-साहित्यक आदि ग्रन्थ ओ नहि भए सकैत अछि, ज्योतिरीश्वर एकर आदि प्रवर्त्तक नहि थिकाह। एहि साहित्यक प्रभात भलहिं विद्यापतिक उदयसँ भेल हो, एकर अरुणोदय भलहिं वर्णरत्नाकरक निबन्धनकें कही, परन्तु ताहिसँ पूर्वहुँ एहि साहित्यक एक गोट दीर्घकालव्यापी युग छल जकरा हमरा लोकनि विस्मृतिक अन्धकारमे डूबल रातिक आख्या दए सकैत छिऐक। परन्तु एहू रातिमे छोट पैघ अनेक ज्योतिष्मान् नक्षत्र उदित होइत रहलाह अछि जनिक क्षीण आलोक ओहि अन्धकारकें चीरि-चीरि हमरा लोकनिकें उपलब्ध होइत अछि। ओहि विस्मृत युगक किछु क्षीण रश्मिकें ताकि ताकिकें चीन्हब ओ चीन्हि चीन्हि मैथिली-साहित्यक जिज्ञासु प्रेमीकें चीन्हएब हमरा एतए लक्ष्य अछि। प्राचीन मैथिली-साहित्यसँ एतए हमरा ज्योतिरीश्वरसँ पूर्वक मैथिली-साहित्य अभिप्रेत अछि।

साहित्यक शरीर थिक भाषा। संवेगात्मक अनुभूति, जकरा साहित्य-शास्त्रमे रसक आख्या अछि, भाषाक माध्यमसँ अभिव्यक्त होइत अछि ओ तें कोनहु साहित्यक इतिहास ओहि भाषाक इतिहाससँ संशिलष्ट रहैत अछि जाहि भाषामे ओ साहित्य उपनिबद्ध रहैत अछि। परन्तु भाषाक स्वरूप स्थिर नहि रहैत अछि। विश्वक इतिहासमे संस्कृते टा एहन भाषा अछि जे भगवान् पाणिनि द्वारा "संस्कृत" भए तेना प्रतिष्टित भेल अछि जे अद्यापि अपन स्वरूप सब ठाम सब समयमे एक रूपक स्थिर रखने अछि। तकर कारण ई भेल जे संस्कृत नामक जे भाषा पाणिनिद्वारा सुसंस्कृत भेल से एहि रूपमे कतहु बाजल नहि जाइत छल। ओ वर्ग-विशेषक भाषा छल, शिष्टक भाषा, द्विजातिक भाषा, पणिडतक भाषा। जनसाधारणक जँ ओ भाषा रहैत तँ

ओहूमे समय-भेदें वा देश-भेदें भेद होइतहिं रहैत। अन्यान्य भाषामात्रमे, जे वस्तुतः भाषा रहल अछि अर्थात् जनसाधारण द्वारा बाजल जाइत रहल अछि, ई परिलक्षित होइत अछि जे कालभेदें ओ देशभेदें ओहिमे थोड़ बहुत परिवर्त्तन होइत रहल अछि ! मैथिली साहित्यसँ मिथिला देशमे रचित साहित्य, किंवा मिथिला देशक वासीक रचित साहित्य नहि, किन्तु मिथिला देशमे बाजल जाइत भाषामे उपनिषद्ध साहित्य बुझल जाइत अछि ओ से भाषा आइ काल्हि जाहि रूपमे व्यवहृत अछि तेहन पूर्व समयमे नहि छल। विद्यापतिक भाषा आजुक मिथिलाभाषासँ कतेक भिन्न छल, वर्णरत्नाकरक भाषा ताहूसँ भिन्न छल, परन्तु मिथिलाभाषा ओ सब थिक, कारण, तत्तत् समयमे
मिथिलादेशमे जे भाषा व्यवहारमे छल तकर ओ लिखित रूप थिक। एखनहु मुजफ्फरपुर-चम्पारन दिशुक भाषा अथवा भागलपुर-मुङ्गेर दिशुक भाषा दड़िभङ्गा-सहरसाक भाषासँ कतोक अंशमे भिन्न अछि ओ तें कतेको जन ओकर नामकरण पर्यन्त कएल अछि "बज्जिका" ओ "अङ्गिका"। परन्तु ओ सब मूलतः मिथिलाक भाषा थिक, मिथिलाक तत्तत् अञ्चलमे व्यवहृत भाषा थिक, ओ जे भेद भेटैत अछि से थिक देशभेदमूलक। कालभेदें अथवा देशभेदें जे भाषाक स्वरूपमे भेद होइत अछि सएह थिक भाषा-विज्ञानक विषय। भाषा होइत अछि विकासोन्मुख, ओकर स्वरूप स्थिर नहि रहए पबैत अछि। परन्तु तें भाषाक मूल स्वरूपमें संदेहक अवकाश नहि रहैत अछि जँ ओहिमे कालभेदें अथवा देशभेदें भेदभाषा--विज्ञानक नियमक अनुकूल हो। देशविशेषक मिथिलाभाषा लिखित रूपमे नहि भेटैत अछि परन्तु कालविशेषक मिथिलाभाषा बड़ प्राचीन कालसँ लिखित रूपमे आबि रहल अछि। एकर वर्त्तमान स्वरूप जाहि स्थिति सब होइत एखन विकसित रूपमे व्यवहृत अछि से भाषा-विज्ञानक विषय थिक। एतए जिज्ञास्य अछि वर्णरत्नाकरसँ पूर्व मिथिला-भाषाक स्वरूप।

भारतीय भाषाक पूर्व समयमे केहन स्वरूप छल तकर सबसँ प्राचीन वर्णन ओ विश्लेषण हमरा महर्षि वाल्मीकिक आदि-काव्यमे भेटैत अछि। प्रसङ्ग अछि अशोक-वाटिकामे सीता-हनुमानक संलाप। जखन हनुमान अपनाकें सीताक समक्ष पबैत छथि तखन हुनका वितर्क होइत छैन्हि जे हिनका कोन भाषामे टोकिऐन्हि; ओ निश्चय करैत छथि जे

वीचं चोदाहरिष्यामि मानुषीमिह संस्कृताम्।।
यदि वाचं प्रदास्यामि द्विजातिरिध संस्कृतम्।
रावणं मन्यमाना सा सीता भीता भविष्यति।
वानरस्य विशेषेण कथं स्यादभिभाषणम्।।
अवश्यमेव वक्तव्यं मानुषं वाक्यमर्थवत्।
(सुन्दरकाण्ड, सर्ग १०, श्लोक १७-१९)

हनुमानजी विचारलैन्हि जे जँ हम संस्कृतमे बजैत छी तँ संस्कृत तँ केवल द्विजाति बजैत छथि, वानर भए हम संस्कृत बाजब तँ सीता बुझतोह जे ई ब्राह्मणकुलमे उत्पन्न विश्वाक पुत्र रावण थिक, वानरक रूप धएकें आएल अछि, डरि जइतीह। तें मानुषी भाषा, मुदा संस्कृत, बाजी। अवश्ये प्रशस्त अर्थसँ युक्त वाक्य, मुदा मानुषी भाषामे, सएह बजबाक चाही।

हमरा लोकनि तँ महर्षि वाल्मीकिकें त्रेतायुगहिक मानैत छिऐन्हि परन्तु यदि हुनका कलियुगहिक राम-कथा-कार मानि ली तथापि हुनक स्वारस्य स्पष्ट अछि जे ताहि समयमे दू गोट भाषा देशमे प्रचलित छल, संस्कृत जे एखनहु ओही नामसँ अभिहित अछि, परिचित अछि, ओ मानुष जकरा हमरा लोकनि लोक-भाषा कहैत छिऐक। संस्कृत केवल द्विजाति बजैत छलाह परन्तु मानुषी भाषा सब बजैत छल, द्विजाति ओ ताहिसँ भिन्नो, जनसाधारण। एहि मानुषी भाषाक सेहो दू गोट रूप छल, "संस्कृत" जकर अर्थ तिलक-नामक सुप्रसिद्ध टीकामे अछि "व्याकरणसंस्कारवती" अर्थात् संस्कृत भेल ओ जकर संस्कार भेल होइक ओ से संस्कार तिलकक अनुसार व्याकरणक संस्कार थिक। गोविन्दराज नामक दोसर टीकाकार एकर अर्थ करैत छथि "प्रयोगसौष्टवलक्षणसंस्कारयुक्ता।" अर्थात् हुनक विचारें संस्कारक लक्षण थिक प्रयोग सौष्टव। ऊपरक अन्तिम पंक्तिक "अर्थवत् वाक्यं" तकरो स्वारस्य एहने "अर्थवत्"मे मतुप् प्रत्यय प्राशास्त्य अर्थमे अछि ओ ओकर अर्थ भेल प्रशस्त अर्थसँ युक्त। अतएव हनुमानक ई निर्णय जे प्रयोगमे सुष्ठु एवं प्रशस्त अर्थसँ युक्त मानुषी भाषा बाजी इएह द्योतित करैत अछि जे मानुषी भाषाक ताधरि ततबा विकास भए गेल छल जे ओकरो संस्कृत ओ असंस्कृत दू गोट रूप छल, साहित्यिक ओ प्राकृत। एहू मानुषी भाषाक व्याकरण छल जाहिसँ भाषाक साधुता
निर्णीत होइत छल, अपशब्दक प्रयोग नहि होइत छल।

से "संस्कृत" मानुषी भाषा कोन छल जाहिमे हनुमानजी सीतासँ वार्त्तालाप कएल? रामचन्द्रसँ हनुमान संस्कृतमे वार्त्तालाप करथि तथा हुनक भाषाक प्रशंसा रामचन्द्र मुक्तकण्ठसँ कएने छथि। वस्तुतः हनुमानक भाषाक प्रशंसा भाषाक गुणक विस्तृत ओ चमत्कारक वर्णन अछि जे मनन करबाक योग्य अछि। आनहु ठाम आदि कवि हनुमानकें बड़ पैघ भाषाविद्ध कहल अछि। संस्कृतक अतिरिक्त ओ आनो आनो मानुषी भाषा जनैत छलाह, परन्तु गोविन्दराज कहैत छथि जे हनुमान कोसल-जनपदक भाषामे वार्त्तालाप कएल, कारण दैत छथि "तस्या एव देवीपरिचितत्वात्"। कोसल जनपदक भाषा सीताक सासुरक भाषा छल ओ तें ओहि भाषासँ सीता अवश्ये परिचित छलीह। परन्तु गोविन्दराज जे "एव" कहि ई सूचित करैत छथि जे सीता ओएहटा भा जनैत छलीह से असङ्गत। सीता विदेह-जनपदक कन्या छलीह ओ नेहरक भाषा जे हुनक मातृभाषा छल ताहिसँ ओ परिचित नहि छलीह से कोना कहल जाए। तखन कोसल-नरेशक दूत भए हनुमान गेल छलाह तें ओ अपन प्रभुक मातृभाषामे बाजल होथि से सङ्गत परन्तु इहो तँ ओहने सङ्गत जे अनेक भाषाविद् हनुमान जखन वितर्क कए, विचारिकें, अपन बजबाक भाषाक निर्णय कएने छलाह तखन ओ सीताक मातृभाषामे हुनकासँ वार्त्तालाप कएने होथि।

परन्तु एहिसँ विशेष अन्तरक संभावना नहि। ताहि दिन भारतीय जनपद सबहिक भाषामे बड़ विशेष अन्तर नहि छल, व्याकरणक नियमादि तँ प्रायः सबमे समाने जकाँ छल। अन्तर छल उच्चारणमे ओ कतिपय शब्दमे जे जनपद-विशेषमे व्यवहृत छल। ताहूमे "संस्कृत" जे मानुषी भाषा छल से समीपस्थ अनेक जनपदहुमे प्रायः सदृशे छल। कोसल ओ विदेह दूनू जनपदकें एकहि ठाम छल, वेदहिक समयसँ सदानीरा एहि दूनू जनपद पृथक् करैत छल। विदेहकें मगधक अपेक्षया बड़ विशेष घनिष्ठ सम्बन्ध छल कोसलसँ, ओ से अत्यन्त प्राचीन कालसँ, तथा

राम तथा सीताक विवाह ओही प्राचीन सम्बन्धक एक गोट ज्वलन्त दृष्ठान्त बुझबाक थिक। तें ई अनुमान कएल जाए सकैत अछि जे कोसल-जनपदक भाषा तथा विदेह-जनपदक भाषा-दूहूक "संस्कृत" स्वरूप यदि एके नहि तँ अत्यन्त सदृश छल। तखन इहो कहब अत्युक्ति नहि होएत जे अशोक-वाटिकामे सीता-हनुमानक वार्त्तालाप जँ विदेह-जनपदक संस्कृत मानुषी भाषामे नहि तँ तकर अत्यन्त सदृश कोसल जनपदक संस्कृत मानुषी भाषामे भेल छल। खेद अछि जे एहि संवादक वर्णन महर्षि वाल्मीकि शब्दतः; आनुपूर्वी, नहि कएल अछि, ओकर अनुवाद संस्कृत भाषामे कएकें देल अछि। नही तँ मैथिली-साहित्यक आदितम स्वरूप हमरा लोकनिकें एही संवादमे भेटैत।

परन्तु जे प्राचीन साहित्य उपलब्ध अछि ताहिमे विदेह जनपदक संस्कृत मानुषी भाषा अथवा ओकर अत्यन्त सदृश भाषाक आदितम स्वरूप हमरालोकनिकें भेटैत अछि बुद्धवचनमे ओ महावीर-वचनमे। गौतम बुद्ध कोसल-जनपदक छलाह तथा हुनक मातृभाषा ओहि जनपदक भाषा छल। कोसलक शाक्य ओ विदेहक लिच्छवीकें घनिष्ठ सम्बन्ध छल, बुद्धक कार्यक्षेत्र मुख्यतः मगधमे छल परन्तु कोसल ओ विदेहमे हुनक प्रभाव कम नहि छल। महावंशक अनुसार बुद्धक अत्यन्त प्रिय ओ अन्तिम समय धरि सङ्ग रहनिहार शिष्य, आनन्द, विदेहक ब्राह्मणकुलमे उत्पन्न छलाह। विनयपिटकक चुल्लग्गपे कथा अछि जे जखन कतोक जन सम्यक्सम्बुद्ध भगवान् गौतमक ओतए प्रस्ताव कएल थिन्ह जे अपन वचन ओ छान्दस भाषामे केवल बुद्धहिक वचनमे नहि प्रत्युत पाणिनिअहुक अष्टाध्यायीमे ई छान्दस भाषा ओ भाषा छल जकरा हमरा लोकनि संस्कृत कहैत छिऐक। उपनिषद्ध कएलेथि, कारण, भिन्न भिन्न लोक हुनक वचनकें भिन्न भिन्न भाषामे बाजि दृषित करैत अछि तँ बुद्ध हुनका लोकनिकें खिसिअएलथिन्ह ओ अनुज्ञा देलथिन्ह जे हुनक वचन स्वकीय भाषामे प्रख्यापित कएल जाए। स्वकीय भाषासँ बुद्धक शिष्यलोकनिक अपन अपन भाषा सेहो बुझल जाए सकैत अछि परन्तु से अर्थ प्रसङ्गमे समीचीन नहि बैसैत अछि ओ बौद्ध सम्प्रदायमे एकर अर्थ बुद्धक अपन भाषा बुझल जाइत अछि तथा बुद्धघोष
अपन प्रसिद्ध अट्ठकथामे एकर सएह अर्थ कएने छथि। बुद्धवचन जाहि भाषामे उपलब्ध अछि से एमहर आबि पाली कहबैत अछि तथा एहि सए वर्षमे कतोक महापण्डितगण एहि भाषाक प्रसङ्ग नाना प्रकारक मत प्रकाशित कएने छथि। एहि सभक निष्कर्ष इएह होइत अछि जे पाली कोनहु जनपदक भाषा नहि छल। ओ एक गोट कृत्रिम भाषा छल, विशुद्ध साहित्यिक भाषा, जकर निर्माण जाहि जाहि जनपदमें भगवान् बुद्धक कार्य-क्षेत्र छलैन्हि ताहि सबहिक भाषाक समन्वयसँ भेल छल जे कोनहु जनपदक भाषासँ आनुपूर्वी मिलैत नहि छल परन्तु जाहिमे ओहि सब जनपदीय भाषाक किछु किछु अंश छल। कालक्रमें इएह कृत्रिम भाषा बौद्धधर्मक भाषा भए एशिया महाद्वीपक सुदूर भाग धरि पसरि गेल। डाक्टर सुनीतिकुमार चटर्जीक मत छैन्हि जे मूल बुद्ध-वचन पालीमे नहि छल, ओ छल मगधजनपदक भाषामे, जकरा बुद्धघोष अपन अट्ठखथामे मागधी कहल परन्तु जे मागधी नामक प्राकृतसँ भिन्न छल, बहुत प्राचीन छल। चटर्जी महाशयक विचारें बुद्ध-वचनक पाली-भाषामे निबन्धन बहुत दिनुक बाद, सम्राट् अशोकक समयमे, भेल। अशोक कालीन जनपदीय भाषा सबहिक स्वरूप हमरालोकनिकें तत्तत् जनपदक अशोक-स्तम्भ-लेख सबसँ प्राप्त होइत अछि, ओ जें एहि सब जनपदीय भाषासँ पाली भिन्न अछि तें ई अनुमान बलवत्तर भए जाइत अछि जे पाली कोनहु जनपदक भाषा नहि थिक। सम्भव थिक एहिमे

कोसल- जनपदीय भाषाक प्रधानता हो, भए सकैत अछि एहिमे मगध-जनपदीय भाषाक प्रधानता हो, परन्तु किछु हो, विदेह-जनपदीय भाषासँ ई विशेष भिन्न नहि छल होएत, वदेह-जनपदीय भाषाक सेहो किछु अंश एहिमे अवश्य छल होएत। बुद्धक जीवनकालमे, ओ तकर पश्चातहुँ, हुनक धर्मक प्रसार कोनहु जनपदसँ कम विदेह-जनपदमे नहि भेल; वैशाली ओ कपिलवस्तु ओ वारंवार अबइत जाइत रहलाह; लिच्छवी लोकनि सामूहिक रूपें हुनक अनुमान कएने छलाह; वैदेह मुनि आनन्द हुनक परोक्ष भेलाक पर धर्मक संगीति कएलैन्हि ओ प्रायः चालीस वर्ष धरि संघक सञ्चालन कएलैन्हि। ई कथमपि सङ्गत नहि प्रतीत होइत अछि जे भगवान् अपना वचनमे एहि जनपदक भाषाकें समुचित सम्मान नहि कएने होथि।

तथापि शाक्यमुनि कोसलक छलाह, हुनक मातृभाषा प्राचीन अवधी छल, कोसल जनपदक भाषा। परन्तु जैनधर्मक प्रमुख प्रवर्त्तक महावीर तँ वैदेह छलाह ओ हुनक मातृभाषा विदेह-जनपदक भाषा, मिथिलाभाषा, छल। बुद्धहि जकाँ महावीर सेहो अपन उपदेश जनपदीय भाषामे कएल। छान्दस भाषा, जकरा हमरा-लोकनि आब संस्कृत कहैत छिऐक, वैदिक द्विजातिक भाषा छल, जनपदीय भाषा नहि, ओ जें एहि दुहू धर्मसंस्थापककें अपन अपन धर्मक प्रचार वैदिक धर्मक विरुद्ध जनतामे कर्त्तव्य छलैन्हि तें ओ लोकनि वैदिक धर्मक भाषाकें त्यागि विशुद्ध जनपदीय भाषामे से कएल। जहिना बुद्ध-वचनक भाषा पाली कहाए प्रख्यात अछि तहिना जैनक आदि-ग्रन्थ सबहिक भाषा "अर्धमागधी" कहबैत अछि। पालीक सृष्ठि जँ अशोकक समयमे भेल अछि तखन अर्धमागधी पालीसँ प्राचीन सिद्ध होएत, कारण, महावीरक मूलवचन एही अर्धमागधीमे अछि। बुद्धघोषक कथा जँ सत्य ओ मूल बुद्धवचन जँ मागधी छल, जकरे परिष्कृत रूप पाली भेल हो, तखन अर्धमागधी नाम अन्वर्थक प्रतीत होइत अछि। बुद्धक मूल-वचनक भाषा "मागधी", जकरा हम कोसल जनपदक भाषा परन्तु मगधमे "संस्कृत" मानैत छी; ओ महावीरक मूल वचनक भाषा, विदेह जनपदक भाषा, मागधीसँ बहुत किछु मिलैत परन्तु भिन्न, तें अर्धमागधी। कोसल, मगध, ओ विदेह तीनू जनपद परस्पर सन्निहित छल ओ तीनूक भाषामे भेदक अछैतहुँ साम्य स्वाभाविक। तें भाषातत्त्वविद् लोकनि जे कहथु, इतिहासक दृष्टिसँ इएह सङ्गत प्रतीत होइत अछि जे वैदेह महावीरक मातृभाषा अर्ध-मागधी छल, विदेह-जनपदीय भाषा अर्ध-मागधी नामसँ प्रख्यात भेल, मैथिलीक प्राचीनतम स्वरूप हमरा लोकनिकें महावीरक मूलवचन अर्धमागधीमे भेटैत अछि।

परन्तु मूल बुद्ध-वचनक मागधी, प्रचलित बुद्ध-वचनक पाली, एवं महावीर-वचनक अर्ध-मागधी सब छल ओएह भाषा जकरा वाल्मीकि "संस्कृत मानुषी भाषा" कहने छथि। ई दुहू धर्मप्रवर्त्तक आओर तँ जे कएलैन्हि, भारतीय भाषाक विकासक दिशामे अमूल्य ओ अमर कीर्त्ति कए गेलाह। जनपदीय भाषाकें प्रयोग-सौष्ठवक संस्कार देब ओ प्रयोग-सौष्ठवक हेतु व्याकरणादिक नियम--सब किछु हुनकहि लोकनिक "बहुजनहिताय
बहुजनसुखाय" --नीतिक परिणाम भेल। बौद्ध ओ जैन धर्मक ग्रन्थरत्नमे जनपदीय भाषा साहित्यिक स्वरूप प्राप्त कएल। परन्तु जे भाषाक विकासक धर्म थिकैक, साहित्यिक भाषाक स्वरूप स्थिर होइत गेल मुदा जनपदीय भाषा, यथार्थ लोकभाषा, व्याकरणादिक नियमकें छौड़ैत आगाँ बढ़ैत गेल। मूल बुद्ध-वचनक मागधी बुद्धवचनहिमे रहि गेल, पाली बौद्ध धर्मक साहित्यिक भाषा भए संसार भरि पसरि गेल, अर्धमागधी जैन लोकनिक धार्मिक भाषा भए रहि गेल, मुदा

जनपदीय भाषा परिस्थितिक नवीनता प्रयुक्त क्रमशः नव नव प्रभावसँ, विकार कही अथवा विकास कही, तकरा ग्रहण करैत, नव नव शब्द लैत, नव शैलीमे, नव रीतिसँ, नवीन रूप धारण करैत आधुनिक भाषाक दिशामे अग्रसर होइत गेल। विकासक एहि क्रममे कोनहु समयमे यदि जनपदीय भाषा विशेष समृद्ध भेल, विशिष्ट साहित्यिक रचनासँ प्रसिद्ध पाओल, ओकर व्याकरणादिक निर्माण भेल तँ ओ संस्कृत भेल ओ तखन ओहि भाषाक तत्कालीन स्वरूप "संस्कृत" भए ओहि रूपमे रूपायित रहल। परन्तु तें ई कहब जे एना जनपदीय भाषा स्वरूपायित भए गेल से असङ्त होएत। एक तँ जनपदीय भाषाक विकासक गति कहिओ अवरुद्ध नहि रहल अछि, दोसर, साहित्यिक स्वरूप प्रयोग-सौष्ठव एवं व्याकरणादि संस्कारसँ युक्त होएत किन्तु साधारण लोकभाषामे संस्कार नहि रहने ओकर लोक-भेदें अथवा देश-भेदें भिन्न भिन्न रूप होएब अनिवार्य अछि। अशोकक समयक मगध-कोसल-जनपदक भाषाक "संस्कृत" रूप पाली अद्यापि ओही रूपमे अछि, मागधी प्राकृत मूल बुद्धवचनक मागधीसँ बहुत दूर हटि नाटकादिमे रूपायित भेल ओ एखनहु ओकर स्वरुप स्थिर आछि, परन्तु मगध-जनपदक भाषा किंवा कोसल-जनपदक भाषा क्रमशः विकसित होइत गेल ओ सम्प्रति मगही ओ अवधी कहाए प्रसिद्ध अछि। तहिना विदेह-जनपदक भाषा सेहो विकासक दिशामे बढ़ैत गेल। महावीरक मूल-वचनक भाषा अर्धमागधी जैनधर्मक साहित्यिक भाषाक रूपमे स्वरूपायित रहल परन्तु ओ जैन धर्मक सङ्ग बहराए देश भरि पसरि गेल। लोक क्रमशः बिसरि गेल जे ओ विदेह-जनपदक भाषा थिक, तथा ओ जैनधर्मक भाषाक प्रसिद्धि पाबि परिचित अछि।

विदेह-जनपदक भाषाक विकासक की क्रम भेल तकर केवल अनुमान कए सकैत छी, विदेह-जनपदक कहि लोकभाषाक स्वरूप कोनहु साहित्यिक रचनामे रूपायित उपलब्ध नहि होइत अछि। द्विजलोकनि जे आदिमे छान्दस भाषाकें धएल से संस्कृतक रूपमे वैदिक धर्मक अनुयायी द्विजातिक साहित्यिक भाषा भए गेल ओ वर्त्तमान धरि यथाकथञ्चित् अनुवर्त्तमान अछि। संस्कृतक प्रभाव ततेक व्यापक भए गेल, प्रयोगक सुष्ठुता एवं व्याकरणादिक नियमनसँ ओकर स्वरूप ततेक स्थिर भए गेल जे ओ समस्त ओर्यावर्त्त ओ सुदूर दक्षिण धरि एक रूपमे पसरि गेल। जनपदीय भाषा सब जनपदभेदें भिन्न भिन्न छल परन्तु संस्कृत तँ देश भरिमे, आर्यावर्त्तहिमे नहि प्रत्युत दक्षिणापथहुमे, आर्यजातिक सङ्ग, वैदिक धर्मक सङ्ग, शास्त्रीय विद्याक सङ्ग, प्रसृत होइत गेल। जाहि लेखककें ई अभिलाषा होइन्ह जे हमर कृतिक प्रचार हो--तथा एहि अभिलाषासँ रहित के लेखक होएताह--ओ संस्कृतहिमे लिखथि। आदिमे संस्कृत छाड़ि केवल पाली ओ अर्धमागधी एहन भाषा भेल जकर प्रचार क्रमशः बौद्ध ओ जैन धर्मक सङ्ग भेल छल। भाषाक विकासक क्रम इएह अछि जे जखन कोनहु समयमे कोनहु देशक भाषामे साहित्यक रचना होअए लागल ओ व्याकरणादिक नियम बनल तँ ओहो भाषा "संस्कृत" भए जाइत अछि मुदा जनभाषा असंस्कृत रूपमे विकासक दिशामे आगाँ बढ़ि जाइत अछि। जे संस्कृत भेल से लिखल जाए सकैत अछि, पढ़ल भए सकैत अछि, मुदा जनभाषाक स्वरूप तादृश नहि होइत अछि। तहिना पाली ओ अर्धमागधी जेना संस्कृत छल तेहने भए गेल ओ जनपदीय भाषासँ दूर भए गेल। भेद एतबए जे पाली ओ अर्धमागधी तत्तत् धर्मक अनुयायी मात्रक अध्ययन वा प्रयोगक भाषा रहल किन्तु संस्कृत सब पढ़ि सकैत छल, लीखि सकैत छल। पश्चात् तँ बौद्ध ओ जैन लोकनि सेहो संस्कृतहिक प्रयोग करए लगलाह; हँ, ओ लोकनि ब्राह्मणक भाषा संस्कृतसँ भेद जनएबाक हेतु शुद्धता पर ओतेक ध्यान नहि देथि। बौद्धक महायान सम्प्रदाय, जकर विकास

बुद्धक प्रधान कार्यक्षेत्रसँ प्रारम्भ भेल तकर साहित्यिक भाषा एही रूपक, व्याकरणक बन्धनसँ मुक्त संस्कृत भए गेल। जनपदक भाषाकें जे महत्त्व बुद्ध ओ महावीर देने छलाह से क्रमशः लुप्त होइत गेल। एकर एक गोट कारण इहो भेल जे पूर्वमे जनपदीय भाषा सबहिमे परस्पर ओतेक भेद
नहि छल मुदा जँ जँ समय बितल गेल, जनसंख्या बढ़ल गेल, बहारसँ भिन्न भिन्न प्रकारक प्रभाव बढ़ैत गेल तँ तँ तत्तत् देशभेदें लोकभाषा सबहिक विकास ताहि रूपें होइत गेल जे ओहि सबमे परस्पद भेद बढ़ैत गेल ओ केवल आर्यावर्त्तहुमे कए गोट भाषा भए गेल। एहना स्थितिमे समस्त भारतवर्षक एक गोट भाषा जे सब ठाम प्रचलित हो, जकर स्वरूप स्थिर हो जाहिसँ ओकरा सब लिखि सकए, सब बूझि सकए, सब बाजि सकए से भए गेल संस्कृत। तें संस्कृत भारतवर्षक साहित्यिक भाषा भए गेल। ई स्थिति आइसँ दू अढ़ाइ सए वर्ष पूर्व धरि, अङरेजक समय धरि, अनुवर्त्तमान छल।

परन्तु एक दृष्टिसँ संस्कृत यदि व्यापक होइत गेल तँ दोसर दृष्टिसँ ओहिमे सङ्कोच सेहो कम नहि होइत गेल। संस्कृतक स्वरूप स्थिर छल ओ ओकर विकासक क्रम सर्वथा अवरुद्ध छल मुदा लोकभाषा तँ क्रम क्रम आगाँ बढ़ैत गेल। लोकभाषाक जतेक विकास होइत गेल संस्कृत ततेक लोकभाषासँ दूर होइत गेल। आदि कविक समयमे जे संस्कृत द्विजातिक भाषा छल से क्रमशः ब्राह्मण मात्रक भाषा भए रहल, अथवा ई कहू जे जे केओ ओकर अध्ययन करथि, पण्डित होथि तनिक मात्र साहित्यिक भाषा भएकें रहल। जनपदीय भाषा जनपदक सबहुँक भाषा छल मुदा संस्कृत जे केओ विद्वान् होथि तनिक मात्र, विशेषतः ब्राह्मणक, भाषा भए गेल। एवंक्रमें संस्कृत जनजीवनसँ दूर हटि एकवर्गीय भए गेल, ओ केवल एक वर्गमे, पण्डितवर्ग मात्रमे सीमित भए रहल, परन्तु से भए गेल ओ भारतवर्षक समस्तक, ओकर कोनहु एक भूभागक नहि। भूभागभेदें भिन्न भिन्न भए गेल जनपदीय भाषा जकरा ओहि भूभागक समस्त जनता, ब्राह्मणसँ चाण्डाल धरि, पुरुष ओ स्त्री, आबालवृद्ध, जानए।

विदेह-जनपदक भाषामे महावीरक पश्चात् साहित्यिक रचनाक प्रभाव आश्चर्यजनक अछि। मागधी एवं शौरसेनी, गौड़ी एवं महाराष्ट्री प्राकृतक रूपमे अनेक ग्रन्थमे रूपायित भेटैत अछि ओ नाटकमे स्त्रीगण ओ नीच पात्रक भाषा तँ प्राकृते रहैत आएल अछि। परन्तु मिथिलाक भाषाक की स्वरूप छल से कोनहु साहित्यिक रचनामे नहि उपलब्ध अछि। आत्माभिव्यक्तिक भावना, जे सब साहित्यक जड़ि थिक, से तँ एतहुक लोककें अवश्य छलैक ओ ई भूभाग तँ सब दिनसँ विद्याक आगार रहैत आएल अछि। एतए ग्रन्थक रचना नहि भेल से नहि परन्तु ओ सब ग्रन्थ संस्कृतमे अछि, धर्मविषयक अथवा शास्त्रविषयक, सब महत्त्वपूर्ण, ओ से सब ब्राह्मणक निर्मित। लोकभाषामे जनमनोरञ्जनार्थ काव्यनाटकादि कोनो ग्रन्थ नहि अछि। एकर दू गोट कारण भए सकैत अछि। प्रथम कारण तँ छल लिखबाक कठिनता। पूर्वमे ततबे वस्तु लिखल जाइत छल जे अत्यन्त आवश्यक होइत छल, अतिशय महत्त्वपूर्ण होइत छल। दोसर कारण छल एहि भूभागमे पैघ राजाक अभाव। कार्णाट क्षत्रियक राज्य जे एतए एगारहम शकशताब्दीक अन्तमे स्थापित भेल तहिआसँ पूर्व मिथिलामे अपन केओ राजा छलाह से इतिहासमे नहि भेटैत अछि, ओ मैथिल कालिदासमिश्र पाटलिपुत्रक चन्द्रगुप्त विक्रमादित्यक आश्रित भए हुनकहि सङ्ग पाटलिपुत्रसँ साकेत ओ तत्पश्चात् हुनकहि सङ्ग उज्जयिनी गेलाह। लोकसाहित्यक रचना सब दिन राजाश्रिते होइत आएल अछि ओ तकरा अभावमे, राजनीतिक स्वतन्त्रतासँ रहित,

मिथिलाकें यदि अपन भाषामे रचित किछु नहि छैक तँ से कोनो आश्चर्यक बात नहि। भारत-साम्राज्यक केन्द्र मगधक भाषा नाटकमे प्रतिष्ठित भेल तकर कारण जे नाटकक विकास मगध-सम्राट्क आश्रयमे विशेष भेल। सातवाहनक आश्रयमे गाथासप्तशती एवं बृहत्कथाक निर्माण वा संग्रह भेल ओ तें महाराष्ट्री एवं पैशाची प्राकृतक स्वरूप प्रसिद्धि प्राप्त कएल। मिथिलहुमे कार्णाट राजवंशक स्थापना होइतहिं देशी भाषाक महत्त्व बढ़ि गेल ओ जाधरि मिथिलामे मैथिलक आधिपत्य छल मैथिली उन्नतिक पथ पर पूर्ण अग्रसर होइत गेल। अङरेजक शासन कालमे मिथिला पुनः दबि गेल ओ तें हमर भाषाकें जे कठिनता भेलैक एवं विरोध सहए पड़लैक से ककरहुसँ अविदित नहि अछि। तें ई स्पष्ट अछि जे राजनीतिक स्वतन्त्रताक अभावमे मिथिलाक भाषा साहित्यिक दृष्टिएँ उपेक्षित रहल।

परन्तु तें ई नहि बुझबाक थिक जे मिथिलाक लोक आत्माभिव्यक्तिक दिशामे मूक बैसल रहल। आश्चर्य तँ ई जे राजाश्रय नहिओ छलैक, स्वतन्त्रता अपहृत रहलैक, सुदृढ़ शासनक बराबरि अभाव रहलैक, एवं बहुधा तँ अराजकता सएह छलैक, तथापि मिथिलाक लोक अपन जनपदीय भाषाकें ताहि रूपें सुरक्षित राखल, सुसंस्कृत कए राखल, जे अवसर होइतहिं एहिमे साहित्यिक रचना होअए लागल। एतेक दिन साहित्यिक रचना नहि भए सकल होउक--ओ से नहि भेलैक एहि कारणें नहि जे एतएक लोक साहित्यिक नहि छल, अथवा साहित्यक महत्त्व नहि बुझैत छल, अथवा एहि भाषामे आत्माभिव्यक्तिक योग्यता नहि छलैक प्रत्युत एहि कारणें जे मैथिल कलाकारकें जतए आश्रय भेटैन्हि, पोषण होइन्ह, ततए एहि भाषाक प्रचार नहि छलैक--परन्तु भाषाक विकासक गति कहिओ अवरुद्ध नहि छल। जे रचना भेल से मैखिक रूपमे प्रसृत होइत रहल, ओकरा लिपिबद्ध कए सुरक्षित करबाक आयास असाध्य नहि तँ दुस्साध्य अवश्य छल। परन्तु भाषामे भावाभिव्यक्तिक क्षमता क्रमशः सञ्चित होइत रहल। विद्वानक ई देश, भाषाक पाटव तँ एतए प्रचुर छल परन्तु तकर प्रयोग होइत छल संस्कृतमे। तथापि भाषाक पाटव एके वस्तु थिक; संस्कृतमे वाक्पटुता भेलहिं से पटुता व्यवहारहुक भाषामे अवश्यम्भावी। ओ तें भाषामे जे सब गुण अपेक्षित छैक, यथा श्लेष, लक्षण अथवा व्यञ्जनासँ अर्थोपलब्धि, भिन्न भिन्न पदक समभिव्याहारमे एकहु शब्दक अनेक अर्थमे शक्तिग्रह, केवल मुखसुखावहे नहि अपितु श्रुतिसुखावहो शब्दक चयन, निर्माण ओ प्रयोगबाहुल्य इत्यादि, से सब मिथिलाभाषामे प्रचुरतया परिलक्षित होइत अछि। ई सब गुण सहसा नहि भए सकैत अछि, विशेषत व्यञ्जनावृत्तिसँ पदविशेषमे शक्तिग्रह विनु दीर्घ साहचर्यें सम्भव नहि, तदर्थ कालक अपेक्षा छैक। भाषामे प्रयोगसौष्ठव एवं व्याकरणक नियमन इत्यादि देखि प्रतीत होइत अछि जे सुदीर्घकालहिसँ एहि भाषाक संस्कार होइत छल जकर परिणाम-स्वरूप एहिमे उन्नत भाषाक गुण सब अबैत गेलैक जे एखनहु एहिमे छैक। भाषा तँ छल ई एतए समस्त जन-समुदायक, परन्तु विद्या, आचार, एवं संस्कार आदि कारणें सामाजिक सत्तामे परस्पर भेद ततेक स्पष्ट ओ अधिक छल जे तकर प्रभाव एतएक लोकभाषा पर बड़ व्यापक दृश्य होइत अछि, तथा आदर ओ अनादरक विवक्षासँ केवल सर्वनामहिमे नहि, क्रियापदसमेतहुमे जे भेद मिथिलाभाषामे अछि से प्रायः थोड़ भाषामे भेटत। एहिमे उच्चवर्गीय जनसमुदाय जे समाजक नेतृत्व करैत छलाह से सब प्रायः संस्कृतभाषाक विज्ञ; ओ लोकनिस्वभावतः जनपदीय भाषाक सेहो संस्कृते रूपक प्रयोग करैत छलाह। अन्य लोक जँ से नहि कए सकैत छल तँ तकरा अपन हीनता मानैत छल ओ भाषाक जे संस्कृत स्वरूप छलैक तकर श्रेष्ठता स्वीकार करैत छल। भाषाक संस्कृत ओ

असंस्कृत दुहू रूपक चालि तें एतए बड़ निकट काल धरि वर्त्तमान छल ओ दक्षिण भागलपुर अथवा पश्चिम चम्पारण प्रभृतिक लोक आधुनिक समय धरि जाहि रूपें अपन भाषा घरमे बजैत छल तेना दश लोकक मध्यमे, विशेषतः मध्य मिथिलाक शिष्ट समाजक समक्ष, बजबामे जेना हीनताक बोध करैत छल। हालहिमे एकर प्रतिक्रिया-स्वरूप लोकमे भाषा-विषयक एक गोट स्वच्छन्दता आबि गेल अछि, जाहिसँ भाषाक संस्कृत ओ असंस्कृत रूप, जकर अस्तित्व आदिकवि वाल्मीकिहिक समयसँ आबि रहल अछि ओ जे सब जनपदीय भाषाक स्वभावसिद्ध धर्म थिकैक, तकर उपेक्षा, अवहेलना समेत कहि सकैत छी, दृष्टिगोचर भए रहल अछि। परन्तु यदि एहि भाषाक अतीतक अनुसन्धान करब तँ स्पष्ट होएत जे मिथिलाभाषाक एक गोट सुसंस्कृत स्वरूप सब दिन छलैक जकरा महाभाष्यकार पतञ्जलिक शब्दमे "शिष्टक भाषा" कहि सकैत छी जकर प्रयोग साधारणतया मिथिलाक केन्द्रमे ओ अन्यत्रहु शिष्टवर्गमे होइत रहल। परन्तु तें असंस्कृत रूप नहि छलैक से नहि कहि सकैत छी ओ एही असंस्कृत रूपसँ प्रभावित होइत भाषाक स्वरूपमे परिवर्त्तन होइत रहल। सम्प्रति भाषाक असंस्कृत रूपकें "बोली" ओ संस्कृत रूपकें "भाषा" क संज्ञा देल जाइत अछि।

मिथिला-जनपदक भाषा सुदीर्घ कालसँ विकासक क्रममे उन्नतिक दिशामे अग्रसर अछि तकर पुष्टि एतएक स्वतन्त्र लिपिक प्राचीनता एवं प्रचारसँ सेहो होइत अछि। एहि लिपिक मिथिलाक्षर नाम नवीन थिक; एकर आदि नाम, ओ तें यथार्थ नाम, थिक तिरहुता। एही नामसँ एकर विकासक कालहुक सूचना भए जाइत अछि। एहि जनपदक तीरभुक्तिनाम गुप्तसाम्राज्यकालक थिक, कारण, गुप्तलोकनि अपन राज्यक विभागकें
"भुक्ति" कहथि। तीरभुक्तिक विकृत रूप थिक तिरहुति। गुप्तलिपिसँ विकासकें पओने प्राच्यदेशक ई लिपि गुप्तोत्तरकालमे तिरहुताक नामसँ प्रसिद्ध भेल। सातम ईशबीय शताब्दीक आदित्यसेनक शिलालेख भागलपुर जिलाक मन्दारमे पाओल गेल ओ ई, एहि लिपिक प्राचीनतम स्वरूप उपलब्ध अछि। ईशाक एगारहम शताब्दी पर्यन्त पश्चिममे गया धरि ई लिपि प्रचलित छल जकर प्रमाण गयाक अनेक शिलालेख वर्त्तमान अछि। भारतक पूर्वाञ्चलक सब लिपिक, यथा बङला, असमिया, उड़िया ओ अंशतः नेबारीक, समता एहि सब जनपदक भाषाक समता सेहो संसूचिता करैत अछि, मिथिलाक सङ्ग एहि सबहिक सांस्कृतिक एकरूपताक सूचना दैत अछि।

तें ई कहब असङ्गत नहि होएत जे साहित्यिक रचना सेहो एहि जनपदीय भाषामे बराबरि होइत आएल अछि; से यदि उपलब्ध नहि अछि तँ ताहिसँ ओकर अभाव मानब उचित नहि होएत। अनुपलब्धि अभावक प्रमाण नहि मानल जाए सकैत अछि। अनुपलब्धिक समाधान अन्यथा करए पड़त। एहि अनुपलब्धिक प्रथम कारण भए सकैत अछि लिखबाक कठिनता। पूर्व समयमे लिखब बहुधा असाध्य नहि तँ दुस्साध्य अवश्य छल। वैदिक साहित्यक "श्रुति" संज्ञा इएह द्योतित करैत अछि जे ओ मैखिक रूपमे अभ्यास कएल जाइत छल, ग्रन्थक रूपमे पठित नहि होइत छल। जखन लिखब आवश्यक भेलैक तखनहु सूत्ररूपें लिखबाक परिपाटी चलल जाहिमे थोड़ लिखए पड़ए। बौद्ध जैनादि साहित्यहुक रचना आरम्भमे मैखिके भेल छल। तें एहि भाषामे सेहो जे रचना पूर्वकालमे भेल से सबटा लिखले गेल से नहि अधिकांश रचना मैखिक रूपहिमे भेल होएत। कतेक रचना तँ एहनो व्यक्तिक द्वारा भेल होएत जे लिखए जनितहुँ नहि चलाह होएत। लिखल तँ ओएह वस्तु जाइत छल जे आवश्यक होइत छल, जकर प्रचार देश-

देशान्तरमे अभिप्रेत होइत छल। जनपदभाषाक रचना तँ जनपदहि धरि प्रचरित होइत ओ ताहि हेति लिखबाक श्रम के उठबितए, ओतेक आयास के करितए? विद्यापतिहुक लिखल तँ भगवते उपलब्ध होइत अछि, एको गोट गीत हुनक अपन लिखल कहाँ भेटल अछि ओ हमर तँ विश्वास अछि जे ओ एको गोट गीत प्रायः लिखलैन्हि नहि, रचिकें ककरहु सिखाए देलैन्हि अथवा स्वयं गाबिकें सुनाए देलैन्हि जे लोक सीखि लेलक। प्रतिलिपि सेहो पैघे पैघ ग्रन्थक, विशेषतः संस्कृतक, होइत छल। मैथिली ग्रन्थक प्रतिलिपि केहन लोक करैत छल तकर दृष्टान्त नेपालमे प्राप्त कीर्तिपताकाक पुस्तक अछि अथवा कलकत्ताक संस्कृत कालेजमे भूपरिक्रमाक पुस्तक अछि जाहिमे चारिओ गोट अक्षर शुद्ध लिखल नहि अछि। ई तँ विद्यापति वा हुनक परवर्ती कालक समाचार अछि। ओहिसँ हजार वर्ष पूर्व की स्थिति छल होएत तकर अनुमान केओ कए सकैत छी।

दोसर, एतएक जलवायु तेहन अछि जे कोनो पुस्तक बहुत दिन धरि रहि नहि सकैत अछि। पूर्वमे पुस्तक लिखल जाइत छल तालपत्र पर ओ मिथिलामे हजारो वर्षक कोनो तालपत्र उपलब्ध नहि अछि। मिथिलाभाषाक जे कोनो प्राचीन पुस्तक प्राप्त भेल अछि सब नेपालसँ। मिथिलामे एक प्रति मात्र खण्डित वर्णरत्नाकर उपलब्ध भेल ओ विद्यापतिक संस्कृतसँ भिन्न ग्रन्थ नहि भेटैत अछि। लिखनावली जेना लुप्त भए गेल ओ कीर्तिपताकाक तीनि गोट पात मात्र हमरा उपलब्ध अछि। तें सम्भव थिक जे प्राचीन लेक जँ कोनहु ग्रन्थक छलो तँ से नष्ट भए गेल, ओ आब उपलब्धि नहि अछि।

अतएव निश्चित रूपसँ एहि जनपदक भाषामे रचित कहि कोनो कृति उपलब्ध नहिओ अछि तथापि भाषाक विकास तथा एहि जनपदमे विद्याक व्ययसायकें दृष्टिमे राखि ई कल्पना असङ्त नहि प्रतीत होइत अछि जे एहि जनपदक भाषाक संस्कृत रूप आदि-अहिसँ अनुवर्त्तमान अछि ओ ताहि भाषामे साहित्यिक रचना सेहो अवश्ये भेल होएत। तकर कोन प्रकार छल होएतैक, कोन कोन जातिक साहित्यक एतए सृष्टि भेल होएत, तकर अनुमान किछु तँ मानव जातिक स्वभावज प्रवृत्तिसँ कए सकैत छी, किछु अन्यान्य जनपदक भाषासाहित्यक उपलब्ध कृतिसँ कए सकैत छी, ओ किछु परवर्त्ती साहित्यकारक रचनामे पूर्वक कृतिक
उल्लेखँस सेहो कए सकैत छी, परन्तु सबसँ विशेष तँ ओहि परम्परासँ ओकर कल्पना कए सकैत छी जाहि परम्पराक अनुकूल रचना एतए अविच्छिन्न रूपसँ होइत आएल अछि। हम ई मानैत छी जे ई हमर काल्पनिक चित्र थिक परन्तु कल्पना निराधार नहि अछि ओ कतहु कतहु जे कोनहु कृतिक परिचय साक्षात् वा परम्परया उपलब्ध अछि ताहिसँ एहि चित्रक सामञ्जस्य कल्पनाक चित्रणकें प्रामाणिकता प्रदान कए ह्रदयकें वलित करैत अछि, विश्वास उत्पन्न करैत अछि।

मानव जातिक भावाभिव्यक्तिक प्रथम साधन होइत अछि संगीत तथा कर्णसुखद संगीतसँ ओकर चित्तकें शान्ति भेटैत छैक। संगीतक प्रभाव तँ ज्ञानाविहीन पशु-पक्षी समेतकें मुग्ध कए दैत अछि ओ हरिनकें गीतरसलम्पट कहल गेल अछि। अबोध नेनाकें माए वा धाए गीत गाबि गाबि सुनबैत अछि। विश्वमे जतए देखब भावाभिव्यक्ति सबसँ पूर्व गीत द्वारा भेल अछि, सर्वप्रथम सर्वत्र संगीतमूलके काव्यक सृष्टि भेल अछि। ओ कविताक पश्चात् स्थान अछि कथाक। नेनाकें

बोध होइतहिं कथा सुनबाक उत्सुकता होइत छैक। तहिना मानव-जातिक विकासक आरम्भहिसँ कथाक प्रति औसुक्य परिलक्षित होइत अछि। इएह दू गोट साधन प्रारम्भमे भावाभिव्यक्तिक हेतु सर्वत्र दृश्य होइत अछि जाहिमे बहुधा दुनू मीलिकें प्रबन्ध काव्यक स्वरूप धारण कए लैत अछि जे अनेक ठाम महाकाव्य कहबैत अछि, भारतवर्षहुमे रामायण ओ महाभारत एवं अन्यान्य गाथा सब एकरे दृष्ठान्त थिक। मिथिलाक जनपद-भाषामे इएह दुहू प्रकारक साहित्यिक रचना आरम्भमे लोकानुरञ्जनार्थ भेल होएत। भारतवर्षक अन्यान्यो जनपदभाषाक साहित्य एही दू रूपमे उपलब्ध होइत अछि। गाथासप्तशती ओ बृहत्कथा एही कथाक पुष्टि करैत अछि ओ जातकक कथा सबसँ यदि बौद्धधर्मक सम्बन्ध हटाए दिऐक तँ ओ देशमे प्रसृत कथासाहित्यक प्रायः सर्वप्रथम संग्रह सिद्ध होएत। बृहत्कथा सेहो ओहि कथाक साहित्यिक स्वरूप प्रदर्शित करैत अछि जे देशमे प्रचरित छल ओ जाहि परम्पराक अनुसरणमे मिथिलामे आधुनिक समय धरि कथाक प्रचार छल। ई कथा सब मौखिक रूपें कथाकारसँ लोक सिखैत छल; नव नव कथाकार नव नव कथाक सृष्टि करैत रहैत छलाह, अथवा पुराणहु कथाकें नव कथाकार अपन व्युत्पत्तिसँ पल्लवित करैत रहैत छलाह। भेद एतबए जे बौद्ध कथाकार लोकनि ओहि कथासमूहमे बुद्धक सम्बन्ध जोड़ि जातक-कथाक स्वरूप देल; गुणाढ्य ओही कथा सबकें काव्यक शैली पर अलङ्कृत कए रचल। परन्तु मूलतः ई सब देशमे लोकविषय प्रसृत कथाक भण्डारसँ संगृहीत छल। एहि प्रकारक भण्डार एहू जनपदमे आरम्भहिसँ छल होएत ओ से छल होएत एहि जनपदक भाषामे, अथवा ई कहू जे एतएक लोकविषय कहल जाइत छल होएत एतएक जनपद-भाषामे। तहिना जतेक पर्व अछि अथवा पाबनि होइत अछि सबमे ओकर कथाक चालि एहि जातिक साहित्यक परम्परा सूचित करैत अछि; कारण, कथा सब तत्तत् पर्व वा पाबनिक सम्पन्न अङ्ग बुझल जाइत अछि जाहि विना ओ पर्व वा पाबनि सम्पन्न नहि होएत। कोनहु पाबनिक कथाकें लए यदि ओकर साहित्यिक मूल्याङ्कन करब तँ पता लागत जे कथाक सबटा गुण ओहिमे छैक ओ यदि सब पाबनिक प्रचलित कथाक सग्रंह कएल जाए तँ ओ हमरा लोकनिक साहित्यक एक गोट निधि भए जाएत। एहिमे जे पाबनि केवल मिथिलामे नहि, अनेक जनपदमे प्रचलित छल तकर कथा कोनहु जनपद-विशेषक भाषामे नहि, प्रत्युत सब जनपदमे प्रचलित भाषा, संस्कृतमे, अछि यथा शिवरात्रि वा कृष्णाष्टमी परन्तु जे पाबनि एही जनपदमे प्रचलित छल अथवा आन जनपदसँ किछु नवीनताक संग प्रसृत छल तकर कथा एही जनपदक भाषामे अछि, यथा मधुश्रावणी, सपता-बिपता।

एहि कथा सबहिक भाषा आधुनिक प्रतीत होइत अछि परन्तु एहि प्रसङ्ग ध्यान देबाक विषय थिक जे ई सब मौखिक रूपें परस्परया आबि रहल अछि; प्रत्येक पुश्तिक लोक एकरा अपनासँ पूर्व पुश्तिक लोकसँ सिखैत आएल अछि, ओ एहना स्थितिमे जे स्वभाविक थिकैक, प्रत्येक पुश्तिमे एकर भाषामे किछु ने किछु परिवर्तन होइत आएल अछि। एक वा दुइ पुश्तिमे ई अन्तर परिलक्षित नहि हो परन्तु अधिक दिनुक अन्तर भेला पर प्रत्यक्ष भए जाएत जे कालभेदें एकहि कथामे भाषा कतेक भिन्न भए जाइत अछि। जाहि व्यक्तिकें नित्य देखैत
छिऐक तकर स्वरूपमे दैनिक अन्तर लक्षित नहि होइत अछि परन्तुजाहि व्यक्तिकें अधिक दिन पर देखिऔक तकरा स्वरूपमे यदि अन्तर होइक तँ से लोक लगले लक्षित कए लैत अछि। एक गोट चिन्हार शिशुकें यदि बीस वर्षक उत्तर युवक देखबैक तँ ओकरा चीन्हि सकबैक? परन्तु जे ओही शिशुकें बीस वर्ष धरि नित्य देखैत छैक तकरा हेतु ओहि शिशुकें चिन्हबामे की कोनो

विलम्ब भए सकैत छैक? इएह पर्व अछि भाषाक सम्बन्धमे। जहिना मनुष्य, तहिना भाषा सेहो, प्रतिदिन परिवर्त्तनशील थिक। जे कथा वा फकड़ा वा गीत आइ सहस्र वर्षसँ मौखिक रूपें आबि रहल अछि तकर सहस्र वर्ष पूर्वक राप ओ आजुक रूपमे ओहिना अन्तर परिलक्षित होएत जेना एक शिशुक ओ ओकर युवावस्थाक रूपमे होइत अछि। परन्तु ओहि कथा, फकड़ा अथवा गीतक स्वरूप यदि प्रत्येक पुश्तिक उपलब्ध होइत तँ स्पष्ट होइत जे प्रत्येक पुश्तिमे ओहिमे कतेक सूक्ष्म अन्तर होइत अएलैक अछि जकरा तत्काल लक्षित करब कठिन होएत परन्तु ओएह सूक्ष्म अन्तर सब अनेक पुश्ति धरि होइत होइत अन्तमे एतेक स्थूल भए जाइत अछि जे दुहूकें एक कहब कठिन भए जाइत अछि। हमरा विश्वास अछि जे जे कथा सब मिथिला-जनपदक भाषामे परम्परया आबि रहल अछि तकर वर्त्तमान स्वरूप पूर्वक विकसित रूप मात्र थिक। छओ सए वर्ष पूर्व वर्णरत्नाकरक रचना भेल परन्तु ओकर भाषा, जे ताहि समयक प्रचलित भाषाक संस्कृत स्वरूप थिक, ओहि रचनामे स्वरूपायित भए स्थिर रहल परन्तु भाषाक विकास अवाध गतिसँ चलैत रहल जकर फलस्वरूप वर्णरत्नाकरक भाषा एखनुक भाषासँ एतेक भिन्न प्रतीत होइत अछि; परन्तु डाकक वचन, लोरिककगीत, उपनयनाक गीत अथवा मधुश्रावणीक कथा जे सम्प्रति उपलब्ध अछि तकर भाषाक वर्त्तमान स्वरूप ओकर विकसित रूप थिक परन्तु से विकास प्रत्येक पुश्तिमे होइत आएल आछि। एहि सबहिक प्रचार केवल मौखिक रुपें होइत रहल तें कोनहु कालक ओकर भाषाक स्वरूप उपलब्ध नहि अछि। परन्तु आइ जँ लोरिकक गीतक ओ स्वरूप उपलब्ध होइत जे ज्योतिरीश्वरक समयमे छल तँ देखि सकितहुँ जे ओहि गीतक भाषाक तखनुक स्वरूप ओ एखनुक स्वरूपमे कतेक अन्तर अछि--ओतबे अन्तर अछि जतेक वर्णरत्नाकरक भाषा ओ एखनुक भाषामे अछि। श्रीतन्त्रनाथबाबू स्वदेशमे कीर्त्तिलताक प्रथम पल्लवकें आधुनिक मैथिलीमे रूपान्तरित कए प्रकाशित करओने छथि जाहिसँ हमर एहि उक्तिक पुष्टि होइत अछि, जे हमर एहि कल्पनाक आधार अछि, जे हमर जनपदीय भाषाक परिवर्त्तनशीलताक विलक्षण दृष्टान्त थिक।

परन्तु निश्चित रूपसँ एतबए कहल जाए सकैत अछि जे मिथिला-जनपदक भाषामे कथाक परम्परा सुदीर्घकालसँ आबि रहल अछि। कोन कथा कतेक दिनक थिक, अथवा कोन कालमे कोन कथा प्रचलित छल इत्यादि किछु कहब कठिने नहि, असम्भव अछि। पाबनिओ सबहिक मूल तँ बुझल नहि अछि। आब तँ पुरान कथाक चालिओ उठल जाइत अछि परन्तु जातकमे जे कथा सब अछि अथवा कथासरित्सागरमे कथा सबहिक जे रूप सुरक्षित अछि ताही प्रकारक कथा सब एतहु प्रचलित छल होएत से कल्पना कए सकैत छी। दू गोट कथा श्रीतन्त्रनाथबाबू "योगक इआर" ओ "जिबितहिं स्वर्ग"क नामसँ लीखि प्रकाशित करओने छथि जाहिसँ ओहि परम्पराक दिग्दर्शन भए सकैत अछि। वर्णरत्नाकरमे चतुःषष्ठि कलाक वर्णनमे कथाकौशलक उल्लेख एही परम्पराकें प्रमाणित करैत अछि।

ओ जे कथासाहित्यक प्रसङ्ग कहल अछि से ओहूसँ कत बड़ विशेष सङ्गीतक प्रसङ्ग उपलब्ध होइत अछि। ओना तँ समस्त आर्यावर्त्तक सामाजिक जीवनमे सङ्गीतक बड़ उच्च स्थान अछि, नृत्य ओ गीत प्रायः प्रत्येक उत्सवक हेतु आवश्यक कहल अछि, परन्तु मिथिलाक जनजीवन तँ संगीतमय अछि। मृत्यु छोड़ि जनजीवनक कोनो घटना नहि अछि जाहि हेतु उपयुक्त गीत नहि हो, ओकर उपयुक्त भास नहि हो। प्रत्येक पर्व ओ पाबनिक अपन

अपनाभासक भिन्न भिन्न गीत अछि। समयक उपयुक्त अपन भिन्ने गीत अछि। कतेक प्रकारक गीतक प्रचार अछि तकर अनुसन्धान ओ संग्रह एकन पर्यन्त नहि भए सकल अछि, आब तँ बहुतो लुप्त भेल जाइत अछि। कतेक प्रकारक भास अछि तकर तँ आब केवल कल्पना कए सकैत छी, कारण, ओकर संग्रह तँ आओरो श्रमसाध्य अछि, व्ययसाध्य अछि। परन्तु मिथिलाक जनजीवनसँ जे जन परिचित छथि से सबहुँ
मुक्तकण्ठसँ स्वीकार करताह जे मिथिलाक सामाजिक जीवनमे, जनजीवनमे संगीत एक गोट एहन अभिन्न अङ्ग अछि जाहि विना ओहि जीवनक-कल्पना समेत नहि कए सकैत छि। ई संगीत पुरुषहुक हेतु अछि परन्तु एहि संगीतक मुख्य संरक्षिका रहैत आइलि छथि महिलागण। तावतैब सिद्ध अछि जे ई संगीत लोकभाषा मध्य छल जेना ओ एखनहु अछि। संस्कृतमे राग-ताल-लयाश्रित गीतकाव्यक रचना आइसँ सहस्रावधि वर्ष पूर्व जयदेव गीतगोविन्दमे कएल। परन्तु जयदेव एहि गीतक रचनामे देशमे प्रसृत गीतकाव्यसँ प्रभावित भेल छलाह, ओकरे अनुकरण कए ओ संस्कृतमे गीत रचल। एकर प्रमाण सहजयानक सिद्ध लोकनिक रचना उपलब्ध अछि जकर प्रकाशन चर्यापदक नामसँ भेल अछि। ओहिमे रागादिक नाम ओहिना उपलब्ध होइत अछि जेना गीतगोविन्दमे अछि; ओ जयदेव जे भनिताक व्यवहार चलाओल, जे विद्यापतिक समयसँ लए मैथिली गीतक एक प्रमुख अङ्ग भए गेल, तकरो मूल ओही सिद्ध लोकनिक चर्यापदमे उपलब्ध अछि। चर्यापदक गीत नेपालमे भेटि गेल, ओ सब नष्ट होएबासँ बाँचि गेल, मुदा ओहीसँ अनुमान कए सकैत छी जे जयदेवसँ पूर्वक युगमे कोन प्रकारक गीत होइत छल, कोन रीतिएँ गीतक रचना होइत छल। अतएव लोकभाषामे गीतक परम्परा सुदीर्घ कालसँ जे एहि जनपदमे, समीपवर्ती जनपद सबमे, छल तकर पुष्टि जयदेवहिक एहि नवीन कृत्तिसँ होइत अछि जे संस्कृतक हेतु नवीन छल परन्तु लोकभाषामे ततबा प्राचीन छल, ततबा लोकप्रिय छल, ततबा प्रभावोत्पादक छल जे संस्कृत समेतमे ओकर अनुकरण भेल।

एहि प्रसङ्ग ई विषय स्मरणीय थिक जे आदि अवस्थामे संगीत ओ कविता एकहि रूपमे रहैत आएल अछि। विश्वक सब साहित्यमे ई कथा परिलक्षित होइत अछि। वेदक गान होइत छल ओ पछाति वेदक ओ ऋचासब जे विशेष गानोपयोगी सिद्ध भेल सामवेदक रूपमे संगृहीत कएल गेल। वाल्मीकि एक गोट नव छन्दक सृष्टि कएल जे श्लोक कहाओल ओ ओहि छन्दमे उपनिषद्ध रामकथा गाओल जाइत छल जकर प्रथम गाता छलाह लव ओ कुश। संस्कृतमे नव नव छन्दक सृष्टि संगीतहिक दृष्टिसँ भेल अछि। नाटकमे श्लोक संगीतक काज करैत छल ओ पश्चात् मिथिलामे गीतक लोकप्रिय सिद्ध भेला उत्तर श्लोकक संग संग गीतक व्यवहार प्रारम्भ भेल जे लोकभाषामे रचित होअए लागल। कविता ओ संगीतक पृथक्त्व पश्चात् भेल अछि। मिथिलामे तँ कवीश्वरक समय धरि कविता ओ संगीत एके छल कविताक छन्द ओ गीतक राग एहि नामसँ प्रसिद्ध छल अथवा ई कहू जे गीतक रागहिक नाम कविताक छन्दहुक नाम छल। अतएव प्राक्ज्योतिरीश्वर-युगक संगीत-समृद्धि ओकर काव्य-समृद्धिक ज्ञापक थिक। यदि ओ गीत सब उपलब्ध नहि अछि तँ तकर कारण ओएह जे कथाक प्रसङ्गमे कहि आएल छी। विद्यापतिक प्रतिभाक प्राखर्यमे ओ सब बहुतो लुप्त भए गेल; बहुतो भाषाक अंशमे रूपान्तरित होइत होइत अद्यपर्यन्त यत्रकुत्र प्रसृत होएत, हमरा लोकनि भाषामे परिवर्त्तनक कारणें चीन्हि नहि सकैत छिऐक। परन्तु जे कथा हमरा प्रतिपाद्य अछि, मिथिलाक जनपद-भाषामे संगीतक परम्परा अत्यन्त प्राचीन कालसँ आबि रहल अछि, मिथिलाक जनजीवनक एक गोट अभिन्न अङ्ग

रहलैक अछि ओकर संगीत, मिथिलाक संस्कृति गीतमय अछि, ओ एही गीत सबहिक द्वारा मैथिल जातिक भावाभिव्यक्ति आदिअहिसँ होइत आएल अछि। जहिना विद्यापतिक पश्चात् तहिना ओहिसँ पूर्वहुँ मिथिलाक देशी साहित्य गीतमय छल।

एकर पुष्टि वर्णरत्नाकरसँ सेहो विलक्षण जकाँ होइत अछि। ओ ग्रन्थ सम्पूर्ण तँ उपलब्ध नहि अछि परन्तु जतबा ओ प्रकाशमे आएल अछि ताहिमे एक गोट विषय जकर वर्णन आन कोनहु विषयक वर्णनसँ अधिक अछि, अधिक ठाम अछि, अधिक विन्यास ओ अधिक विस्तारसँ अछि से थिक सङ्गीत। नृत्य, वादित्र ओ गीत--ई तीनू जाहि विस्तारसँ वर्णित अछि ताहि विस्तारसँ आओर किछु नहि। सम्पूर्ण छठम कल्लोलमे मल्लयुद्ध-वर्णना छाड़ि केवल एही तीनि वस्तुक वर्णन अछि। चनुःषष्ठि-कलावर्णनमे गणना आरम्भे होइत अछि नृत्य, गीत ओ वादित्रसँ। छठम कल्लोमले नृत्यक साधारण वर्णन कए ज्योतिरीश्वर पुरुषनृत्य ओ स्त्रीनृत्यक वर्णन प्रेरणनृत्य ओ पात्रनृत्य कहि कएल अछि। विद्यावन्त, जकरा लौकिक भाषामे विदाञोत कहल अछि, दुइ
विदञोतनीक सङ्ग गान ओ वादनपूर्वक जे नृत्य करथि तकर बड़े विन्यास वर्णन अछि। हमरा जनैत एही नाचक परम्पराकें पछाति आबि किरतनिञा नाम देल गेल ओ जकरा वर्णरत्नाकरमे विद्यावन्त वा विदाञोत कहल अछि सएह आगाँ जाए नायक कहाओल। नृत्यक प्रसङ्ग विस्तार बड़े चमत्कारक अछि। दशो स्थायीभावक अनुयायी, तैंतीसो व्यभिचारीभावक आश्रय, आठो सात्त्विक भावक मिलापक, आठो स्थानक शिष्यें पात्रक प्रवेश वर्णित अछि जाहिमे पात्र होथि बारहो दृष्टिक अभिनेता, बत्तीसो चारीक साभ्यास, छबो भङ्गक व्युत्पन्न, चारु तङ्गक कुशल, बत्तीस कुलक तत्त्वज्ञ, छबो नृत्यक कुशल। ओ पुनि अठारहो प्रबन्ध नाचि रेखानृत्य करथि जाहिमे तेरह प्रकारक मथाकम्प, छत्तीस प्रकारक दृष्टिकम्प, हस्तकम्प दश प्रकारक बाहुनृत्य, छ प्रकारक चालकनृत्य, चौसठि हस्तकर्म इत्यादि हो।

बाजाक प्रसङ्ग पन्द्रह प्रभेद नगरवर्णनामे अछि; मुरजक बारह प्रकार वर्णित अछि, वीणाक सत्ताइस भेद गनाओल अछि; प्रयाणक-वर्णनमे चौदह प्रकारक बाजाक नाम अछि।

गीतक प्रसङ्ग वर्णित अछि जे सातो स्वरें संयुक्त, सातो गमकसँ सम्पूर्ण, आठारहो जातिसँ अलंकृत, बाइसो श्रुतिसँ सम्पूर्ण, एकैसो मूर्च्छनासँ अलंकृत, बीसो गेयधर्मसँ संयुक्त, सातो गायनसँ परित्यक्त एवं चौदहो
गीतदोषसँ परित्यक्त अनेक प्रबन्ध गीत, अनेक गीतप्रपञ्च, अनेक रागक गायन हो। एहि सभमे संख्यामात्र हम एतए देल अछि, नाम सब विस्तारक भयसँ छोड़ि देल अछि। नगरवर्णनमे अनेक प्रकारक-गीतक वर्णन अछि जाहिमे डफिला, लोरि, बिरहा, चाँचड़ि, चउपइ, लगनी ओ लोरिक नाच एखन पर्यन्त सुनलाँ जाइत अछि। अत्यन्त खेदक विषय थिक जे वर्णरत्नाकरक जे तालपत्रक पुस्तक उपलब्ध भेल ताहिमे एगारहम ओ बारहम पद्य त्रुटित छैक ओ दसम पत्रक अन्तमे इएह वर्णन अपूर्ण रहि गेल अछि।

नृत्य गीत ओ वादित्र अर्थात् सङ्गीतक एहि विन्यस्त एवं विस्तृत वर्णनसँ स्पष्ट अछि जे ताहि समयमे एहि कलाक एतए केहन प्रचार छल। सङ्गीत विषयमे कार्णाट लोकनि आचार्य

छलाह ओ मिथिलामे कार्णाट राजकुलक संस्थापक नान्यदेव एकर विशेष ज्ञाता छलाह। तें सम्भव थिक जे कार्णाटिक राजत्वकालमे, शाके १०१९सँ, एहि प्रसङ्ग विशेष अनुशीलन भेल हो। परञ्च जाहि विन्याससँ ओ विस्तारसँ सङ्गीतक सर्वाङ्गीण विकासक चित्र ज्योतिरीश्वर अङ्कित कएने छथि ताहिसँ स्पष्ट अछि जे नृत्य गीत ओ वादित्रक शास्त्रीय अध्ययन, अभ्यास ओ अनुशीलन एतए बड़ प्रचीन कालहिसँ होइत आएल छल। एकर प्रमाण हमरा लोकनिकें बौद्धगानमे भेटैत अछि। वर्णरत्नाकरमे छेआलीस गोट रागक नाम गनाए ज्योतिरीश्वर ओकरा अन्त नहि कए देल अछि प्रत्युत अन्तमे "आदि" जोड़ि सूचित कए देल अछि जे एहिसँ भिन्नो रागक प्रचार छल। एहि छेआलीसमे पन्द्रह गोट अर्थात् पटमञ्जरी, गौड़ (वर्णरत्नाकरमे अछि गौल), गुर्जरी (वर्णरत्नाकरमे गुञ्जरी), देवकरी, देसाख, भैरवी, कामोद, धनछी, रामकरी, बराड़ी, सबरी, बलाङ्डि (वर्णरत्नाकरमे वलार), मलारी, मानसी, ओ बङ्गाल--एतेक रागक गीत चर्याचर्य-विनिश्चयमे उपलब्ध होइत अछि परन्तु चर्याचर्यविनिश्चयमे जतेक रागक गीत अछि से सब वर्णरत्नाकरमे परिगणित अछि ओ गीतगोविन्दमे चौबीसो गीत जाहि एगारह गोट रागक नामें उल्लिखित अछि ताहिमे एक गोट विभास छाड़ि आओर सब वर्णरत्नाकरमे गानाओल अछि। वर्णरत्नाकरमे एहि सबसँ भिन्नो अनेक रागक नाम अछि परन्तु तकर गीत ने चर्याचर्यविनिश्चियमे अछि ने गीतगोविन्दमे। एहि प्रसङ्ग स्मरण रहए जे चर्याचर्यविनिश्चयमे जे पचास गोट गीत अछि से सब सहजयानक सिद्धान्तक, जकरा हमरा लोकनि तन्त्रमार्गक अविकासावस्था कहि सकैत छी, तकरे टा गीत थिक ओ से एतबे तँ रचित नहि भेल होएत। एक गोट संग्रहमे जे पचास गोट गीत लिखल चल से भाग्यसँ हमरा लोकनिकें उपलब्ध भए गेल, नष्ट होएबासँ बाँचि गेल। एही विषयक आओर कतेक गीत छल से के जानए? ओ एतबहि विषय लएकें गीतक रचना भेल होएत सेहो तँ नहि कहि सकैत छी। अनुपलब्धि तँ अभावक प्रमाण नहि थिक! वर्णरत्नाकरमे जखन एतेक रागक नाम दए ज्योतिरीश्वर अन्तमे "आदि" कहि वर्णन समाप्त कएल अछि तखन
तँ स्पष्ट अछि जे एतेक राग तँ ताहि दिन प्रचलित अवश्ये छल, एहिसँ भिन्नो कतोक रागक प्रचार छल होएत जे विस्मरणवशात् वा जानल नहि रहने ज्योतिरीश्वर गनाए नहि सकलाह। एहिमे कतोक राग शास्त्रीय अछि, कतोक देशी अछि, ओ कतोक मिश्र। एहि प्रसङ्ग विशेष विचार सङ्गीतक विषय भए जाएत ओ से सङ्गीतक आचार्ये कए सकैत छथि। परञ्च ई कथा तँ स्पष्ट अछि जे एतेक रागक विकासमे समय थोड़ नहि लागल होएत! कार्णाटक छत्रच्छायामे सङ्गीतक विशेष विकास ओ प्रचार भेल छल से अवश्य परन्तु एहि राग सबहिक प्रयोग तँ सहजिआ सिद्ध लोकनि सेहो कएने छथि तें एहि रागाश्रित सङ्गीतक परम्परा वर्णरत्नाकरसँ कतोक सए वर्ष पुर्वहिसँ मानए पड़त। एगारहम शक शताब्दीमे एहि सङ्गीतक ततबा प्रचार भए गेल छल, ततेक विकास भए गेल छल, जे जयदेव एकर प्रयोग प्रथमहि प्रथम संस्कृतमे कएल। एहि सब कारणें ई कल्पना पूर्ण सङ्गत प्रतीत होइत अछि जे मिथिला ओ मिथिलाक सन्निहित जनपदमे सङ्गीतक शास्त्रीय पद्धतिसँ अध्ययन, अनुशीलन ओ अभ्यास बड़ प्राचीन समयसँ आबि रहल अछि। सङ्गीतक आधार भेल गीत, ओ से गीत जनपदीय भाषामे रचित होइत छल, जकर प्रमाण बौद्धगान। अतएव गीत-रचनाक परम्परा सङ्गीतहुसँ प्राचीन नहि तँ समकालीन तँ अवश्ये मानए पड़त।

रागसँ भिन्न दू गोट आओर वस्तु वर्णरत्नाकरमे वर्णित अछि जकर प्रयोग सङ्गीतमे

होइत छल ओ जाहिसँ साहित्यक स्वरूपहुक सूचना भेटैत अछि। छठम कल्लोलमे गीतदोषक वर्णन कए, ज्योतिरीश्वर गोट बीसेक नाम गनाए, तखन पुनः "प्रभृति" जोड़ि, अनेक प्रबन्ध-गीतक उल्लेख करैत छथि। ई नाम सब परिचित नहि अछि; केवल दू गोट नाम, गद्य ओ दण्डक, बुझल होइत अछि ओ झुमुला प्रायः झुमुराक नामसँ प्रसिद्ध अछि। तदुत्तर पुनि गोट पन्द्रहेक प्रकारक गीतप्रपञ्चक वर्णन कए कहैत छथि जे "से बोलहि नहि पारिआइ", जे कहल नहि जाए। एहि प्रपञ्चमे एको गोट नाम परिचित नहि अछि। प्रबन्धगीत ओ गीतप्रपञ्च सङ्गीतक वस्तु थिक; सङ्गीत शास्त्रमे एहि सबहिक वर्णन अछि; ओ तें एकर परिचय सङ्गीत-शास्त्री दए सकैत छथि। परन्तु एतबा धरि तँ एहिसँ स्पष्ट अछि जे आगाँ जाए जे गोट छेआलिसेक रागक उल्लेख अछि तकर गानमे जाति, श्रुति, ओ मूर्च्छना इत्यादिक सङ्ग प्रबन्धगीत ओ गीतप्रपञ्च सेहो होइत छल, ओ जें एहि सङ्गीतक आधार गीत देशीभाषामे छल तें एकर प्रबन्ध अथवा प्रपञ्च तकरो आश्रय ओएह देशीभाषा होइत छल तकर कल्पना करब असङ्गत नहि होएत। आधुनिक समयमे आबि तँ नव नव सङ्गीतक ताहि रुपक व्यापक प्रभाव सर्वत्र पसरि गेल अछि जे प्राचीन वस्तुक लोप भेल जाइत अछि ओ प्राचीनो वस्तु नव नामसँ परिचित होइत अछि, परन्तु गद्य ओ दण्डक एहि दू प्रकारक प्रबन्धगीतक जे उल्लेख ज्योतिरीश्वर कएने छथि ताहिमे गद्य तँ गीतमे बुझल नहि होइत अछि मुदा दण्डकक प्रबन्धन तँ एखनहु धरि कए जातिक गीतमे भेटैत अछि। कहबाक अभिप्राय जे गीतमे गद्य ओ दण्डकक समावेश होइत छल ओ तहिना आनो आनो प्रबन्धक समावेश होइत छल तकर कल्पना करब सुगम अछि। अतएव ई सब प्रभेद सङ्गीतक सङ्ग सङ्ग साहित्यिक समृद्धिक सूचक थिक।

ई तँ भेल ओ सङ्गीत जकरा शास्त्रीय कहब, जकर नियमन शास्त्रीय पद्धतिसँ हो। एहिसँ भिन्नो गीतक चर्चा वर्णरत्नाकरमे भेटैत अछि। प्रथमहि कल्लोलमे नगर-वर्णनामे ज्योतिरीश्वर पन्द्रह गोट बाजाक नाम गनाए ई सब "बजाबइतें" पन्द्रह गोट नाम कहैत छथि जे भिन्न भिन्न प्रकारक लोक-गीत बुझना जाइत अछि। सोड़हम नामक प्रथम अक्षर "जि" सँ दशम पत्रक अन्त भए जाइत अछि ओ एगारहम पत्र त्रुटित अछि तें ई वर्णन अपूर्ण रहि गेल अछि। परन्तु ओहि पन्द्रह गोट नाममे कमसँ कम पाँच गोट नाम चिन्हार लगैत अछि, बिरहा, चउपइ, चाञ्चलि जकरा आब चाँचड़ि कहैत छिऐक, लोरिक नाचो, नगनी जे प्रायः लगनी थिक। ई सब तँ एखन पर्यन्त उपलब्ध अछि। आइसँ पचास वर्ष पूर्व म० म० परमेश्वर झा अपन सीमन्तिनी-आख्यायिकामे बरिआतक वर्णन करैत शास्त्रीय सङ्गीतक चर्चा कए लिखैत छथि जे "गाछी पोखरि दिश कहार बेगार प्रभृति नीच वर्ग दोसरहि तरहें विनोद करए लागल अर्थात् सीता-स्वयंवर, प्रभावतीहरण, रम्भाभिसार एहि विषय सभक
गमैआ भासक गीतसँ आरम्भ कए बिरहा चाँचरि पर्यन्त गाबए लागल।" वर्णरत्नाकरसँ सीमन्तिनी-आख्यायिका धरि कमसँ कम बिरहा ओ चाँचरिक परम्परा तँ अविच्छिन्न अछि ओ सीता-स्वयंवरादि विषय सभक प्रसङ्ग के कहि सकैत अछि जे वर्णरत्नाकरक पन्द्रह जे प्रभेद परिगणित अछि ताहिमे ई सब वा एतादृशे आन विषय नहि अछि, अथवा जे अंश त्रुटित अछि ताहिमे ई सब नहि हो। गमैआ भासक ई सब गीत छोट लोकमे प्रचलित छल ई कथा सीमन्तिनी-आख्यायिकासँ स्पष्ट अछि। के कहि सकैत अछि जे एहि प्रकारक लोकगीतक जे परम्परा आइछओ सए वर्षसँ अबैत अछि ओ वर्णरत्नाकरहुसँ छओ सए वर्ष पूर्वसँ नहि छल?

लोरिकक गीत ओ नाच तँ एखनहु होइत अछि; लगनी आइ धरि स्त्रीगण जाँत पिसबाक श्रमकें दूर करबाक हेतु जाँतक हाथर चलबैत गबैत छथि; चौपाइ तँ एमहर आबि आओर प्रसिद्धि पओलक अछि ओ एखनहु भास लगाए गओल जाइत अछि। प्राचीन साहित्यिक परम्पराक एहन प्रामाणिक वर्णनक मध्यहिमे एहि ग्रन्थक ई त्रुटि अत्यन्त खेदक विषय थिक परन्तु पन्द्रह गोट प्रभेदक उल्लेख अछि जाहिमे पाँच गोट एखन धरि चिन्हार अछि इहो कम सन्तोषक विषय नहि थिक। विरहा, चाँचड़ि लोरिकक नाच, लगनी, चउपाइक रचना वर्णरत्नाकरक समयमे छल एतबा तँ प्रमाणित भए जाइत अछि। शेष दश गोट प्रभेद, उलोरि (जे प्रायः लोरि थिक जे विद्यापति, "गाबहु हे सखि लोरिझुमरि मदन अराधए जाउँ" मे कहने छथि), बेलि अथवा वेणि जकर चर्चा अनुपदहिं करब, विरह देइ मन्त्रणा, भिषना, सिरिआ देशह, ठमरण, चेङ्गा, मऐना ओ बढ़नी तथा डाफिला (जे सम्प्रति एक गोट बाजाक नाम थिक जे बाँसुरीक सङ्ग बजाओल जाइत अछि) एहि दश प्रभेदक परिचय उपलब्ध नहि अछि परन्तु ई सब अन्यान्य वस्तुक समभिव्याहारक बलसँ तत्तद् नामसँ प्रसिद्ध लोकगीतक भेद थिक ई मानबामे कोनो सन्देह नहि रहैत अछि।

ओहीनगर-वर्णनक अन्तमे अछि--"तदनन्तर वेणि (जे पूर्वक सूचीक बेलि थिक, ल ओ ण क समतासँ कोनहु एकठाम अशुद्ध लिखल अछि) विरहा, हुलुक, चुटुकुल, प्रतिगीत, वाद्य, ताल, नृत्य होइतें छल।" ई सब मनोरञ्जनक प्रकार थिक ओ वाद्य ताल तथा नृत्यकें छोड़ि प्रथम पाँचो शाब्दिक प्रतीत होइत अछि। एहिमे बेलि वा वेणि तथा विरहा तँ लोकगीतक प्रभेदमे पूर्वहु आएल अछि; शेष हुलुक, चुटुकुल एवं प्रतिगीत नवीन अछि। चुटुकुल तँ प्रायः एखन जकरा चुटकुला कहैत छिऐक सएह थिक। एकर आशय भेल छोट मनोरञ्जनक गप्प वा फकड़ा। प्रतिगीत तँ-प्रतीत होइत अछि गीतमे उत्तर-प्रत्युत्तर, जेना सम्प्रति जटा-जटिनक खेड़िमे होइत अछि जे एक गीतमे जटाक उक्ति रहत जकरा एक जेड़ि गाओत ओ तखन जटिनक उक्ति गीत दोसर जेड़ि। कहबाक आशय जे एहि पाँच प्रकारक खेड़िमे आधार शाब्दिक अवश्य छलैक ओ तावतैव सिद्ध अछि जे एकर रचना होइत छल, एहि सबहिक प्रचार व्यापक रूपें छल जे मौखिक रूपें उत्तरोत्तर अबैत छल, ओ आब यद्यपि ई सब अनचिन्हार लगैत अछि परन्तु एक समय छल जखन लोक विषय साहित्यमूलक मनोरञ्जनक ई सब प्रसिद्ध साधन छल।

वर्णरत्नाकर सम्पूर्ण उपलब्ध नहि अछि; जेहो अंश उपलब्ध अछि ताहिमे ततेक लेखाशुद्धि अछि जे बहुत स्थलमे संदेह अनिवार्य भए जाइत अछि; ताहि परसँ ततेक प्राचीन ई ग्रन्थ अछि जे बहुतो वर्णित वस्तुकें लुप्त भेलाँ बहुत दिन भए गेल ओ तें अधिकांश वस्तु अनचिन्हार भए गेल अछि। परन्तु तैओ जतबे बुझबाक योग्य होइत अछि ताहि आधार पर जे विचार हम एतए उपस्थित कएल अछि ताहिसँ ई कथा स्पष्ट अछि जे मिथिलाक भाषामे जे ताहि दिन अवहट्ट कहबैत छल, साहित्यिक रचनाक परम्परा ओहू दिन पुरान छल, व्यवस्थित छल, व्यापक रूपसँ प्रचलित छल, लोकप्रिय छल। विशेष रूपसँ पद्यक प्रचार छल जे तत्कालीन सङ्गीतक आधार छल परन्तु गद्यक सेहो रचना होइत छल जे गाओलो जाइत छल ओ कथामे व्यवहृत होइत छल। वर्णरत्नाकरक रचना ताहूसँ इएह सिद्ध होइत अछि। विश्वक साहित्यिक विकासक क्रममे सर्वत्र इएह देखना जाइत अछि जे साहित्यिक रचनामे गद्यसँ पूर्व पद्यक

विकास होइत अछि ओ वर्णरत्नाकरक सदृश प्रौढ़ गद्यक ग्रन्थ स्वतः प्रमाण अछि जे ताधरि मिथिलाक भाषामे साहित्यिक अभिव्यक्तिक सामर्थ्य पूर्णरूपें भए गेल
छल। दोसर, सब ग्रन्थक कोनो उद्देश्य होइत छैक; सब ग्रन्थक अधिकारी होइत अछि जकरा हेतु ओहि ग्रन्थक निर्माण होइत अछि। वर्णरत्नाकरक उद्देश्य वर्णनक चमत्कार प्रदर्शन छल तथा ओकर निर्माण भेल छल भाषाक कवि लोकनिक हेतु, भाट लोकनिक हेतु, कथक लोकनिक हेतु; कहबाक तात्पर्य जे जे केओ साहित्यिक रचनामे संलग्न छलाह वा संलग्न होअए चाहैत छलाह तनिका लोकनिकें वर्णनक चमत्कारक मार्ग प्रदर्शनक हेतु एहि ग्रन्थक रचना ज्योतिरीश्वर कएल। ई छोड़ि आओर कोन उद्देश्य एहि रूपक आकर ग्रन्थक हेतु भए सकैत अछि, कारण, एहिमे जनताक मनोरञ्जनक सामर्गी नहि अछि, साहित्यकार लोकनिक उपकारक सामग्री संकलित अछि। एहिसँ मिथिलाक जनपदमे मिथिलाक भाषामे साहित्यिक रचनाक एक गोट सुदीर्घकालीन परम्पराक जे कल्पना कएल अछि तकरे पुष्टि होइत अछि।

परन्तु एहि प्रसङ्ग ई कथा स्मरण रहए जे ई रचना सब साधारण जन-हित होइत छल। एकर रसास्वादन एहि भाषाक सब भाषी करैत छल सेहो सत्य, परन्तु पण्डितवर्गक मनोरञ्जनक साहित्य छल मुख्यतः संस्कृत। जे जन संस्कृतसँ अनभिज्ञ छल अथवा संस्कृतमे साहित्यक मर्म नहि बूझि सकैत छल तकर साहित्यिक मनोरञ्जनक साधन इएह कथा, गीत, चुटकुला इत्यादि छल। अतएव ई सब मौखिक रूपें प्रचारमे छल; एकरा सबहिक-लेखनक प्रयोजने नहि छल, कारण, जकरा हेतु ई छल तकरामे साक्षरता अत्यन्त विरल छल। तँहि, ई सब क्रमशः लुप्तो होइत गेल। गाथासप्तशती अथवा बृहत्कथा किंवा जातक जकाँ ई सब संगृहीत ओ लिपिबद्ध नहि भेल तकर कारण स्पष्ट अछि। एतए ने सातवाहन जकाँ केओ साहित्यिकक पोषक छलाह ने धार्मिक प्रचार लक्ष्य छल। से जँ भेल अथवा जाहि कालमे भेल ताहि कालमे एतहु किछु संग्रह अवश्य भेल ओ से सब उपलब्धो अछि जकर चर्चा अनुपदे करैत छी। वास्तवमे अबहट्ट भाषाक साहित्य एतावन्मात्रे उपलब्ध अछि यद्यपि इहो कथा सत्य जे ओहि भाषाकें विशुद्ध मिथिला-जनपदक भाषा कहब ओतेक स्पष्ट ओ निर्विवाद नहि अछि, कारण ओहि समयमे मिथिलाक भाषाक स्वरूप ओना स्थिर नहि भेल छल। ओ भाषा ज्योतिरीश्वरक भाषा जकाँ मैथिली नहि परन्तु मैथिलीक प्राग्रूप छल जाहिमे कतोक लक्षण भेटैत अछि जे आब मैथिलीमे नहि, बंगलामे, असमिआमे, ओड़ियामे, वा हिन्दीमे भेटैत अछि। हमरा लोकनि ओकरा तैओ मैथिली अबहट्ट अथवा मैथिलीक प्राग्रूप मानैत छी, कारणा, ओहिमे सबसँ अधिक लक्षण मैथिलीक अछि; ओकर सबसँ अधिक समता मैथिलीसँ अछि, ओकर छाया जतेक सदृश मैथिलीमे होइत अछि ततेक आन आधुनिक भाषामे नहि।

एहि प्रसङ्ग सबसँ पूर्व हम कालिदासक एक गोट दोहा उपस्थित करैत छी। विक्रमोर्वशीय-त्रोटकक चतुर्थ अङ्क गीतनाट्य थिक ओ ओहिमे जे नृत्य अछि से अपभ्रंशक गीतक संग अछि। ओहिमे पावसक वर्णनमे एक गोट दोहा अछि :-

मइँ जाणिअ मिअलोअणि णिसिअरु कोइ हरेइ।
जाव णु अवतड़िसामलि धाराहरु बरिसेइ।।

एकर मैथिली-छाया देखू :-

मोञे जानिअ मृगलोचनी निशिचर कोइ हरेइ।
जाब न नवतड़िश्यामली धाराधर बरिसेइ।।

एहिमे "मइँ" जकरा हिन्दीमे "मैं" कहब मैथिलीक उच्चारणक अनुकूल अछि। हलन्त शब्दक अन्तिम हल्क लोप कए "जाब" ओ "तड़ि" "यावत्" ओ "तड़ित्" थिक ओ से मैथिल सम्प्रदायक अनुकूल अछि। "जानिअ", "हरेइ" "बरिसेइ" तीनू क्रियापद शुद्ध मैथिलीक थिक।

दोसर दृष्टान्त हम प्राकृतपिङ्गलसँ दैत छी। धवल नामक वर्णवृत्तक उदाहरणमे जे कविता अछि से थिक--

तरुण तरुणि तबइ धरणि, पवण बह खरा।
लग णहि जल बड़ मरुथल जनजिवण हरा।।
दिसइ चलइ हिअअ डुलइ हम इकलि बहू।
घर णहि पिअ सुणहि पहिअ मन इछइ कहू।

एकर मैथिली-छाया देखू--

तरुण तरुणि तबइ धरणि, पवन बह खरा।
लग नहि जल बड़ मरु-थल जनजीवन हरा।।
दिशो चलइ हिअअ डोलइ हम एकलि बहू।
घर नहि पिअ सुनिअ पथिक मन इछइ कहू।।

एहिमे क्रियापद प्रायः सब मैथिलीक अनुरूप अछि, केवल "इछइ" क प्रयोग आब ऊठल अछि तथा "सुनहि"क संग "कहू"नहि बैसैत अछि। तबइ, खरा, लग, बड़, डुलइ, बहू, घर, ओ कहू विशुद्ध मैथिली थिक। केवल 'इकलि' बंगलामे होइत अछि। सबसँ विशेष एहिमे "हम" रूप अछि। एहि पद्यकें यदि मैथिली नहि तँ की कहब? एहि प्रकारसँ प्राकृतपैङ्गलम् प्रभृति प्राकृत ओ अपभ्रंशक संग्रह-काव्यक यदि अध्ययन कएल जाए तँ बहुत रास एहन रचना भेटत जे मैथिलीक प्राग्रूप प्रतीत होएत। एहि हेतु बड़ कठिन परिश्रमक अपेक्षा छैक ओ ताहूसँ अधिक अपेक्षा छैक भाषा-विज्ञानसँ स्फीत दृष्टिक। एहि दिशि कार्य प्रायः प्रारम्भो नहि भेल अछि।

मिथिला-जनपदक प्राचीन भाषामे, मैथिली अवहट्ट वा मैथिलीक प्राग्रूप भाषामे, जे रचना सबसँ अधिक उपलब्ध भेल अछि से थिक सहजपन्थी सिद्ध लोकनिक कृति जे नेपालमे भेटल अछि आठम-नवम शताब्दीमे एहि मार्गक विकास भेल श्री एमहर आबि जे तन्त्र कहाए मिथिलाक जन-जीवनमे मिझराए गेल से एही सहजमार्गक परिष्कृत रूप थिक। आसाम, बङ्गाल ओ नेपालक सङ्ग सङ्ग मिथिला तन्त्रक एक गोट प्रमुख केन्द्र रहैत आएल अछि। लोक-विषय प्रचारक दृष्टिसँ एहि मार्गक सिद्ध लोकनि अपन मतक प्रचार देशी भाषामे कएल ओ वर्णरत्नाकरमे चौरासी सिद्धक नाम परिगणित अछि ताहिमे ओहि सब सिद्धक नाम अछि जनिक

कृतिउपलब्ध भेल अछि। हिनका लोकनिकें तिब्बतसँ सम्पर्क छलैन्हि ओ तन्त्रमे जे चीनाचार कहल जाइत अचि तकर अभिप्राय इएह जे तत्तद् विषयमे तिब्बतक प्रभावसँ एतएक क्रियाकलाप नियमित होइत अछि। कामरूप एहि मार्गक विकासक प्रधान केन्द्र छल। एमहर विक्रमशिला विश्वविद्यालय ओकर प्रचारक केन्द्र छल। विक्रमशिला उजड़ि गेल किन्तु ओकर भग्नावशेष आब भागलपुरक निकटमे बहराए रहल अछि। एही विक्रमशिलामे कामरूपक मार्गे तिब्बत धरि एहि सिद्ध लोकनिक क्षेत्र छल। अतएव तिब्बतमें सेहो एहि सिद्ध लोकनिक बहुत रास रचना भेटल अछि जे अधिकांश तिब्बतक भाषामे अनुवाद अछि परन्तु कतेको मूलभाषामे सेहो अछि जे मिथिलाक्षरमे लिखल अचि। नेपालमे जे अंश सुरक्षित अछि से म० म० हरप्रसाद शास्त्री प्रकाशित कराओल; तिब्बतमे जे भेटि सकल तकर प्रकाशन महापण्डित राहुल सांकृत्यायनजी कराओल। एहि प्रसङ्ग ने ऐकमत्य अछि ने ऐकमत्य भए सकैत अछि जे एकर भाषा कोन थिक। आठम नवम शताब्दीक ई भाषा भारतक पूर्वाञ्चलक देशीभाषा छल जकरा भाषाविज्ञानमे अपभ्रंश कहल जाइत अछि। मिथिलामे व्यवहृत अपभ्रंशकें ज्योतिरीश्वर ओ विद्यापति समेत अबहट्ट कहैत छथि परन्तु ई बुझल नहि होइत अछि जे अवहट्ट केवल मिथिलहिक देशीभाषा कहबैत छल अथवा एहि अञ्चलक सब भाषा एही नामसँ अभिहित छल। एतबा निश्चयक
जे एहि भाषा सबमे ताहि दिन बड़ विशेष अन्तर नहि छल ओ जेना एहि अञ्चलक सब लिपि मूलतः एके लिपि थिक तहिना एहि अञ्चलक सब जनपदक भाषा मूलतः एके अपभ्रंश छल अथवा परस्पर अत्यन्त सदृश छल इहो कल्पना सर्वथा असङ्गत नहि प्रतीत होइत अछि। मूलभूत ओहि अपभ्रंश भाषाक कतोक लक्षण आधुनिक कोनहु एक भाषामे तँ अन्यान्य लक्षण अपर भाषामे लक्षित होइत अछि। तहिना सिद्ध लोकनिक रचनामे एहि अञ्चलक सब भाषाक किछु ने किछु लक्षण लक्षित होइत अछि। फलतः सब भाषाभाषी इएह कहैत छथि जे ई बौद्धगान ओ दोहा हमरहि भाषाक प्राचीन साहित्य थिक। एकर निर्णय होएब कठिन अछि ओ से कए सकैत छथि भाषातत्त्वविद्। हम भाषातत्त्वक विशेषज्ञ नहि छी ओ तें एहि प्रसङ्ग अधिकारपूर्वक किछु कहब हमरा हेतु कठिन अछि परन्तु ऐतिहासिकक दृष्टिसँ विचार कएलासँ हमरा स्पष्ट प्रतीत होइत अछि जे सब सिद्धक कृति' एक रूपें तँ नहि परन्तु न्यूनाधिकरूपें यदि मिथिला-जनपदक भाषामे नहि तँ ओकर अत्यन्त सदृश भाषामे अवश्य अछि।

सहजयानक सिद्ध लोकनिक ई कृति जे बौद्धगान ओ दोहाक नामें प्रसिद्ध अछि एक गोटाक रचना नहि थिक। एहिमे अधिकांश रचना सरह-पादक थिक परन्तु आओरो कतोक सिद्धक कतोक रचना अछि। ज्योतिरीश्वर चौरासी गोट सिद्धक नाम गनओने छथि ओ इहो कहब असङ्गत नहि होएत जे ओहि चौरासिओ सिद्धक रचना छल होएतैन्हि। परन्तु केओ सिद्ध जे देशीभाषामे रचना कएल से भाषा की तँ हुनक अपन भाषा छल होएत अथवा ओहि क्षेत्रक भाषा छल होएत जतए ओहि सिद्धक कार्यक्षेत्र छल जतए ओ अपन मार्गक प्रचार करए चाहैत छलाह। ई सिद्ध लोकनि कोन जनपदक छलाह से बुझल नहि होइत अछि। एक तँ ताहि दिन देशभेदें व्यक्तिक परिचय नहि होइत छल; दोसर, ई सिद्ध लोकनि एक प्रकारें संन्यासी होइत छलाह ओ एहि मार्गमे प्रवेश करितहिं अपन नाम नव राखि लैत छलाह। तें के सिद्ध कोन जनपदक छलाह, कोन भाषा बजैत छलाह, से बुझब असम्भव अछि। परन्तु कार्यक्षेत्र छल हिनका लोकनिक केन्द्रित मुख्यतः विक्रमशिलामे। ई स्थान गङ्गाक ओहि पार, मिथिलाक सीमासँ बहिर्भूत, अवश्य-अछि। परन्तु बड़ प्राचीन समयसँ ई भाग मिथिलाक सांस्कृतिक क्षेत्रमे

पड़ैत अछि, ओ एखनहु केवल भागलपुरे टा नहि, सन्ताल-परगन्ना पर्यन्तमे मिथिलाक संस्कृति मान्य अछि, मिथिलाभाषा बाजल जाइत अछि। मिथिलाक्षरक प्राचीनतम लेख हमरा लोकनिकें सातम शताब्दीक आदित्यसेनक शिलालेखमे भेटैत अछि जे मन्दारमे उपलब्ध भेल ओ आब देवघरमे अछि। तिब्बतमे एकर लेख मिथिलाक्षरमे अछि से राहुलजी लिखैत छथि; नेपालमे लेख कोन लिपिमे अछि से म० म० हरप्रसाद शास्त्री नहि लिखैत छथि परन्तु प्राचीन बंगला-लिपि तँ तिरहुता लिपिक ततेक सदृश छल जे दूनूमे भेद लक्षित करब असम्भव जकाँ अछि। भाषाक दृष्टिसँ, जे कथा हम पहिनहु कहल अछि, सब सिद्धक रचना समान नहि छैन्हि परन्तु दोहाकोषसँ सरहक किछु पद एतए उद्धृत करैत छी जे विशुद्ध मैथिली प्रतीत होइत अछि।

१. कज्जे विरहिअ हुअवह होमें
अक्खि डद्दाविअ कड्डए धूमें।।
२. घरही बइसी दीआ जाली।
कोणहिं बइसी घणटा चाली।।
३. किन्तह तित्थ तपोवण जाइ।
मोक्ख कि लब्भइ पाणी ह्नाइ।।
४. पणिडअ सअल सत्थ वक्खाणाइ।
देहहिं बुद्ध बसन्त णा जाणइ।।
अवणागमण ण तेण विखणिडअ।
तोबि णिलज भणइ हउ पणिडअ।।
५. मन्तह मन्ते स्सन्ति ण होइ।
पड़िल भित्ति कि उट्ठिअ होइ।।
तरुफल दरिसणे णउ अघ्घाइ।
बेज्ज देक्खि कि रोग पलाइ।।

तहिना चर्यापदक गीतसँ किछु पंक्ति एतए दैत छी जे ध्यानसँ द्रष्टव्य थिक।

१) सरहपादक--
काअ णावड़िखाँटि मण केडुआल।
सद्गुरुवअणे धर पतबाल।।
चीअ थिर करि धरहु रे नाइ।
आन उपाये पार न जाइ।। (गीत ३८)
नाद न विन्दु न रवि शशिमण्डल
चिअराअ सहाबे मूकल।
उजु रे उजु छाड़ि मा लेहु रे वंक।
निअरि बोहि मा जाहु रे लंक।।३२।।
अपणे रचि रचि भवनिर्वाणा।
मिछें लोअ बन्धाबए अपणा।।
अम्हे ण जाणहु अचिन्त जोइ।
जाम मरण भव कइसण होइ।।२२।।

भुसुकपादक-- निसि अन्धारी मूसा अचारा।
अमिअ भखअ मूसा करअ अहारा।
मार रे जोइआ मूसा पवणा।
जेण तूटअ अवणागवणा ।।२१।।
.....हाक पड़अ चौदीस।
अपणा मांसें हरिणा वैरी।
खनह न छाड़अ भुसुक अहेरी।
तिन न छुपइ हरिणा पिबइ न पाणी।
हरिणा हरिणीर निलअ न जाणी।।९।।

कान्हूपादक-- जे जे आइला ते ते गेला।
अवणागवणे कान्हु विमन भइला।।
हेरि से कान्हि निअरि जिन उर बट्टइ।
भणइ कान्हु मो हिअहि न पइसइ।।७।।
मन तरु पाञ्च इन्दि तसु साहा।
आसा बहल पात फल बाहा।
वरगुरुवअणे कुठारे छिजअ।
कान्ह भणइ तरु पुण न उइजअ।।
सुण तरुवर गअण कुठार।
छेबइ सो तरु मूल न डाल।।४५।।

एहि उद्धरण सबहिक तँ आधुनिक मैथिलीमे रूपान्तर करब सुगम अछि परन्तु एहिसँ भिन्नो बौद्धगान ओ दोहामे सर्वत्र अनेक नाम अछि जकर प्रयोग मैथिलीमे होइत अछि, अनेक धातु अछि जकर अर्थ मिथिलाभाषामे भेटैत
अछि, सर्वनाम ओ अव्यय मिथिलाभाषाक सदृश अछि, सबसँ अधिक धातुक रूप सब मिथिलाभाषाक अनुरूप अछि। प्रयोजन अछि एहि संग्रहक प्रत्येक पदक भाषा-विज्ञानक दृष्टिसँ विचार करबाक, ओ से कएला उत्तर हमर अनुमान अछि जे आधासँ अधिक पद, विशेषतः क्रियापद, एहन भेटत जे एहि सहस्र वर्षसँ मिथिला-भाषामे आबि रहल अछि। हम वारंवार कहल अछि जे पूर्वमे एक अञ्चलक भाषा सबहुँक मध्य परस्पर ओतेक अन्तर नहि छलैक जतेक आइ छैक, ओ तें सहस्र वर्षसँ प्राचीन एहि सिद्ध लोकनिक साहित्यिक भाषामे ओहन पद, रूप वा लक्षण भेटब अस्वाभाबिक नहि जे मैथिलीमे नहि, भाषान्तरमे भेटैत अछि। दोसर, सब सिद्धक भाषा समान रूपसँ मिथिलाजनपदीय भाषाक सदृश नहि अछि, सरहपादक भाषा सबसँ विशेष मैथिली सन अछि तँ कृष्णवज्र अथवा चाटिल्लक थोड़ यद्यपि सादृश्य न्यूनाधिक रूपें सबमे अछि। रचना सबहिक भेल अछि मिथिलाक सांस्कृतिक क्षेत्रमे जकर बड़का प्रमाण मिथिलाक्षरमे एकर लेख जे राहुलजी कहैत छथि, ओ तें क्षेत्रीय भाषाक प्रभाव अनिवार्य, परन्तु केओ सिद्ध यदि मिथिला जनपदक छलाह तखन हुनक रचना मिथिला जनपदक भाषामे होएब स्वाभाविक ओ ताहिमे यदि भाषान्तरक लक्षण अछि तँ तकर समाधान प्रचारार्थ भाषान्तर-क्षेत्रक प्रभाव मानब। तथापि ई केवल कल्पना थिक। कल्पना साधार अछि, निराधार नहि, परन्तु तैओ दृढ़तासँ ई कहब जे इएह तत्कालीन मिथिलाक भाषा छल तखने सम्भव होइत जँ कोनहु सिद्धकें हमरा लोकनि मैथिल चीन्हि सकितहुँ अथवा मिथिला-जनपदक भाषा कहि तत्कालीन भाषाक स्वरूप उपलब्ध रहैत। तें केवल भाषाक आधार पर एकरा मैथिलीक तत्कालीन स्वरूप

कहब निर्विवाद नहि अछि, परन्तु एहिमे कोनो विवाद नहि जे ई मैथिलीक प्राग्रूप थिक जाहिसँ एहि अञ्चलक सब भाषा तत्तद्देशभेदें भिन्न रूपें विकसित भेल अछि।

परन्तु सहजपन्थी सिद्धलोकनिक रचनामे जे सांस्कृतिक पृष्ठभूमि अङ्कित अछि तकरा हमरालोकनि विशेष दृढ़तासँ मिथिला-जनपदीय कहि सकैत छी। सरहपाद कहैत छथि,

"सिद्धिरत्थु मइ पढ़मे पढ़िअउ।
मण्ड पिबन्तें विसरअ एमइउ।।

मिथिलामे अक्षरारम्भ एखनहु एही चारि अक्षरसँ होइत अछि--सिद्धिरस्तु; केवल एक गोट यन्त्र जकरा आँजी कहैत छिऐक पहिने लिखाए तखन ई चारू अक्षर लिखाओल जाइत अछि। बहुत अन्वेषण कएलहु उत्तर पता नहि लागल अछि जे मिथिला छाड़ि अन्यत्र कतहु अक्षरारम्भक ई क्रम अनुवर्त्तमान अछि। तहिना मिथिलामे एखन धरि लोकक विश्वास छैक जे माँड़ पीलासँ मेघाशक्तिक ह्रास होइत अछि, लोक पढ़ल वस्तु बिसरि जाइत अछि। सरहपादक एहि दूहू पाँतिमे जे सांस्कृतिक चित्र अङ्कित अछि से मिथिलाक थिक। तहिना कुक्कुरीपादक एकटा पद अछि--

दिवसइ बहुड़ी कागडरें भाअ।
राति भइले कामरु जाअ।।

एखनहु मिथिलामे एकटा कहबी प्रसिद्ध अछि जे "दिनकें" धनि कागें डेराथि, राति भेलें धनी कामरु जाथि"। एके कहबी थिक जे कुक्कुरीपाद अपना गीतमे गओने छथि ओ जे आइ धरि मिथिलामे प्रचलित अछि। कहबीक ई आनुपूर्व्य सिद्ध करैत अछि जे कुक्कुरीपाद मिथिलाक विचारसरणि ओ वाग्धारासँ परिचित छलाह। एहू दृष्टिसँ बौद्धगान ओ दोहाक सूक्ष्म अध्ययनक प्रयोजन अछि, परन्तु जें हेतु विषय अछि रहस्यमय, भाषा अछि अत्यन्त प्राचीन, ओ सम्पादित भेल अछि ई अन्य अन्य भाषाक भाषी द्वारा जे लोकनि एकरा अपन अपन भाषाक प्राचीन स्वरूप बुझैत रहलाह, तें एकर अध्ययन अत्यन्त सुगम नहि अछि।

परन्तु सहजपन्थी सिद्ध लोकनिक रचनाक ई भाषा मिथिलाक भाषा छल तकर एक गोट प्रबल प्रमाण ई अछि जे मिथिलामे एहि प्राच्य अपभ्रंश भाषामे, जकरा ज्योतिरीश्वर अबहट्ट कहैत छथि, रचनाक परम्परा
अन्यथहुँ उपलब्ध होइत अचि। बौद्ध गान ओ दोहासँ भिन्नो एक प्रकारक रचना प्रचुरतया उपलब्ध होइत अछि जे एही अबहट्ट भाषामे रचित अछि ओ जे मिथिलहिटामे भेटैत अछि। ई थिक ग्रामीण जन-जीवनसँ सम्बद्ध यात्रा, कृषि, शकुन प्रभृति व्यावहारिक ज्योतिष-विषयक। अत्यन्त प्राचीन कालहिसँ एहि विषय सब पर अबहट्ट भाषाक वचन सब प्रचुरतया प्रचलित अछि, तथा एखनहु धरि ग्रामीण जनता मध्य, विशेषतः कृषक समाज मध्य, एहि वचन सबहिक बड़ आदर अछि। एहिमे सबसँ विशेष प्रसिद्ध छथि ड़ाक। ओना तँ डाकक वचनक समस्त उत्तर भारतवर्षमे प्रचार अछि, ओ भिन्न भिन्न जनपदमे हुनक नाम भिन्न कहल जाइत अछि, यथा डाक, घाघ, भड्डरी इत्यादि, ओ सब जनपदमे हुनक वचनक भाषा तत्तत् जनपदक भाषा अछि। मिथिलहुमे एखन जे डाकक वचन सुनल जाइत अछि से बहुत अंशमे आधुनिक मैथिली अछि,

पुरान अवहट्टमे नहि। परन्तु मिथिलामे बड़ प्राचीन कालसँ डाकक बचन सब लिखल भेटैत अछि। कतहु नामोल्लेखपूर्वक यथा, "अथ सिद्धयोगविचारे डाकः" "अथ सुखरात्रिविचारे डाकः" इत्यादि, ओ कतहु कतहु केवल "तथा च भाषा" एतबए कहि वचन उद्धृत अछि। एहि प्रसङ्ग हमर मित्र, ताहि समयक दरभंगा-राजक संस्कृत लाइब्रेरीक पण्डित श्री जीवानन्द ठाकुरजी "मैथिल डाक" नामक एक गोट पोथी लिखने छथि, जकर प्रकाशन मैथिली-साहित्य-परिषदसँ भेल अछि ओ "डाकके सम्बन्धमे किछु और वातें" शीर्षकक एक गोट प्रामाणिक निबन्ध तेरहम अखिल-भारत-प्राच्य-विद्या-महासम्मेलनक नागपुर अधिवेशनमे हिन्दी विभागमे पढ़ने छथि जे ओकर निबन्ध मालामे प्रकाशित अछि। तीन सए चारि सए वर्ष पुरान अनेको तालपत्रक लेखमे डाकक वचन उल्लिखित भेटैत अछि। विद्यापति ठाकुरक बालक मुद्राहस्तक हरपति ठाकुरक एक गोट ग्रन्थ अछि व्यवहार दीपक जे अद्यापि अप्रकाशित अछि। एहिमे डाकक अनेक वचन प्रमाण रूपें उद्धृत अछि। यथा, राशिस्वभावविचारमे

मेष मीन तिअ दण्डा दीस।
ता उप्परि दिअ पल अठतीस।।
वृष कुम्भा चौदण्डा मान।
पल एगारह भृगु तिस मान।। इत्यादि

महाराज शुभङ्कर ठाकुर अपन तिथिद्वैधनिर्णयमे सुखरात्रिक प्रसङ्ग डाकक वचन उद्धृत करैत छथि जे

स्वाती दीआ जँ बरए विसखा खेलए गाय।
अवसओ नरवर जुज्झए अन्न महग्घा जाय।।

ओ से केवल डाकहिक नहि। सप्तरत्नाकरकार चण्डेश्वर ठाकुर अपन ज्योतिष-सम्बन्धी ग्रन्थ कृत्यचिन्तामणिमे क्षपणाक-जातक, भृगुसंहिता ओ कापालिक-जातक सबसँ प्रमाण-रूपें वचन सब उद्धृत कएने छथि जकर भाषा विशुद्ध अबहट्ट थिक, यथा :-

अस्सिन रवि सोमह चित्ती। पूवाषाढ़ महीसुत युत्ती।।
होइ जइछह सरना मङ्गो। सवाती होइ बेहप्पइ अङ्गो।। इत्यादि।

हरिसिंहदेवक सान्धिविग्रहिक चण्डेश्वर ठाकुरक सदृश महापण्डित अथवा ओहिसँ डेढ़ दू सए वर्ष नवीन हरपति ठाकुर अपन संस्कृतक ग्रन्थमे प्रमाण-रूपें भाषाक वचन उद्धृत करथि ई थोड़ आश्चर्यक विषय नहि थिक, ओ एहीसँ ओहि वचन सबहिक महत्त्व सूचित होइत अछि। निश्चय ओ वचन सब ताबत धरि ततबा प्रचलित भए गेल छल, ओकर सत्यता ताहिरूपें सिद्ध भए गेल छल, ओकर प्रसिद्धि ताहि व्यापकतासँ प्रसृत छल, जे तेरहम शक शताब्दी धरि ओकर आर्षत्व सर्वमान्य छल, ओ चण्डेश्वरहुकें जखन तत्तत् विषयक प्रमाणक प्रयोजन भेलैन्हि तँ सबसँ उपयुक्त हुनका इएह सब भेटलैन्हि। ओना डाक समस्त आर्यावर्त्तमे प्रसिद्ध छथि परन्तु मिथिला छोड़ि अन्य कोनहु जनपदमे शास्त्रीय ग्रन्थमे हुनक वचन प्रमाण-रुपें उद्धृत अछि से सुनल नहि थिक। क्षपणक जातक, कापालिक जातक प्रभृति ग्रन्थ सबहिक नामो सुनल नहि थिक ओ उपलब्ध तँ ओ आब बहुतो दिनसँ नहि अछि, परन्तु कृत्यचिन्तामणिक सदृश विशिट ग्रन्थमे प्रमाणत्वेन उद्धृत एहि सबहिक वचन केवल ओहि ग्रन्थ सबहिटाकें अमर नहि कएने अछि, केवल ओहि ग्रन्थ सबहिक विषयहिटाकें सूचित नहि करैत अछि, अपितु मैथिलीक प्राग्रूप, अबहट्ट भाषाक दृष्ठान्त उपस्थित कए एहि भाषामे साहित्यिक रचनाक परम्पराकें सेहो
प्रमाणित करैत अछि। सबसँ चमत्कारक विषय अछि जे कृत्य चिन्तामणिमे एहि ग्रन्थ सबहिक

जे वचन उद्धृत अछि से केवल अबहट्टहिटामे नहि, संस्कृतहुमे अछि, ओ तखन शड़ाक होइत अछि जे ई अबहट्ट रचना तत्तत् ग्रन्थकारक थिकैन्हि अथवा ओहो लोकनि अबहट्टक वचन सब अन्यत्रसँ उद्धृत कएने छथि। एहि पोथी सबहिक नामसँ सन्देह होइत अछि जे क्षपणक, कापालिक अथवा भृगु ओही वर्गक सिद्ध लोकनि ने होथि जाहि वर्गक सिद्धक रचना बौद्ध गान ओ दोहा थिक। भुसुकक गीत मे हिनक नामक संग संग राउत विशेषण अछि ओ राउत उपाधि मिथिलामे सम्प्रति कतोक सए वर्षसँ गोआरक थिक। मिथिलामे प्रवाद अछि जे डाक गोआरक कन्यामे उत्पन्न वराहमिहिरक बालक छलाह ओ से यदि सत्य तँ डाक गुप्तोत्तरकालीन भेलाह ओ गोआर प्रभृति जातिक साहित्य-सेवा अत्यन्त प्राचीन कालसँ सिद्ध होइत अछि। डाकक वचन सम्प्रति जाहि रूपमे प्रचलित अछि ताहिसँ ओकर भाषाक एतेक प्राचीनता लक्षित नहि होइत अछि, परन्तु एहि प्रसङ्ग ई स्मरण रखबाक थिक जे पुश्ति पुश्ति मौखिक रूपें अबैत अबैत एकर भाषा विकृत होइत गेल अछि ओ यदि एकर लेखो अचि तँ ओहि लेखक स्वरूप लेखनकालमे ओ जाहि रूपें जानल छल तकर रूप थिक, ओ रूप नहि जाहि रूपमे डाक ओकरा रचने छलाह। डाकक अनेक वचनमे नामक सङ्ग सङ्ग गोआर वा अहीर शब्द विशेषण रूपें प्रयुक्त भेल अछि यथा डाक गोआर वा डाक अहीर। सहजपन्थी सिद्ध लोकनि कोन जातिक छलाह से तँ ज्ञात नहि अछि, केवल भुसुक अपनाकें राउत कहैत छथि। परन्तु एतबा निश्चय जे ओहि सिद्धलोकनिमे ब्राह्मण थोड़ व्यक्ति छलाह, विशेषतः ई सिद्धलोकनि ब्राह्मणेतर छलाह। ई यदि सत्य तँ मिथिला-जनभाषाक साहित्यक आरम्भ मुख्यतः ब्राह्मणेत्तर व्यक्तिक द्वारहि भेल अछि। ब्राह्मण लोकनि ब्राह्मणत्वक गौरवसँ संस्कृतेतर भाषामे रचना ताहि दिन प्रायः नहिए करैत छलाह। अतएव एमहर आबि जे प्रवाद कतिधा सुनलामे अबैत अछि जे मैथिली ब्राह्मणलोकनिक भाषा थिक, एकर साहित्य ब्राह्मणक साहित्य थिक से ऐतिहासिक दृष्टिसँ कतेक असत्य से सबहुँ सहृदय व्यक्ति बूझि सकैत छथि। अबहट्टक रूपमे एहि भाषाक जे कोनो रचना उपलब्ध अछि से सब मुख्यतः पण्डितक रचना नहि, ब्राह्मणक रचना नहि, साधारण जनसमाजक साहित्य थिक, यथार्थ अर्थमे लोक-साहित्य थिक जकर रचना प्रायः डाक गोआर अथवा भुसुक राउत ब्राह्मणेत्तर जातिक कएल थिक।

डाकक वचन अथवा कृत्यचिन्तामणिमे उद्घृत अबहट्ट भाषाक वचन मिथिलाक जनपदक भाषामे अछि तकर प्रबल प्रमाण इएह जे केवल मिथिलहिक पण्डित लोकनि एहि वचन सबकें प्रमाणरूपें उद्घृत कएने छथि, आन कोनहु जनपदक पण्डितवर्गमे एकर जेना प्रचारे नहि छल, ओ विशेष प्रसिद्ध भेलाक कारणें डाकक प्रचार समस्त आर्यावर्तमे भेल परन्तु ओतहु हुनक प्रसिद्धि ग्रामीणजनता मध्य भेल, पण्डितवर्गमे नहि, ओ तें डाकक भाषा तत्तत् जनपदक भाषाक प्रभावसँ तत्तत् भाषाक सदृश भए गेल, ओकर मौलिक रूप नष्ट भए गेल। आन आन व्यक्तिक रचना जे ओतेक प्रसिद्ध नहि भेल से मिथिलाक अञ्चलसँ बहार प्रसृत नहि भेल। मिथिलहुमे एहि वचन सबहिक प्रामाणिकता एहि रूपें सिद्ध होएबामे, जाहिसँ बड़का बड़का पण्डित ओकरा अपन अपन ग्रन्थमे उद्घृत करथि, कतेक समय लागल होएत तकर अनुमान सुगमतया कएल जाए सकैत अछि। तें डाक प्रभृतिक वचन भाषाक दृष्टिसँ ओही कालक रचना प्रतीत होइत अछि जाहि कालमे सहजपन्थी सिद्धलोकनि जनता मध्य अपन अपन मतक प्रचारार्थ जनताक भाषामे गीत ओ दोहा रचैत छलाह। दुहूक भाषा समाने अछि ओ से थिक जनपदीय भाषा जकरा अपभ्रंश कहब ओ जें मिथिला-जनपदक भाषा अबहट्ट कहबैत छल तें ओकरा अबहट्टक रचना कहबामे क्षति नहि बुझना जाइत अछि।

ओ एहि अबहट्ट भाषामे रचनाक परम्परा मिथिलामे बहुत पछाति धरि छल। विद्यापतिक कमसँ कम तीनि गोट गीत एही भाषामे अछि, हुनक कीर्त्तिलता ओ कीर्त्तिपताका दुहू एही भाषामे अछि। एकरहि ओ संस्कृतसँ भिन्न 'देसिल वयना" कहैत छथि, इएह मिथिला-जनपदक भाषा कमसँ कम ज्योतिरीश्वरक समयसँ अबहट्ट नामें अभिहित होइत छल, चिन्हल जाइत छल, परिचित छल। एहिमे कोनो संदेह नहि जे विद्यापतिक अबहट्ट ओ बौद्ध गान ओ दोहाक अबहट्टमे अथवा डाकक अबहट्टमे अन्तर अछि। विद्यापतिक अबहट्टमे
भाषान्तरक प्रभाव अछि जेना कतोक पैघो पैघो प्राकृतक ग्रन्थमे भिन्न भिन्न प्राकृतक सङ्कर अछि। विद्यापतिक अबहट्टमे तें कृत्रिमता अछि, नवीनता अछि जे मातृभाषाक रचनामे नहि होएबाक चाही। परन्तु एहि प्रसङ्ग विचारणीय थिक जे ई अबहट्ट मिथिला-जनपदक "देसिल वयना" रहओ मुदा विद्यापतिक युगक 'देसिल वयना' ओ नहि छल। ओ छल विद्यापतिक पूर्व युगक 'देसिल वयना'। 'देसिल वयना' ओ वाणी भेल, ओ लोकभाषा भेल, जे ओहि जनपदक साधारण जनता बाजए तथा विद्यापतिक समय धरि मिथिला-जनपदक भाषाक स्रोत अबहट्टक स्थितिसँ बहुत दूर आगाँ बढ़ि गेल छल। वर्णरत्नाकरक भाषा समेत विद्यापतिक युगक लोक-भाषासँ, देसिल वयनासँ, प्राचीन अछि, परन्तु कीर्त्तीलताक अबहट्ट कतोक अंशमे वर्णरत्नाकरहुक भाषासँ पुरान अछि। विद्यापतिक युगक "देसिल वयना" हुनक शत शत गीतमे प्रयुक्त उपलब्ध अछि ओ ताहि समक्ष कीर्त्तिलताक भाषा कतेक प्राचीन अछि से प्रत्यक्ष देखि सकैत छी। तखन विद्यापति अबहट्टकें अपन "देसिल वयना" कहि ओहिमे जे कीर्त्तिलताक रचना कएलैन्हि से स्पष्ट ओखरा मिथिला-जनपदक प्राचीन भाषा बूझि; अपन "देसिल वयना" क स्वरूप ओ तकरा लेलैन्हि जे डाकक रचनामे, सहजपन्थी सिद्धलोकनिक रचनामे, मिथिला-जनपदक प्राचीन साहित्यिक रचनामे रूपायित छल। वर्णरत्नाकरहुक भाषाकें जनु ओ नवीने बुझलैन्हि ओ अपन रचनाक भाषाके निर्णय करबामे ओ ज्योतिरीश्वरहुसँ पाछाँ चल गेलाह। परन्तु ओ तँ हुनक बजबाक भाषा छल नहि; ओहि भाषामे रचना करबाक हेतु हुनका ओतबे आयास करए पड़लैन्हि जतबा कोनहु प्राकृतभाषामे काव्य करबामे करए पड़ितैन्हि ओ तथापि ओहिमे ओ सौष्ठव, ओ रोचकता, ओ स्वाभाविकता नहि आबि सकल जाहि कारणें "देसिल वयना" "सब जन मिट्ठा" होइत अछि. फलतः कीर्त्तिलता लोकप्रिय नहि भेल। विद्यापति देखलैन्हि जे जहिना "पाउअ रसको मम्म न जानहि" तहिना इहो अबहट्ट भए गेल अछि जकर रसक मर्म सब केओ नहि बूझि सकैत अछि। अतएव ओ अबहट्ट छोड़ि यथार्थ जे हुनक देसिल वयना छल, हुनक मातृ-भाषा छल, मिथिला-जनपदक लोक-भाषा छल ताहिमे अपन अनेकानेक गीत रचलैन्हि जे वस्तुतः "सब जन मिट्ठा" भेल, ब्राह्मणसँ अन्त्यज धरि, राजासँ रङ्क धरि, पुरुष ओ स्त्री सबकें समानरूपें आनन्दाधायक भेल। तथापि जे किछु रचना पश्चातहुँ अबहट्टमे ओ कएल से ओहिना जेना संस्कृतहुमे ओ रचना कएल, ओहने ओहने विषयपर अथवा अवसर पर जकर गौरव हुनका दृष्टिमे लोकानुरञ्जनक साधन लोक-भाषा द्वारा व्यक्त नहि होइत, यथा शिवसिंहक राजसिंहासनाधिरोहण, शिवसिंहक विजय, शिवसिंहक कीर्तिपताका इत्यादि। परन्तु सब जन मिट्ठा देसिल वयना कहि अबहट्टमे हुनक रचना ओहि परम्पराक द्योतक थिक जे तहिआसँ प्रायः सहस्रवर्ष पूर्व कालिदासक विक्रमोर्वशीय गीतरूपें आरम्भ भए गुप्तकाल ओ गुप्तोत्तर-कालमे मिथिला-जनपदमे लोकानुरञ्जनक साहित्यमे अनुवर्त्तमान छल, जे सहजपन्थी सिद्ध लोकनिक

गान ओ दोहामे सुरक्षित अछि, डाकक ओ तत्सदृशे अन्यान्य महाजनक लोकोपयोगी कृतिमे यथाकथंचित् आइ धरि वर्त्तमान अछि। गुप्तोत्तरकालमे मगधसँ पूर्व अञ्चलक भाषा प्राच्य अपभ्रंश नामें अभिहित होइत छल तथा जनपदभेदें ओहिमे थोड़ बहुत भेद होइत गेल हो परन्तु मूलतः ओहि सब जनपदक भाषा एकहि रूपक छल जेना ओहि सब जनपदक लिपि एकहि रुपक छल। आठम शक शताब्दि धरि मिथिला-जनपदक भाषा अबहट्ट कहबए लागल जे ज्योतिरीश्वरक समय धरि ओही नामे परिचित छल। ज्योतिरीश्वरक भाषा हुनक गद्यमे रूपायित अछि जकरा हमरालोकनि मैथिलीक आदि स्वरूप कहि सकैत छी परन्तु अबहट्टमे रचनाक परिपाटी ज्योतिरीश्वरसँ सए वर्ष पछाति विद्यापतिक समय धरि अनुवर्त्तमान छल। एहि परम्परामे साहित्यिक रचना कहिओ नहि छूटल ओ सबटा नहि भेटैत अछि, सब युगक साहित्यक स्वरूप उपलब्ध नहि होइत अछि, परन्तु जएह किछु उपलब्ध होइत अछि सएह एक सुदीर्घ पथ परक स्मृतिचिह्न जकाँ हमरालोकनिकें अपन प्राचीन साहित्यिक परम्पराक दिग्दर्शन कराए आनन्द, गौरव ओ उत्साह प्रदान कए नवयुगक हेतु पथप्रदर्शन करैत अछि।

इएह थिक मोटामोटी प्राचीन मैथिली-साहित्यक राप-रेखा। मैथिली रूपायित भेल ज्योतिरीश्वरक कृति वर्णरत्नाकरमे ओ ई चित्र ताहिसँ पूर्वहिक थिक। अतएव प्राचीन मैथिली-साहित्यक क्षीण रश्मिकें चिह्नबामे ओ चीह्नि चीह्नि अङ्कित करबामे दृष्टि चाही भारतीय-भाषा-विज्ञानक विशेषज्ञक * ओ से हम नहि छी। हम तँ
एक गोट ऐतिहासिकक दृष्टिसँ अपन प्राचीन साहित्यक केवल पर्यालोचना कएल अछि !

हमरा विश्वास अछि जे ई जे रूप-रेखा हम स्थूलरूपें अङ्कित करबाक आयास मात्र कएल अछि तकर सूक्ष्मरूपें विवेचना कए केओ भाषातत्त्वविद् एहिमे रङ्ग भरि चित्रकें दर्शनीय बनाए सकैत छथि जाहिसँ मैथिली-साहित्यक परम्परा मिथिला-देश-वासीक जातीय परम्पराक अनुरूप सिद्ध होएत। तावत् हम मिथिलाक इतिहासक जे परम्परा बूझि सकलहुँ अछि ताहि आधार पर इएह कहि सकैत छी जे

---

* हमर मित्र भाषातत्त्वक विशेषज्ञ भारतीयभाषा-विज्ञानक पण्डित श्रीसुभद्र झाजी अपन मिथिलाभाषाक
इतिहास, Formation of Maithili Language मे बौद्धगान ओ दोहाक पर्यालोचना कएने छथि
से द्रष्टव्य।

---

(१) आदिअहिसँ मिथिला-जनपदक एक गोट अपन भाषा छल जे पूर्वमे द्विजातिसँ भिन्न लोक बजैत छल। क्रमशः द्विजाति सेहो ई भाषा बाजए लगलाह।

(२) वाल्मीकिसँ पूर्वहुँ जनपदीय भाषाक प्रयोग-सौष्ठव ध्येय रहैत छल तथा

व्याकरणक संस्कार होइत छल।

(३) एहि जनपदक भाषाक प्राचीनतम स्वरूप महावीरक मूलवचनमे भेटत मुदा बुद्धहुक मूलवचन ओहिसँ अधिक भिन्न नहि छल।

(४) अपभ्रंश कालसँ पूर्वक साहित्यिक रचना अनचिन्हार भए गेल अछि, अपभ्रंश कालसँ मिथिलामे साहित्यिक परम्परा अविच्छिन्न रूपें आबि रहल अछि परञ्च से अछि विशेष अनुसन्धान-सापेक्ष।

(५) प्राच्य अपभ्रंश एहि अञ्चलक तत्कालीन स्वरूप छल; मिथिलाक अपभ्रंश भाषा पछाति अबहट्ट कहबए लागल।

(६) एहि भाषामे जे रचना भेल से सब जनताक हेतु ओ एकर प्रचार पण्डितसँ भिन्न जनतामे भेल ओ वर्णरत्नाकरसँ पूर्व प्रायः एहिमे रचना सेहो पण्डितसँ भिन्ने लोक करथि।

(७) एहि भाषाक साहित्य तें मौखिक रूपें प्रचलित होइत रहल। राजाक आश्रय नहि रहलें कोनो पैघ ग्रन्थक निर्माण नहि भेल। कार्णाट राजवंशक छत्रच्छाया एहि भाषामे तादृश साहित्यिक रचना प्रारम्भ भेल :

(८) वर्णरत्नाकरसँ प्राचीन निम्नलिखित कोटिक रचना भेल होएत--

(अ) जनमनोरञ्जनक

(क) गीत--व्यावहारिक, सामयिक, भक्तिक, नृत्यक मुक्तक।
(ख) वीर गाथा--भाट, दशञुधी प्रभृतिक रचना।
(ग) तत्तत् जातिक वीर लोकनिक गाथा।
(घ) तत्तत् जातिक देवता लोकनिक अपराधनाक।
(ङ) प्रबन्ध-काव्य, गद्यमे वा पद्यमे।
(च) कथा-गद्यमे, पाबनि सबहिक तथा प्रमोदार्थ।

(आ) जनजीवनक उपकारी

(क) कृषि, यात्रा, शकुन प्रभृतिक।
(ख) धर्मोपदेशक।
(ग) धर्मप्रचारक।
(घ) भजन।

मैथिली-नाटक
(१)

विगत पचीस वर्षसँ मिथिलाक इतिहास, संस्कृति, ओ साहित्याराधनाक अध्ययन ओ अनुसन्धानक क्रममे एक गोट कथा जे हमरा दिनानुदिन दृढ़ भेल गेल अछि से थिक मिथिलामे नाटकक परम्पराक अभाव। नाटक काव्यक एक भेद थिक जकर समुचित रसास्वादन सूनिकें अथवा पढ़िकें नहि, किन्तु देखिकें होइत अछि। अतएव नाटकक शास्त्रोक्त लक्षणसँ लक्षित कोनहु काव्यक रचना मात्रहिसँ हम ओहि नाटककें सफल कृति नहि बुझब। नाटकक सफलताक हेतु कवि-कर्मसँ भिन्नो अनेक वस्तुक प्रयोजन अछि यथा, नट ओ नटी, रङ्गभूमि, नेपथ्य ओ यवनिका, उपकरणादि तथा प्रेक्षकवृन्द। तें 'नाटकक परम्परा'सँ हमर आशय अछि 'नाटकक अभिनयक परम्परा'। हम ई नहि कहैत छी जे मिथिलामे नाटक लिखले नहि गेल, से के कहि सकैत अछि? हमर अभिप्राय अछि जे मिथिलामे नाटकक अभिनय होइत छल तकर कोनो प्रमाण हमरालोकनिकें नहि भेटैत अछि। तहिना मैथिली-नाटकसँ हमर आशय मिथिलामे रचित नाटक नहि अछि, ने मिथिलाक कविक रचित नाटक; हम तँ मैथिली-नाटकसँ बुझंत छी ओ नाटक जे मिथिलाक जनभाषामे रचित हो, मैथिलीमे हो। एहन नाटक हमरा एहि बीसम शताब्दीसँ पूर्वक नहि भेटैत अछि मुदा से जँ भेटबो करैत तँ हम ओकर नाटकीयता ताधरि स्वीकार नहि करितहुँ जाधरि ओकर सफल अभिनयक प्रमाण हमरा नहि भेटैत।

साहित्यशास्त्रमे नाटककें "दृश्य काव्य" कहल गेल अछि ओ ओकर प्रदर्शन अभिनय कहबैत अछि। मनुष्य अनुकरण-प्रिय होइत अछि ओ एही अनुकरण-प्रियतासँ नाटकक सृष्टि भेल अछि। "अवस्थाक अनुकरण कए पदार्थकें अभिमुख आनब" अभिनय थिक। अभिनय होइत अछि नाटकीय पात्रक, नट ओ नटीक द्वारा । ओकर चारि गोट भेद कहल गेल अछि:-- (१) आङ्गिक अर्थात् नाटकीय पात्रक सदृश अङ्गदिक चेष्टा कएल जाए; (२) वाचिक अर्थात् नाटकीय पात्रक सदृश वचन बाजल जाए; (३) आहार्य अर्थात् नाटकीय पात्रक अनुरूप वेश-रचनादि कएल जाए; (४) सात्त्विक अर्थात् नाटकीय पात्रकें अवस्था विशेषमे जेना कम्पस्वेदादि होएबाक चाही तहिना नट ओ नटी प्रदर्शित करए। कहबाक अभिप्राय जे कवि जाहिरुपें कोनहु पात्रक चेष्टा, वचन, वेषभूषा एवं सात्त्विक भावादिक निर्देश नाटकमे कएने छथि, ताहिपात्रक भूमिका धारण कए, नट ओ नटी ओहने वेशभूषादिमे रङ्गमञ्च पर ताहीरूपें चेष्टा करथि, बाजथि, भाव देखाबथि तँ से ओहि पात्रक अभिनय भेल। यदि केओ नट राजाक भूमिका धए रङ्गमञ्च पर आएल अछि तँ ओ राजाक सदृश वेश ओ भूषा धारण कए राजाक सदृश चेष्टा करत, राजा जकाँ बाजत, राजा जकाँ सात्त्विक भाव देखाओत, जाहिसँ सामाजिक
अर्थात् प्रेक्षकगण ओतबा काल ओकरा राजा बुझत ओ ओकरा राजा बूझि अवस्थानुसार हर्ष-शोकादिक अभिनयसँ स्वयं हर्ष-शोकादिक अनुभव करत। ओ जें एहिमे नट ओ नटी तत्तत् पात्रक रूप ग्रहण करैत अछि, भूमिका धारण करैत अछि, अपनाकें ओ बनाए लैत अछि ओ सएह अपनाकें देखबैत अछि, तें नाटककें "रूपक" सेहो कहल गेल अछि।

पुनः नाटकमे सबटा कथा पात्रहिक मुहसँ कहाओल जाइत अछि अन्यपुरुषकें अर्थात् नाटकीय पात्रसँ भिन्न व्यक्तिकें एहिमे किछु कहबाक अवसर नहि रहैत अछि। ग्रीसक नाटकमे "कोरस" कहि मध्य मध्यमे गीत गाओल जाइत छल अथवा कथावस्तुक सूचना रहैत छल; संस्कृत नाटकमे एहि वस्तुक सर्वथा अभाव अछि। ओना तँ ग्रीसहुक नाटकमे "कोरस" क गणना पात्रहिमे होइत अछि परन्तु संस्कृतमे तथा यूरोपीय भाषामे नाटकीय इतिवृत्तिक उपस्थान केवल कथोपकथन द्वारहिं होइत अछि। ई कथन वार्त्तालाप हो, स्वगत हो, जनान्तिक हो, अपवारित हो, परन्तु कथावस्तुकें उपस्थित करबाक नाटकमे एक मात्र साधन होइत अछि कथोपकथन। तें नाटकमे मुख्य वस्तु थिक कथोपकथन जाहि विना नाटक भैए नहि सकैत अछि। मूक अभिनय होइत अछि परन्तु ओकरा नाटक नहि कहल जाइत अछि। तें वाचिक अभिनय नाटकक शरीर थिक जाहि बेत्रेक ओकर स्थितिए नहि भए सकैत अछि।

नाटकक अभिनय श्रम-साध्य ओ तें व्ययसाध्य सेहो होइत अछि। केवल नाटक लिखनहिटा ओकर अभिनय सम्पन्न नहि भए सकत। नाटकक लेख तँ अभिनयक आधार मात्र भेल। एहि हेतु जतेक पात्र अछि ततेक नट ओ नटीक प्रयोजन अछि ओ यदि स्त्रीगण मञ्चपर नहि जाथि तँ पुरुषहिकें स्त्रीक सदृश वेषभूषादि रचि जाए पड़तैन्हि। एको नट यदि दू वा तीनि पात्रक अभिनय करत तँ तदर्थ ओकरा तत्तत् पात्रक अनुरूप वेषभूषादि धारण करए पड़त, अन्यथा सामाजिक अर्थात् दर्शकगणकें ओकरा चिन्हबामे भ्रम होएतैन्हि। वाचिक अभिनय करबाक हेतु प्रत्येक नटकें ओहि पात्रक वाच्यांश कण्ठस्थ चाही जकर भूमिका ओ ग्रहण करत ओ से कण्ठस्थ कएनहि तँ अभिनय सफल नहि भए सकत। ओहि वाच्यांशक अर्थहुक ओकरा ज्ञान होइक जे तदनुरूप आङ्गिक अभिनय कए सकए, अवस्थानुरूप भाव प्रदर्शित कए सात्त्विक अभिनय कए सकए। एहि सबहिक हेतु प्रत्येक नट ओ नटीकें पूर्ण अभ्यासक अपेक्षा छैक। पात्रक प्रवेश होइत अछि ओ निष्क्रमण। मध्य मध्यमे गीत ओ नृत्य सेहो आवश्यक छैक जाहिसँ सामाजिककें मनोरञ्जन होइक। रङ्गभूमि, यवनिका ओ नेपथ्य, तथा प्रेक्षकक हेतु स्थान प्रभृति अनेक विषय अछि जकर प्रबन्ध सबठाम सुगम नहि अछि। ग्रीसमे तीस हजार प्रेक्षकक हेतु स्थान बनाए रङ्गभूमिक निर्माण कएल गेल छल। यूरोपीय देशमे नाटकक भिन्न भिन्न आयले अछि। ओ तखन पात्र सबहिक हेतु वस्त्राभरणादि तथा अन्यान्य उपकरणक संघटन चाही। अतएव सूत्रधार कही, स्थापक कही, प्रबन्धक कही, मनेजर कही, प्रत्येक मण्डलीक हेतु आवश्यक अछि, कारण, केहनो सुन्दर नाटक अछि, कतबओ पटु नट ओ नटी अछि, परन्तु यदि उपकरणक अभाव हो, प्रबन्ध नीक नहि हो तँ अभिनय सफल नहि होएत नाटकक अभिनयक सफलताक हेतु अपेक्षित एहि भिन्न भिन्न साधनकें दृष्टिमे राखि श्रीहर्ष अपन सुप्रसिद्ध नाटिका, रत्नावलीक प्रस्तावनामे सूत्रधारक मुहसँ कहओने छथि :-

श्रीहर्षे निपुणः कविः परिषदप्येषा गुणग्राहिणी
लोके हारि च वत्सराजचरितं नाट्येषु दक्षा वयम्। इत्यादि

परन्तु नाटकक सम्यक् रसास्वादनक हेतु ओकर अभिनय आवश्यक छैक। यदि अवस्थानुकार रूप जे चतुर्विध अभिनय कहल अछि ताहिसँ नाटकक प्रदर्शन नहि भेल तखन तँ ओहिमे दृश्यत्व नहि भेल ओ तखन ओहिमे नाटकत्व सएह नहि घटित भेल। अभिनय वस्तुतः अत्यन्त प्रभावोत्पादक होइत अछि ओ रसक परिपाकक जे प्रक्रिया वा प्रकार अलङ्कार-शास्त्रमे

वर्णित अछि से जाहिरूपें नाटकक अभिनयमे होइत अछि तेना आन जातिक काव्यमे नहि। तँहि तँ कहल गेल अछि जे 'काव्येषु नाटकं रम्यम्।' परञ्च अभिनय-रहित
नाटक श्रव्य काव्य भेल अथवा पाठ्य। ताहिसँ वाचिक अभिनयक यथाकथाञ्चित् आभास भेटए परन्तु आङ्गिक अभिनय, आहार्य अभिनय, किंवा सात्त्विक अभिनयक तँ केवल कल्पना करए पड़त। केवल अभिनयक कौशलसँ नाटकक एहन महत्त्व छैक ओ भरतसँ लए धनञ्जय धरि नाट्यशास्त्र अथवा दशविध रूपकक तेहन विशद अथ च सूक्ष्म विचार अछि जेहन काव्यक कोनहु अन्य भेदक कमसँ कम संस्कृत साहित्यमे नहि अछि। एहि सबहिक लक्ष्य एक गोट मात्र छैक, अभिनयक कौशल, ओकर चारुता। तें विनु अभिनयें नाटक ओहने अपूर्ण, ओहने नीरस, ओहने शुष्क प्रतीत होएत जेहन स्वर विनु संगीत अथवा वर्ण विनु चित्र। प्रत्येक नाटकक प्रस्तावनामे अभिनयहिक संकल्प रहैत अछि। तें हम आदिअहिमे कहल अछि जे नाटकक परम्परासँ हमरा अभिप्रेत अछि नाटक जे दृश्य काव्य थिक तकर परम्परा, नाटकक अभिनयक परम्परा, ओ ताहि परम्पराक मिथिलामे अभाव देखलाँ जाइत अछि।

(२)

साहित्य थिक जीवनक प्रतिबिम्ब। जहिना जातीय जीवनक बाह्य विकास इतिहासमे चित्रित रहैत अछि, तहिना ओहि जीवनक आभ्यान्तरीण विकासक चित्रण साहित्यमे निहित रहैत अछि। यदनुरूप जातीय जीवन रहत तदनुरूप ओहि जातिक साहित्यक निर्माण होएत। जातीय आदर्श ओ आकाङ्क्षा, उत्साह ओ उद्योग, संस्कार ओ विचार, सुख ओ दुःख, साध्य ओ साधना--एही सबसँ अनुप्राणित तँ ओहि जातिक साहित्य होइत अछि। ओना कहबाक हेतु तँ साहित्य होइत अछि व्यक्तिक अनुभूति, ओकर संवेदनाक अभिव्यक्ति; परन्तु व्यक्ति थिक समष्टिक अङ्ग, ओ वैयक्तिक जीवन सदैव सामाजिक जीवनसँ नियमित, नियन्त्रित, निर्धारित रहैत अछि। मिथिलाक जातीय जीवन तँ अत्यन्त पुरातन कालहिसँ, इतिहासक आदिअहिसँ, विलक्षण रहैत आएल अछि ओ सम्प्रति एकर सबसँ विशेष वैलक्षण्य इएह प्रतीत होइत अछि जे हमरा लोकनिक जातीय जीवनक वर्त्तमान जे परम्परा अछि से एक निश्चित युगसँ आबि रहल अछि, जाहि युगमे विदेशी ओ विधर्मी मुसलमान विजेतृगणक आतङ्कसँ हमरा लोकनिक पूर्वज अपन जीवनक नवीन संघटन कएल, जीवनकें नव नव मान्यता प्रदान कएल, सांस्कृतिक जीवनक एक गोट अभिनव रूपरेखा प्रस्तुत कएल तथा ओही आदर्श पर धर्म ओ कर्म, आचार ओ विचार, विधि ओ व्यवहार, सब कथूक नवीन नियमन कएल जे यथाकथाञ्चित् एखन पर्यन्त अनुवर्त्तमान अछि, कतोक अंशमे लुप्तो भेल जाइत अछि तथापि एखन पर्यन्त चिन्हल जाए सकैत अछि। कार्णाट क्षत्रिय लोकनिक राजत्वकालक अन्तिम समयसँ लए ओइनिबार राजकुलक मध्यकाल धरि, तेरहम शकशताब्दीक आदिसँ लए चौदहम शक शताब्दीक अन्त धरि--ई दू सए वर्षक अवधि मिथिलाक इतिहासमे ओकर सामाजिक ओ सांस्कृतिक जीबनक क्रममे, अभिनव स्वर्ण-युग थिक। एही युगमे मिथिलाक ओहि बहुविध विभूतिक प्रादुर्भाव भेल जकर शुभ्रयश दिग्दिगन्तमे प्रसृत अछि, जकर गौरवसँ हमरा लोकनि एखनहु धरि किछुओ आत्माभिमानक अनुभव करैत छी, जकरहि प्रसादात् हमरा लोकनि एखन पर्यन्त जीवित छी। एहि युगसँ पूर्वक सबटा कथा जेना हमरा लोकनि बिसरि गेलहुँ ओ जेहो किछु मन पड़ैत अछि से त्रेता-द्वापरादि युगान्तरक कथा जकाँ पुराणक रूपमे। मैथिलत्वक परिचायक एखनहु जे किछु

बचल अछि से सब एही युगक सम्पादित थिक, एकरे देल थिक। हमरा लोकनिक वर्त्तमान सांस्कृतिक जीवनक सूत्रपात एही युगमे भेल अछि, हमरा लोकनिक जातीय जीवनक नवीन परम्परा एतहिसँ प्रारम्भ होइत अछि; वस्तुतः वर्त्तमान मिथिलाक इतिहास एही युगसँ प्रारम्भ होइत अछि।

भाग्यसँ हमरा लोकनिकेँ एहि स्वर्ण-युगक सुप्रभातक एक महा-जनक कृति उपलब्ध अछि जकर महत्त्व केवल हमरहि लोकनिक हेतु नहि, अपितु समस्त पूर्वोत्तर भारतवर्षक हेतु अपरिमेय अछि। अन्तिम कार्णाट महाराज हरिसिंहदेवक आश्रित कविशेखर ज्योतिरीश्वर ठाकुरक वर्णरत्नाकर एक गोट अपूर्व ग्रन्थरत्न अछि। गद्यमे निर्मित ई रत्नाकर मैथिलीक प्रथम ग्रन्थ थिक ओ मिथिलाक ई गौरव थिक जे एहिसँ केवल मिथिलहिक तात्कालिक जातीय जीवनक विलक्षण परिचय नहि भेटैत अछि प्रत्युत भारतक एहि अञ्चलहिक जातीय जीवनक ई चित्र थिक। सम्पूर्ण वर्णरत्नाकर तँ उपलब्ध नहि भेल अछि; जे प्रकाशित अछि से ओकर खण्डित रूप थिक; परन्तु जतबा वर्णरत्नाकर प्रकाशित अछि ताहिमे नाटकक अभिनयक कोनो वर्णन नहि अछि। कविशेखर नाटकसँ अथवा नाटकक अभिनयसँ परिचित नहि छलाह से नहि कहि सकैत छी। हुनक रचित धूर्तसमागम नामक संस्कृतमे एक गोट बड़े चमत्कारक प्रहसन प्रचुरतया उपलब्ध अछि तथा हालहिमे ओकर दोसरो रूप प्रकाशित भेल अछि जाहिमे मध्य मध्यमे संस्कृत श्लोकक रूपान्तर मैथिलीमे गीतो सब अछि। यदि मिथिलामे ताहि दिन नाटकक अभिनयक चालि रहैत, नाटकक अभिनय होइत रहैत, नाटकक रङ्गमञ्च रहैत तँ एहन सुन्दर वस्तुक वर्णन ज्योतिरीश्वर छोड़ि दितथि? एकर षष्ठ कल्लोलमे एतत्सजातीय विषयवर्गक वर्णन अछि। भाटक वर्णनसँ ई कल्लोल आरम्भ होइत अछि ओ आगाँ जाए विद्यावन्तक वर्णनसँ गानक वर्णन प्रारम्भ होइत अछि। "विद्यावन्त" जकर अपभ्रंश रूप "विदाञोत" देल अछि दुइ चित्रिणी-जाति नायिकाक सङ्ग आस्थानमे प्रवेश कए, "यन्त्रक गायन" भेला उत्तर, सातो स्वरसँ संयुक्त, सातो "गामक" सँ सम्पूर्ण, अठारहो "जाति" सँ अलङ्कृत, बाइसो "श्रुति"सँ सम्पूर्ण, एकैसो "मूर्छना"सँ अलङ्कृत, "गेयधर्म" सँ संयुक्त, चौदहो "गीतदोष"सँ परित्यक्त, प्रबन्धगीत, गीतप्रपञ्च रागादि"गायन" करैत छथि। एहि वर्णनक "विदाञोतक सङ्ग दुइ संवाहिका नायिकाक प्रवेश" हमरा लोकनिकेँ किरतनिञा नाचमे भेटैत अछि जाहिमे नायकक सङ्ग दुइ गोट स्त्री-वेषधारी नर्तक मीलि गीत गबैत अछि ओ नाच करैत अछि।

तदुत्तर नृत्यवर्णन आरम्भ होइत अछि। एतए नेपथ्यक रचना, रङ्गभूमिक स्थापन, वाद्यभाण्डक विचरण, नटीक श्रृङ्गार प्रभृति कए, वादकक हाथमे वाद्य दए, दशगुण सम्पन्न मुरजि अर्थात् मिरदङ्गिआक वर्णन अछि। ओ बारहो मुरज वाद्य ठोकैत अछि; कंशतालसँ तालक मेल होइत अछि। तखन शिष्य पात्रक प्रवेश अछि जे बारहो "दृष्टिक" अभिनेता, बत्तीसो "चारी"क साभ्यास, छबो "भङ्ग"क व्युत्पन्न, बतीसो "कुल"क तत्त्वज्ञ, ओ षड्विध नृत्यक कुशल अछि तथा अनेक गुणाविशिष्ट नृत्य करैत अछि। तदनन्तर "पात्रनृत्य-वर्णना" अछि जाहिमे पात्र थिकि सर्वकलाकुशल लता-जाति नायिका; अठारहो "प्रबन्ध" नाचि ओ "रेखानृत्य" करैत अछि। तेरह प्रकारक "मथा-कम्प" छत्तीस प्रकारक "दृष्टिकम्प", "हस्तकम्प", दश प्रकारक "बाहुनृत्य", छओ प्रकारक "चानक नृत्य", चौंसठि "हस्तकर्म", पाँच प्रकारेँ "ह्रदयप्रदर्शन" कए सोलह

गुणविशिष्ट नृत्य करैत अछि। पुरुषक नृत्य प्रेरणनृत्य कहि वर्णित अछि।

एतेक वित्याससँ नृत्यक वर्णन कए, रङ्गभूमि, नेपथ्य, नटी ओ पात्र सबहिक चर्चा कए, ज्योतिरीश्वर नाटकक अभिनयक कतहु उल्लेखो नहि कएल, एहिसँ ओहि वस्तुक अभाव सूचित होइत अछि। ई कल्लोल सम्पूर्ण उपलब्ध अछि, त्रुटित नहि अछि। मध्यमे मल्लयुद्धवर्णना सेहो आबि गेल अछि। आनहु ठाम यथा नगरवर्णनमे, राज्यवर्णनमे, अथवा नायक-वर्णनमे, वा नायिका-वर्णनमे किंवा चतुःषष्ठिकलावर्णनमे अनेकधा गीत नृत्य ओ वादित्र प्रभृति अनेको कलाक समावेश अछि, मनोविनोदक अनेको साधनक विन्यस्त वर्णन अछि; चतुःषष्ठिकलामे स्त्रीभूमिका अर्थात् स्त्रीक वेष बनाएब समेत अछि--तथापि नाटकक अभिनयक कतहु चर्चा नहि अछि। कविशेखर स्वयं प्रहसन लिखल किन्तु एहि प्रहसनकें पढ़ि कल्पनो नहि कए सकैत छी जे एहन अश्लील नाटकक रङ्गमञ्च पर प्रदर्शन भेल होएत, ओकर अभिनय भए सकल होएत, ओ तकर कोनो संकेतो नहि अछि। द्यूतसँ लए श्मशान धरिक एतेक विस्तृत वर्णन दए नाटकक अभिनयक कतहु चर्चा नहि कएल अछि, नृत्यक एहन साङ्गोपाङ्ग वर्णन अछि, गीतक एहन मार्मिक चित्रण अछि, मुरज ओ वीणा प्रभृति वाद्यभाण्ड ओ वाद्ययन्त्रक एहन विशद वर्णन अछि। नाटकीय कतिपय साधन यथा नेपथ्य, रङ्गभूमि, नटी प्रभृतिक जे वर्णन अछि से सबटा गीत ओ नृत्यक प्रसगड्। नाटकक अभिनयक कतहु उल्लेख नहि भेटल अछि। एहिसँ हमरा तँ स्पष्ट प्रतीत होइत अछि जे नाटक ओ नाटकक भेद तथा ओकर साधन ओ उपकरण प्रभृति वस्तुक मार्मिक ज्ञाता भैओकें कविशेखर जे नाटकक अभिनयक वर्णन नहि कएल तकर एकमात्र कारण इएह जे ई वस्तु ताहि दिन मिथिलामे नहि छल, एकर परम्पराक एतए अभाव छल।

एहिमे कोनो सन्देह नहि जे संस्कृत नाट्यशास्त्रमे नृत्य नाटकक एक गोट अभिन्न अङ्ग थिक परन्तु नाटक ओ नृत्य एके नहि थिक। दुहूक प्रक्रियामे अन्तर छैक। नाटकमे चारू प्रकारक अभिनय आवश्यक छैक ओ कथोपकथन सेहो रहबाक चाही। कतोक नाटकमे गोटेक अङ्क नृत्यप्रधान होइत अछि यथा भवभूतिक उत्तररामचरितमे छाया नामक तेसर अङ्क, अथवा कालिदासक विक्रमोर्वशीयमे चारिम अङ्क। वर्णरत्नाकरसँ सए वर्ष पछाति विद्यापति अपन पुरुष परीक्षामे नृत्यविद्य-कथामे नाटकक वर्णन कएने छथि। ओहिमे गन्धर्व नामक नटक कथा अछि जे जिद्द पर भवभूतिक उत्तररामचरितक छाया नामक अङ्कक अभिनय करए लागल। रामक भूमिका धारण कए ओ नृत्य आरम्भ कएलक ओ सीताक स्पर्श नहि पाबि जे पृथिवी पर खसल से खसले रहि गेल, पुनि उठल नहि, प्राणवियोग भए गेलैक। एहि कथामे अभिनय अछि, ओ से अछि नृत्यात्मक, परन्तु ओ अङ्के अछि नृत्यात्मक। सब नाटक एहने नहि होइत अछि। दोसर, इहो कथा मिथिलाक नहि गौड़देशक थिक, गन्धर्व छल लक्ष्मणसेनक दरवारक नट। एहूसँ इएह सूचित होइत अछि जे नाटकक अभिनयक परम्परा भारतमे अवश्य छल ओ ताहिमे नृत्यक प्रयोग विशेष रूपसँ होइत छल परन्तु मिथिलामे एहि अभिनयक परम्परा छल से एहिसँ सूचित नहि होइत अछि।

(३)

परन्तु हम पूर्वहुँ सूचित कएने छी जे वर्णरत्नाकर समस्त उपलब्ध नहि भेल अछि ओ तें

सम्भव थिक जे अभिनयक वर्णन ओहि अंशमे हो जे एहिमे त्रुटित अछि, एखन पर्यन्त जे अनुपलब्ध अछि। अथवा अनुपलब्धि किंवा अनुल्लेखहिटासँ ओकर अभाव तँ सिद्ध नहि होइत अछि। परन्तु यदि नाटकक अभिनयक परम्परा ताहि दिन छल तँ ओकर लोप किएक भेल, कोना भेल? नाटकक रचनाक परम्परा तँ एतए बराबरि अनुवर्त्तमान अछि। पुरुषपरीक्षामे नाटकक बड़ उत्कट प्रशंसा अछि। धूर्त्तसमागमक रचना यदि १३०० ईशवीयमे मानि ली ओ पारिजातहरणक १७०० मे तँ एहि चारि सए वर्षक मध्यमे कतेको नाटकक रचना भेटत। अभिनव-जयदेवक गोरक्ष-विजय, मुरारि मिश्रक अनर्घराघव, पीयूषवर्ष जयदेवक प्रसन्नराघव, शङ्करमिश्रक गौरीदिगम्बर, गोविन्दठाकुरक नलचरित, रामदासझाक आनन्दविजय, देवानन्दझाक उषाहरण, कृष्णदत्तझाक पुरञ्जनचरित, श्रीकृष्णमिश्रक प्रबोधचन्द्रोदय, रमापतिझाक रुक्मिणीहरण, गोकुलनाथझाक अमृतोदय अनेको विशिष्ट नाटक एतए रचित भेल अछि यद्यपि हम केवल मुख्य मुख्य किछु नाटकक नाम गनाओल अछि। परन्तु नाटकक अभिनय होइत छल वा भेल अछि तकर ने कतहु चर्चा अछि ने अभिनयक कतहु उल्लेख अछि जाहिसँ हमर अभिप्राय अछि नाटकीय मण्डली, रगंड्भुमि, अभिनयक हेतु आवश्यक सामग्री, तदर्थ शिक्षाक प्रबन्ध इत्यादि। अभिनयक हेतु ततबा साधन अपेक्षित छैक जे कतहु जँ ई सब रहैत तँ कोनहु रजबाड़ामे, राज-दरबारमे। मिथिलेशक दरबार तँ महाराज हरिसिंहदेवहिक समयसँ आबि रहल अछि ओ मिथिलेश-पदक लोप तँ महाराजाधिराज कामेश्वर सिंह बहादुरक देहावसान पर भेल अछि। तावत् दरभङ्गा-नरेशकें राजनीतिक क्षेत्रमे जे कोनो सत्ताक ह्रास भेल हो परन्तु मिथिलाक सांस्कृतिक क्षेत्रमे हुनक सता पूर्ववत् छल। मध्य मध्यमे पश्चिममे बेतिआक, पूर्वमे पसराहा, सौरिआ, फड़किआक, ओ पछाति बनैलीक राज्य छल। ई तँ पैघ राज्यक नाम कहल अछि। छोटो छोटराज्य सभ मिथिलामे अनेक छल जे समयसमय पर बड़ प्रसिद्धि प्राप्त कएने छल, यथा नरहनि, सोनबरसा, मधुवन, भगवानपुर ओ दड़िभङ्गा राज्यक बबुआना सब। कलाक ओ कलाकारक पोषण सब दिन एही राजा लोकनिसँ होइत आएल अछि। एही राजा लोकनिक आश्रयमे काव्यक रचना भेल, गीत ओ नृत्यक विकास ओ प्रचार भेल। परन्तु कोनहु रजबाड़ामे नाटकक मण्डली छल से अद्यपि सुलन नहि अछि, कतहु एकर उल्लेखो नहि भेटल अछि। नाटकक अभिनयक यदि परम्परा रहैत, नाटकक मण्डली कतहु रहैत तँ ई तँ तेहन वस्तु नहि थिक जे सहसा लुप्त भए जाइत? उदाहरणार्थ दरभङ्गा राज्यकें लिअ। एतए नाटकक अभिनय हमरहि लोकनिक ज्ञानमे आइसँ चालीस-पँएतालीस वर्ष पूर्व होअए लागल। प्रथम मैथिल

नाटक-कम्पनी छल श्रीपुरक उमाकान्तक ओ से पारसी ष्टेजक अनुकरण मात्र, ओ सबटा नाटक हिन्दी मे होइत छल। स्वर्गीय राजर्षि महाराज रमेश्वर सिंह बहादुर मिथिलाभाषामे दू चारि नाटकक रचना करबाए ओकर अभिनय कराओल परन्तु ओ सब धार्मिक नाटक छल, शक्तिक उपासनाक प्सङ्ग लए निर्मित भेल छल, ओ सेहो दरबारहि मध्य खेलाएल जाइत छल। विशुद्ध मैथिली-नाटकक अभिनय कोनहु व्यवसायी मण्डलीक द्वारा केवल मिथिला नाटकक भेल जकर रचना हमरा लोकनिक साहित्यरत्नाकर स्वर्गीय मुन्शी रघुनन्दन दास एही पारसी-ष्टेजक हेतु वर्ष चालिसेक भेल होएत कएलैन्हि। एहन एहन नाटकक मण्डली एमहर आबि देशमे अनेक भेल अछि, रहल अछि, मुदा सब पश्चिमक देखाउसिमे, सब हिन्दीक नाटक, ताहूमे उर्दू-मिश्रित हिन्दीक नाटक खेलाइत रहल अछि। केवल मिथिलाभाषामे नाटक खेलाएत एहन मण्डली आइ धरि मिथिलामे नहि भेल अछि। व्यवसायक दृष्टिसँ नहि, मनोरञ्जनक दृष्टिसँ नवयुवकक

कतेको मण्डली एमहर आबि यत्र तत्र मैथिलिओ नाटक सब खेलाइत रहल अछि परन्तु एहिमे स्थायित्व नहि छैक ने तदनुरूप मैथिलीमे नाटके भेटैत अछि। उमाकान्तक नाटक-मण्डलीसँ पूर्व, ओ बेरि बेरि पर पछातिअहुँ, दड़िभङ्गा राजमे ओ आनो आनो बबूआनामे रासलीला होइत छल मुदा ओ रास ब्रजक मण्डली सब करैत छल ब्रजभाषामे ओ ब्रजसँ अबैत छल। एही ब्रजक मण्डलीक हेतु स्वर्गीय हर्षनाथ झा राधाकृष्णमिलन नामक रासलीला ब्रजभाषामे लिखल जे वारंवार शुभङ्करपुरमे खेलाएल गेल। देशमे यत्र तत्र रामलीलाक चालि छल जे रामचरितमानसक आधार पर देहातमे वा शहरहु मध्य भेल करए ओ ठाम ठाम एकनहु होइत अछि परन्तु इहो पाश्चिमहिक देखाउसि छल ओ सर्वत्र हिन्दीमे होइत छल, एखनहु होइत अछि। एही रामलीलाकें दृष्टिमे राखि रत्नपाणि झा अपन उषाहरणक रचना कएलैन्हि परन्तु ओ नहि चलल। मिथिलामे यदि कोनो अपन स्वतन्त्र परम्परा रहैत, संस्कृतक किंवा मैथिलीक नाटकक अभिनयक पूर्वापरसँ रीति रहैत तँ ओकर कोनो चिन्ह तँ अवशिष्ट रहैत परञ्च तकर हमरा जनैत कोनो प्रमाण नहि भेटैत अछि।

(४)

किछु दिन भेलैक अछि जे हमर श्रद्धेय मित्र डाक्टर श्रीजयकान्त मिश्रजी मैथिली-नाटकक प्रसङ्क एक गोट नव कथाक उत्थान कएल अछि। मैथिली-साहित्यक इतिहासक अनुसन्धानक क्रममे हुनका किरतनिआक पता लगलैन्हि जे मिथिलाक प्राचीन परम्पराक अनुसार नाच करैत छ, गान करैत छल। हुनका इहो ज्ञात भेलैन्हि जे उमापतिक पारिजातहरण ओ लालकविक गौरीस्वयंवर ई दुहू नाटक किरतनिआ खेलाइत छल। किरतनिआ हुनका स्वयं देखल नहि, नाटक की खेलाइत छल से तँ सहजहिं नहि। ओ मानि लेल जे अत्यन्त प्राचीन कालसँ मिथिलामे जे नाटक सबहिक रचना होइत आएल अछि, जाहिमे संस्कृत-नाटक जकाँ भाषा अछि संस्कृत ओ प्राकृत मुदा मध्य मध्यमे मैथिलीमे गीत अछि जे गीत सब किरतनिआ गबैत छल--ताहि नाटक सबहिक अभिनय किरतनिआ करैत छल तथा ओहि सबहिकरचने भेल किरतनिआक अभिनयक उद्देश्यसँ। एना सुनल कथाक आधार पर अपन कल्पनाक बलें ओ "किरतनिआ"-नाटकक अभिनव सृष्टि कएल, किरतनिआक गरोहिकें नाटकक मण्डली मानि लेल; मैथिली गीतमिश्रित संस्कृत नाटककें मैथिलीक नाटक कहए लगलाह। ई कहि जे एहि नाटक सबहिक अभिनय बराबरि किरतनिआ करैत छल ओ एही अभिनयक हेतु एहि नाटक सबहिक रचने भेल, मिथिलामे किरतनिआ-नाटकक परम्परा स्थापित कएल। हुनकासँ किछु पूर्वहुँ स्वर्गीय भुवनजी सेहो अपन सम्पादित आनन्दविजयनाटिकाक भूमिकामे एही प्रकारक विचार व्यक्त कएने छलाह परन्तु श्रीजयकान्तबाबू किरतनिआ नाटकक परम्पराकें बड़ यत्नसँ बड़े विस्तारसँ उपस्थित कएल। हुनक इतिहासमे सबसँ मौलिक इएह अंश भेल ओ ताहिआसँ एहि वस्तुक प्रसार बढ़ए लागल। हालहिमे ओ जे रुक्मिणी-स्वयंवर प्रभृति कतेको नाटकक सम्पादन कएल अछि ताहि सबमे, विशेषतः रुक्मिणी-स्वयंवरक विस्तृत भूमिकामे, ओ अपन इतिहासक एहि अध्यायकें आओर विन्यासँ दोहरओलैन्हि अछि। फलतः पटना विश्वविद्यालयक हिन्दी विभागक प्राध्यापक श्रीकृष्णानन्दन पीयूष जे १९६१ मे दिल्लीसँ उमापतिक पारिजातहरणक समीक्षा, मूल, ओ भाषानुवादक सङ्ग संस्करण प्रकाशित कराओल अछि तकर प्रस्तावनामे श्रीजयकान्त बाबूक स्थापित किरतनिआ-नाटकक बड़े रोचक वर्णन देल अछि ओ ओकर भूमिकामे काशी हिन्दू-विश्वविद्यालयक हिन्दी विभागक अध्यक्ष डा० श्रीवासुदेवशरण

अग्रवालजी सेहो एहि कथाकें दोहराओल अछि।

परञ्च वस्तु-स्थिति यथार्थतः किछु भिन्ने अछि ओ अत्यन्त खेदक विषय थिक जे ई एकगोट प्रवाद जकाँ पसरि गेल अछि, पसरल जाइत अछि, जाहिसँ सत्य कथा कल्पनाक बोझसँ दबल जाइत अछि। एतए हम किरतनिञाक यथार्थ परिचय उपस्थित करैत छी, किरतनिञाक अभिनयक आँखि देखल समाचार कहैत छी, तथाकथित किरतनिञा-नाटक सबहिक विश्लेषण कए श्रीजयकान्तबाबूक मतक त्रुटि प्रदर्शित करबाक यत्न करैत छी ओ हमरा पूर्ण विश्वास अछि जे एहिसँ ई कथा सिद्ध भए जाएत जे किरतनिञा नाटकक अभिनय नहि करैत छल तथा किरतनिञा-नाटकक जे आख्या देल जाइत अछि से निर्मूल, शिद्ध कए कपोल कल्पित।

(५)

किरतनिञा नटुआक गरोहिक नाम छल जे विशुद्ध मैथिल परम्पराक नाच करैत छल, विशुद्ध मैथिल रीतिसँ मैथिलीक गीतक गान करैत छल। आब तँ किरतनिञा प्रायः लुप्त भए गेल किन्तु हम स्वयं किरतनिञाक नाच देखने छी एक बेरि नहि, अनेक बेरि, नीक जकाँ देखने छी। एखनहु बहुत जन छथि जे एहि नाचकें हमरहि जकाँ देखने छथि। सब दिन इएह जानल थिक जे किरतनिञा नटुआक गरोहि छल, नटकिञाक मण्डली नहि; किरतनिआक अभिनय नाच कहबैत छल, नाटक नहि। हमरा ज्ञानमे दू जोड़ किरतनिञाक गरोहि प्रसिद्ध छल; एक गोट हमर मातृमात्रिक गन्धबारिक, जकर स्थापना हमर मातृ-मातामह महाराजकुमार बाबू बासुदेव सिंहक डेउढ़ी गन्धबारिमे स्थिर भेला पर ईशवीय १८५० क प्रान्तमे भेल होएत। हमर मात्रिक पाहीटोलमे स्वर्गीय महामहोपाध्याय सर गङ्गानाथ झाक बृहत् परिवारमे छोटहुसँ छोट शुभकार्यमे गन्धबारिक किरतनिञा अबितहिं टा छल ओ स्वर्गीय डा० झाक जेठ भए स्वर्गीय गणनाथ बाबू किरतनिञा नाचक मर्मज्ञ ज्ञाता छलाह, स्वयं कवि छलाह ओ बड़ उल्लाससँ ई नाच देखथि। तें अत्यन्त शैशवसँ, जहिअहिसँ ज्ञान अछि तहिअहिसँ, किरतनिञा नाच देखबाक अवसर भेटल अचि। दोसर गरोहि छल हाटीक, बड़ पुरान, जकर अन्तिम नायक, बबुजन नायक, एहि नाचहिकटा नहि अपितु मैथिल-सङ्गीतहुक आचार्य बुझल जाइत छल। दरभङ्गा राजमे इएह किरतनिञा अबैत छल ओ हमरा ज्ञानमे इन्द्रपूजामे जे अबैत छल से कोजागरा सम्पन्न कएकें जाइत छल। पारिजातहरण ओ गौरीस्वयंवर जे दुहू नाटक कहल जाइत अछि जे किरतनिञा खेलाइत छल से दुहू हमरा नीक जकाँ देखल अछि परन्तु से देखल ताहि दिन जाहि दिन ई नाटक सब पढ़ल नहि छल। जखन एहि नाटक सबकें पढ़ल ओ किरतनिञाक खेड़िकें मन पाड़ल तखन बुझबाक योग्य भेल जे ओ सब की करैत छल। वस्तुतः किरतनिञाकें ने से योग्यता रहैक ओ ने से साधन रहैक जे संस्कृत-प्राकृतमे लिखल एहि नाटक सबहिक ओ अभिनय करैत। अन्यान्य नाटक सब जकरा किरतनिञा-नाटकक आख्या देल गेल अछि यथा आनन्दविजय अथवा रुक्मिणी-स्वयंवर तकर अभिनय तँ ने कहिओ देखल थिक ने गुरुजनहिक मुहसँ सुनल थिक।

किरतनिञाक गरोहिमे सब मिलाए नओसँ एगारह धरि जन रहैत छल, ने नओसँ कम,

ने एगारहसँ बेशी। ओ सब अछोप रहैत छल, ताहूमे विशेषतःचमार। मिथिलामे नृत्य ओ वाद्य चमारक वृत्ति छलैक अछि। मिथिलाक संस्कृतिमे नाचब एखनहु गारि बुझल जाइत अछि। एहि नओमे केवल तीनि गायक रहैत छल। प्रधान गायक जे वर्णरत्नाकरक शब्दमे "गायन, साभ्यास, वादी तालज्ञ, मानकुशल, सुवेष, प्रगल्भ, विभूति लबले, घाघर कछने, कछनी पहिरने", "चतुःसमे अङ्गराग कएने सफर उच्च पाढ़ि समेत तारामण्डलक निसह पछेओरा एक दोबर कइ उण्ड उपर कइ चलओले", माथ पर पाग पहिरने, हाथमे बाँसुरीक आकारक रंगीन फुलहरा
लेने रहैत छल। पुरुषक वेषमे रहैत छल ओ नायक कहबैत छल। गरोहि नायकहिक कहबैक। सब गीत उठबैत छल ओएह नायक। शेष दू गोट नायक स्त्रीक वेषमे नायकक दुहू दिशि भए ठाढ़ सब गीतमे नायकक सङ्ग दैत छलैक। जहिना वर्णरत्नाकरमे विद्यावन्तक वर्णनमे "बिदञोतिनी दुइ" "जइसे प्रयागक्षेत्र सरस्वतीकें गङ्गायमुना संवाहिका हो तइसे ता विदाञोतकें दुअओ संवाहिका" कहल अछि तहिना ई दुहू स्त्रीवेषधारी गायक रहैत छल। एहि दुहूमे एक नायिकाक अभिनय करैत छल दोसर सखीक। नायक तँ सहजहिं नायकक भाव प्रशित्रणक हेतु सङ्ग रहैत छल। सब गीत तीनू अथवा यदि नवसिखुआ सेहो सङ्ग रहैक तँ चारू सङ्गहिं गबैत छल। मैथिल-सङ्गीतक इएह रीति थिकैक ओ वर्णरत्नाकरक "संवाहिका"सँ सेहो सएह सूचित होइत अछि। मैथिल-सङ्गीतमे सबगीत "सहगान" होइत अछि, "कोरस"। एखनहु जतए कतहु "नारदीय" संङ्गीतक मण्डली अछि ततए इएह देखब जे गीत उठाओल एक गोटए, गीतक भास ओएह नियमित करत, मुदा सङ्ग देतैक ओकर जे केओ मण्डलीमे रहत सब; स्त्रीगण जे सम्प्रति हमरा लोकनिक सङ्गीतक शुद्ध प्राचीन परम्पराक रक्षा करैत आइलि छथि एहिना गबैत छथि; किरतनिञा नटुआ तहिना कमसँ कम तीनि गोटे सङ्क मीलि गबैत छल। परन्तु गबैत छल तीनू नाचि नाचि, आङ्गिक अभिनय करैत, भाव देखाए, जेना वर्णरत्नाकरमे अछि प्रबन्धनृत्य, रेखानृत्य, बाहुनृत्य, चानकनृत्य(?), मथाकम्प, दृष्टिकम्प, हस्तकम्प, हस्तकर्म, ह्रदयप्रदर्शन प्रभृति सोड़ह गुणसम्पन्न नृत्य करैत। मैथिलीक श्रृङ्गारक प्रायः सब गीतमे नायक, नायिका किंवा सखी, एही तीनूमे ककरो मनोभावक संसूचन रहैत अछि तें एहि नृत्यक अभिनयक हेतु तीनि गोट मात्र नर्तक पर्याप्त छल। एहिसँ ई नहि बुझबाक थिक जे नायकक उक्ति नायक गबैत छल, नायिकाक एक जन स्त्री-वेषधारी ओ सखीक दोसर। यदि से होइत तखन ई रासलीला जकाँ गीति-नाट्य होइत। परन्तु से ई नहि होइत छल। एहिमे गबैत छल सब केओ सब गीत सङ्गहिं; भावो देखबैत छल थोड़ बहुत सब एके रङ्ग; केवल जकर उक्ति गीत रहैत छल से नायक, नायिका वा सखी प्रधान भए आगाँ आबि विस्तारसँ अभिनय करैत छल, यावतो भाव देखबैत छल। अतएव एहि अभिनयपूर्ण सङ्गीतकें गीत-नृत्य कहि सकैत छी। स्मरण रहए जे जखन नाच आरम्भ होइत चल तखन सँ अन्त धरि सम्पूर्ण मण्डली एकत्र रहैत छल, एक वेषमे, एक भूषामे। वेषभूषा सेहो सब राति प्रायः समाने रहैत छल। विशेष विशेष अवसर पर नायक पाग पर चानीक मुकुट सेहो पहीरि लैत छल परन्तु से सब नायककें नहि होइक। एहने विशिष्ट नायककें कोनहु राजा वा पैघ लोकसँ मुकुट इनाममे भेटैक। मुदा वेषृ-भूषाक आडम्बर तँ नायक ओ दुहू स्त्रीवेषधारी नर्तक मात्रकें रहैक अथवा यदि तेसरो रहैक तँ तकरहु। शेष जन तँ अपन साधारण वेषमे रहए। पात्रक ने प्रवेश होइक ने निष्क्रमण।

एहि तीनि वा चारि गायकसँ भिन्न तीन गोट बजनिआँ रहैत छल, एक मृदङ्ग बजबैत

छल ओ दू गोटाए झालि। किरतनिआमे इएह दू टा वाद्य रहैत छल। नारदीय सङ्गीतमे सेहो इएह दू टा वाद्य रहैत अछि। बङ्गालहुक कीर्त्तनमे इएह दू टा वाद्य रहैत अछि। वर्णरत्नाकरमे सेहो मुरज ओ कंशताल इएह दू टा वाद्य कहल अछि तथा मुरजक बारह भेद ओ मुरजि अर्थात् मृदङ्गिआक दश गोट गुण गनाओल अछि। गरोहिक समस्त उपकरण लत्ता-कपड़ा, साज-सामान, पाकपात्र-जलपात्र, प्रभृति आवश्यक वस्तुजात जे बाँसक बड़का झप्पामे रहैत छलैक से लेने दे गोट भरिआ गरोहिक सङ्ग रहैत छल तथा कए बेरि एहिसँ भिन्न एक गोट भनसिआ सेहो रहैत छल। परन्तु भरिआ किंवा भनसिआ गरोहिक सङ्क अवश्य रहए किन्तु नाचमे नहि रहए। नाचमे तीन बजनिआँ ओ तीनि वा चारि गबैआ इएह छवा सात गोटए रहैत छल।

तखन गरोहिमे रहैत छल एक व्यक्ति आओर, मण्डलीक विदूषक, जकरा बिपटा कहैक। एहि शब्दक व्युत्पत्ति नहि भेटैत अछि यद्यपि मिथिलाभाषामे ई शब्द बड़ व्यापक अछि ओ किरतनिआक देखाउसिसँ आनो आनो नाचमे बिपटा आवश्यक बुझल जाइत छल। वर्णरत्नाकरमे ई शब्द नहि अछि अथवा एकर सजातीय अथवा एतदर्थक दोसर कोनो शब्द अछि वा नहि से बुझल नहि होइत अछि। दू गीतक मध्यमे गायक सबकें सुस्तएबाक अवसर होइक तें गीत समाप्त होइतहिं बिपटा पातर बाँसक एक पोरक झरनी हाथमें लेने फानिकें आगाँ अबैत छल ओ रंगविरंगक फकड़ा सब भास लगाए लगाए गबैत, कहुखन मिरदङिआक संग हास-परिहास करैत, कहुखन उपहासात्मक अभिनय करैत, कहुखन जातिविशेषक, कहुखन व्यवसाय-विशेषक, कहुखन गाम-विशेषक उपहास करैत, कहुखन सामयिक कोनहु प्रसङ्ग-विशेषक व्यङ्ग्यात्मक कुचेष्टा करैत, दर्शकगणक मनोरञ्जन करए। बिपटाक हेतु किछु लिखित अथवा निर्धारित नहि रहैत छल। ओ सब किछु स्वयं फुरबैत छल ओ फकड़ा सब खूब सिखने रहैत छल, ककरहुसँ बनबाएकें अथवा स्वयं बनाएकें से जानल नहि थिक परन्तु स्वयं बनाए बनाए जोड़ैत जाइत छल से निश्चय। अभिनयमे, अज्ञ पुरोहित ब्राह्मणक, गुड़गुड़ी पिबैत मीयाँक, सासुर जएबाक काल घोना करैत कनियाँक, ताहि दिन नव आएल रहैक बेण्डबाजा जकरा अङरेजी-बाजा कहैत छियैक तकर, ओ हजामक अभिनय एकनहु धरि स्मरण अछि। हजामक उपहास तँ धूर्त्तसमागमहुमे ज्योतिरीश्वर कएने छथि परञ्च ओ अत्यन्त अश्लील। बिपटा अश्लील वा वीभत्स कथा किछु नहि बाजए, कारण, दर्शकगणमे स्त्रीगण सेहो रहबे करथि, मुदा ओकर सब कथा हास्य-रससँ ओतप्रोत होइक। गोटेक गोटेक बिपटा तँ सत्ये अत्यन्त गुणी होइत छल, खूब कटगर फकड़ा सब जानए, खूब चमत्कारसँ व्यङ्ग्य सब बाजए, खूब फुरैक, खूब फकड़ा जोड़ए, खुब हँसबैत रहए। अत्यन्त खेदक विषय थिक जे ई फकड़ा सब अथवा बिपटाक हास्यक कथा सब, कुकाव्य सब, उपहासक प्रसङ्ग सब--सब किछु लुप्त भए गेल ओ आब तँ यत्नो कएला उत्तर ओकर संग्रह नहि भए सकैत अछि। नहि तँ ई संग्रह हास्य-रसक एहन विलक्षण साहित्य होइत जकर जोड़ा थोड़ ठाम भेटैत ओ जाहि प्रसादात् हमरा लोकनिक साहित्य एहू अंशमे विश्वक कोनहु साहित्यसँ न्यून नहि रहैत। मैथिली-साहित्यक बहुतो वस्तु एहिना मौखिक रूपें प्रचलित रहलें क्रमशः लुप्त भए गेल। भाषा-साहित्य लिखबाक विषय बुझते नहि जाए ओ साक्षरताक क्षेत्र अत्यन्त सीमित छल। कतेक, कुकाव्य सुनल थिक जे आब अङरेजीक उतमो सेटाएर (Satire) सँ चमत्कारक प्रतीत होइत अछि। परन्तु बिपटाक फकड़ा सब ओहिना लुप्त भए गेल जेना कुकाव्य सब अथवा हमरा लोकनिक पुरना खीसा सब। मैथिली-गद्यक एहन सुन्दर, सरस ओ सरल दृष्टान्त, कथा-साहित्यक एहि सुन्दर निदर्शन, केवल हमरा लोकनिक अनास्थासँ, आलस्यासँ, उपेज्ञासँ सदाक हेतु नष्ट भए गेल।

इएह बिपटा पारिजातहरणमे ओ गौरीस्वयंवरमे नारद कहाबए परन्तु ओतहु ओ नाटकमे नारदक हेतु जे वाक्य सब अछि से नहि बाजए; ओ सब तँ संस्कृतमे छैक ओ बिपटा संस्कृत बाजिए नहि सकैत छल। जाहि राति पारिजातहरण किंवा गौरी-स्वयंवर होइक ओहू राति बिपटाक खेड़ि ओहने होइत छल जेहन आन राति। केवल प्रसङ्गानुसार बिपटा नारदक उक्ति कतहु कतहु अपनहि भाषामे स्वयं जोड़ि बाजए। हँ, नायक वा मिरदङिआ ओहि राति ओकरा "अओनारद" कहि सम्बोधन करैक परन्तु नारद कहओनहि मानि लेब जे ओ नारदक अभिनय करैत छल अयुक्त होएत। ताहि हेतु तँ देखबाक थिक जे नारदक अभिनय, विश्षतः वाचिक अभिनय, करबाक योग्यता वा क्षमता बिपटाकें रहैक?

किरतनिञाक गरोहिमे नायक अवश्य गुणी रहैत छल; ओ सङ्गीतक, मिथिलाक सङ्गीतक, आचार्य रहैत छल ओ नृत्य-विषय कुशल। ओना एकर शिक्षण तँ व्यावसायिक रहैक, एक नायक कए गोटाकें सिखाबए, परन्तु प्रतिभासम्पन्न जे रहए से रसिक पण्डितसँ सीखए, विशेषतः गीतक भाव, ओ कतोक नायक किछु किछु संस्कृत सेहो सीखि लेने रहए। ओकर संग देनिहार जे दुहू गायक रहैक सेहो सङ्गीत-विशारद हो, नृत्य-कुशल, ओ ओएह आगाँ जाए नायक हो। साक्षर प्रायः एहने एक आध नायक वा गायक रहए। बस, इएह तीनू गोटए जे किछु गीत वा नृत्यक विषय जानए ! मिरदङिआ केवल अपन मृदङ्क वादनमे कुशल रहए। झलिबज्जाकें योग्यताक कोनो प्रयोजने नहि रहैक। बिपटा जे पुरान रहए से तँ किछु सिखनहु रहए परन्तु जे नव रहए तकरामे शिक्षाक सर्वथा अभावे कहबाक चाही। फकड़ा जानए, फुरैक, प्रगल्भ हो। शास्त्र सँ कोनो प्रयोजने नहि रहैक। हँ, गोटेक गोटेक बिपटा जे अधिक दिन कोनहु गरोहिमे रहि गेल, सिखबाक इच्छुक भेल, से अवश्य पण्डित ओ रसिकक समाजमे जाए जाए भिन्न भिन्न प्रकारक फकड़ा बनबाए सीखल करए, हँसीक गप्प सब बूझल करए, काकु, श्लेष वा व्यङ्ग्यक मर्म जानि लेल करए। मुदा ओकर सब आयास हास्य-रसक
पुष्टिक उद्देश्यसँ भेल करैक। इएह तँ भेल किरतनिञाक गरोहि। आब केओ जिज्ञासु व्यक्ति विचार कए सकैत छी जे एहन मण्डलीक द्वारा संस्कृत प्राकृतक नाटकक अभिनय भए सकैत छैक?

(६)

आरम्भहिमे हम नाटकक अभिनय केहन कर्म छैक से कहल अछि वाचिक अभिनयक हेतु ओहि भाषाक ज्ञान अपेक्षित छैक जाहि भाषामे नाटक रचित अछि; आहार्य अभिनयक हेतु भिन्न भिन्न साधनक अपेक्षा छैक; आङ्गिक ओ सात्त्विक अभिनय विनु पूर्ण अभ्यासँ सम्भव नहि छैक। ताहि परसँ रङ्गमञ्च, यवनिका प्रभृति उपकरणक झंझटि। किरतनिञाकें की साधन रहैक, कतेक योग्यता रहैक, कतबा क्षमता रहैक से हम एखनहि कहि अएलहुँ अछि। एहि दुहू विषयकें दृष्टिमे राखि कोनहु तथाकथित किरतनिञा-नाटककें पढ़ल जाए तँ स्वतः स्पष्ट भए जाएत जे किरतनिञासँ एहि नाटकक अभिनयक आशा करब व्यर्थ। भरिआ समेत मिलाए नओ गोटए तँ गरोहिमे लोक भेल, जाहिमे अभिनय कएनिहार भेल केवल तीनि वा चारि व्यक्ति; बिपटहुकें

मिलाए ली तँ अधिकसँ अधिक पाँच। पाँच गोट नट-नटीसँ कोन नाटकक अभिनय भए सकत? एक बेरि मञ्च पर जतबा पात्र एकत्र होइत छथि कमसँ कम ततबो नट-नटीक होएब परमावश्यक। वेषभूषा नाटकोचित केवल तीनि चारि गोटाकेँ रहैक, बिपटा तँ ओहिना रहए। तथापि ओएह नायक एक ठाम कृष्ण ओ दोसर ठाम ओही वेषमे, ओही भूषामे, शिव कोना होइत? एहिमे ने प्रवेश होइक ने निष्क्रमण, तखन नाटक कोना होइत? वाचिक अभिनय ई नटुआ सब कोना करैत? सब नाटकक भाषा तँ संस्कृत ओ प्राकृत। ओ से करैत ककरा निमित्त?

रुक्मिणी-परिणय नाटककेँ देखल जाए। एहिमे एगारह गोट प्रधान पात्र अछि जाहिमे चारि गोट स्त्री-पात्र। जतए कतहु रुक्मिणीक प्रवेश अछि, हुनका सङ्ग हुनक दुहू सखी सुदक्षिणा ओ सुशोभना छथि ओ दुहू वार्त्तालापमे भाग लैत छथि। ठाम ठाम ताहि सङ्ग रुक्मिणीक माए सेहो अबैत छथिन्ह। एकर अभिनय करत ततके लोक किरतनिञाकेँ रहैक कहाँ? एहिमे आधासँ अधिक संस्कृत-प्राकृत अछि। पँएतालीस गोट श्लोक अछि; पाँच छ पाँतीक संस्कृत वा प्राकृतक गद्य अनेक ठाम अछि। मैथिलीमे चौंसठि गोट गीत अछि। एक रातिमे एकर अभिनव सम्भव छैक? पारिजातहरण अपेक्षया छोट अछि परन्तु ओहूमे एकैस गोट गीत अछि, उन्ने से गोट श्लोक संस्कृतमे अछि ओ आधा तँ ओहूमे संस्कृत ओ प्राकृत अछि। एहि नाटक सबहिक सम्यक् अभिनयक हेतु संस्कृत बजबाक क्षमता धरि आवश्यक परन्तु से अभिनय ककरा हेतु होइत? किरतनिञाक दर्शक तँ भेल किछु रसिक जन जाहिमे किछु संस्कृतज्ञो होथी, स्त्रीगण ओ ग्रामीण लोक जकरा गीतमे रस रहैक, नाचसँ प्रेम छलैक, विपटाक खेड़िमे मनोरञ्जन भेटैक। हमरा तँ पूर्ण सन्देह अछि जे मिथिलामे कहिओ जनताकेँ संस्कृतक नाटक बुझबाक क्षमता छलैक वा नहि, तथा एमहर तीनि चारि सए वर्षसँ संस्कृत बुझनिहार लोक द्विजातिक कोन कथा ब्राह्मणहुमे परिमिते छलाह। संस्कृत-प्राकृत नाटक जे होइतहुँ छल तँ राज-सभामे, कचित् पण्डित-सभामे, ओ ताहि हेतु किरतनिञा, जकर वृत्ति छलैक नाचब, एतेक व्ययसँ साधनक संग्रह कए, एतेक श्रमसँ नाटककेँ प्रस्तृत कए, खेलाइत से सर्वथा असङ्गत प्रतीत होइत अछि। अतएव ई कहब जे मैथिली-गीत-मिश्रित संस्कृत-प्राकृतक नटक जे मैथिल पण्डित लोकनि रचलैन्हि तकर किरतनिञा अभिनय करैत छल युक्तिसङ्गत नहि प्रतीत होइत अछि ओ एही किरतनिञाक अभिनयकेँ दृष्टिमे राखि एकरा सभक रचना भेल ई बुझब तँ सर्वथा असङ्गत। एहि प्रसङ्ग पारिजातहरणक भरतवाक्यक अन्तिम चरण "अशूद्रान्तं कवीनां भ्रमतु भगवती भारती भङ्गिभेदैः" हमरा अत्यन्त मार्मिक प्रतीत होइत अछि। संस्कृतक अनधिकारी शूद्रधरि कविक वाणी मैथिली-गीतरूपहिं प्रचारित भए सकैत छल; सएह होइत रहए इएह हम "भङ्गिभेदैः" पदक आशय बुझैत छी ओ ताहि दृष्टिसँ उमापति एहि पदमे वस्तुस्थितिक दिशि संकेत कएल अछि जकर विचार हम अनुपदहिं कए रहल छी।

मुदा एहिमे कोनो संदेह नहि जे परिजातहरण एवं गौरीस्वयंवरक खेड़ि किरतनिञा करैत छल। एही दू गोट नाटकक तथा-कथित अभिनय ओ सब करए ओ से दुहू हमरा सम्पूर्ण अपना आँखिक देखल थिक। किन्तु तेसर ने कहिओ देखल ने कोनहु गुरुजनहिक मुहसँ सुनलहुँ अछि। तेसर जँ कोनो नाटक खेलाएल जाइत तँ एहि जातिक नाटकक अन्तिम रचयिता

छलाह पण्डित-प्रवर हर्षनाथझा जे महाराज लक्ष्मीश्वरसिंहक दरवारक रत्न छालह ओ हुनके प्रीत्यर्थ अपन उषाहरण रचल, ओही महाराजक पितिऔत भाए बरहगोड़िआक बाबु एकरदेक्ष्वरसिंहक प्रीत्यर्थ अपन नवीन रुपक माधवानन्द रचल; हुनके नाटक खेलाएल जाइत। परन्तु पण्डित-प्रवरक पुत्र पण्डित श्रीऋद्धिनाथ झा जिबितहिं छथि तथा कहि सकैत छथि जे एहि दुहूमे कोनहु नाटकक अभिनय कहिओ नहि भेल। ओएह पण्डितप्रवर ओही महाराजक पित्ती बाबू गुणेश्वरसिंह साहेबक आदेशसँ व्रजभाषामे राधाकृष्णमिलन नामक रासलीलाक रचना कएल जे मुद्रित अछि; एकर अभिनय व्रजक रासमण्डली शुभङ्करपुरक विशाल मन्दिर पर कतेक बेरि कएलक। उषाहरण ओ माधवानन्दक गीत सब अत्यन्त सरस अछि, बड़ लोकप्रिय भेल, किरतनिआ सब खूब गाबए, प्रायः नित्य गाबए; परन्तु अभिनय ओहि नाटक सबहिक कहिओ भेल से जानल नहि थिक।

परन्तु एहू पारिजातहरण ओ गौरीस्वयंवरक अभिनय की हो से तँ तखन बुझल जखन वयस्क भेला उत्तर ओहि नाटक सबकें पढ़ल। वस्तुतः नाटकक अभिनय नहि होइत छल, सम्पूर्ण नाटक जेना ओ लिखल अछि तेना नहि। खेलाएल जाइत छल; केवल ओहि रातुक गीत-नृत्य ओहि नाटक पर आधारित रहैत छल; ओहि राति सबटा गीत एक क्रमसँ ओही नाटकक गाओल जाइत छल। नायक मात्रकें मङ्गल-श्लोक अभ्यास रहैक; मङ्गलाचरणक प्रयोजन जे नैयायिकक भाषामे मङ्गलवाद कहबैत अछि तकर विचारक किछु खाढ़ी ओ सिखने रहैत छल; तथा प्रस्तावनाक ओ वाक्य जाहिमे नाटक-कारक परिचय अछि से नायककें थोड़ बहुत अभ्यास रहैक। जाहि नायककें एतबा अभ्यास रहैक, सीखल रहैक, तथा नाटकक सबटा गीत एक क्रमसँ राग-तालक सङ्ग गाबए अबैक सएहटा एतबो अभिनयक साहस करए। बस, अभिनय प्रारम्भ होइतहिं मङ्गल-श्लोक सस्वर पाठ कए नायक बड़े टोपहङ्कारसँ मङ्गलवादक विचारक जे अंश ओकरा अभ्यास रहैक सुनाए मङ्गलगीत गाबए जाहिमे दुहू स्त्री-वेषधारी गायक ओकर सङ्ग दैक। तदुत्तर प्रस्तावनाक वाक्य जेना अशुद्ध फशुद्ध अभ्यास रहैक पढ़िकें गीत-नृत्य आरम्भ करए, एक दिशिसँ सबटा गीत आदिसँ अन्त धरि नाचि नाचि गबैत जाए। सबटा गीत उठाबए नायक, ओ गीत नायकक उक्ति रहौक, नायिकाक, वा सखीक, ओ ओकर सङ्ग शेष दुहू गायक दैत जाइक। ऐरावत ओ गरुड़ जे बनैत छल से हम देखने छी, बनितहुँ देखने छी। बाँसक बातीकें मोड़िजौड़सँ बान्हि गाँजक सूँढ़ बनाए कारी कम्बलसँ झाँपि देलकैक ओ भरिआ ओहिमे ताहि हेतु छोड़ल भूरमे पैसि ओकरा लेने कुदैत रहए। तहिना उज्जर कम्बलसँ झाँपि गरुड़ बनाबए। परन्तु ई सब कतबा काल, जतबा काल "ऐरावत असबार पुरन्दर" इत्यादि गीत गाओल जाए। पारिजातहरणमे बीच बीचमे प्रचुर कथोपकथन अछि ओ हास्य-रस तँ ओही कथोपकथनमे अछि। ओहि राति बिपटा नारद कहाबए, परन्तु नारदक उक्ति जे वाक्य अछि से तँ संस्कृतमे अछि, से तँ ओकरा बाजि होइक नहि। हँ, पटु जँ बिपटा रहए तँ ओहि वार्त्तालापक सारांश ओ अपना शब्दमे किछु किछु बाजए मुदा परिहास मुख्यतः ओहू राति आनहि रातिजकाँ हो। पारिजातहरणमे एतेक रासश्लोक संस्कृतमे अछि ताहिमे ककरो पाठ नहि हो। हँ, दर्शक-मण्डलमे गण्य मान्य पण्डित रसिक जनकें देखि बबुजन नायककें "अरुण पुरुव दिशि" इत्यादि गीतक प्रति पदक अर्थक जे श्लोक सब अछि तकरा गबैत हम सुननेछी परन्तु साधारणतया ओ संस्कृतकें छोड़िए दैक। आरम्भहिमे एकहि बेरि मञ्च पर कृष्ण, रुक्मिणी ओ हुनक सखी

मित्रसेना, सत्यभामा, ओ हुनक सखी सुमुखी, नारद ओ दौवारिक एकत्र होइत छथि। चारि गोट स्त्री पात्र किरतनिञाकें कहाँ रहैक जे एकर अभिनय करैत? गीत सेहो रुक्मिणी, सत्यभामा ओ सुमुखी तीनुक अछि। यदि सत्ये अभिनय होइत तँ ई तीनि गीत तीनि गोटए गबैत मुदा तीनि गोट स्त्री पात्र तँ साधारणतया किरतनिञाकें रहैक नहि। सब गीत तँ सब सङ्हिं गाबए।

तथापि एतबा कौशल पारिजातहरणमे अवश्य अछि जे केवल गीतहुसँ एहि नाटकक समस्त कथा-वस्तु बुझल भए जाइत अछि। केवल एहिमे हास्य-रस संस्कृत-प्राकृतमे अछि ओ गीतमे तकर पुष्टि नहि होअए पबैत अछि। अन्यथा एकर रचना एहि रूपें भेल अछि जे गीत-नृत्यसँ एहि नाटकक प्रयोजन सिद्ध भए जाए। कवीश्वर चन्दाझाक अनुसार किरतनिञा नाचक विकासमे, ओकर प्रचारमे उमापतिक पूर्ण योगदान अछि। से कथा हम विस्तारसँ अपन उमापति-प्रसङ्ग निबन्धमे कहल अछि। एतए एतबे कहब पर्याप्त होएत जे किरतनिञा नाचक प्रचार उमापतिहिक युगमे आरम्भ भेल छल; पारिजातहरणक रचना ओ निश्चय किरतनिञा गीतनृत्यकें दृष्टिमे राखि कएल। पण्डित-समाजक अनुरोधें ओ संस्कृत-प्राकृत त्यागि नहि सकलाह मुदा समस्त जनता एकर आनन्द लए सकए तें ओ गीतक एहि चतुरतासँ विन्यास कएल। सएह हुनक भरतवाक्यक अन्तिम चरणक स्वारस्य कमसँ कम हमरा व्यक्त होइत अछि। एहिमे गीतो ततबे अछि जतबा एक रातिमे गाओल भए जाए ओ हमरा खूब स्मरण अछि जे पारिजातहरणक खेड़िमे छओ घण्टा समय लगैक। मुदा तैओ पारिजातहरण जे केओ पढ़ने छी से कहि सकैत छी जे एहि गीतनृत्यकें की नाटकक अभिनय कहब। जे कथा हम पूर्वहुँ कहि आएल छी, पारिजातहरणमे हास्य रस श्रृङ्गारहि जकाँ एक गोट प्रधान अङ्ग अछि परन्तु गीत-नृत्यमे तँ ओ एकदम छूटिए जाइक जकर पूर्त्ति बिपटा अपन हास-परिहासक कथासँ करए परन्तु नाटकक अभिनय धरि तँ से नहिए भेल !

अभिनयक दृष्टिसँ पारिजातहरणसँ बहुत नीक जकाँ गौरी-स्वयंवर खेलाएल जाए। पारिजातहरणमे संस्कृतक अंश, वार्त्तालाप ओ श्लोक दुहू, प्रचुर अछि--अन्य नाटक यथा रुक्मिणीपरिणय जकाँ ओहूमे नहि अछि--तथापि पर्याप्त अछि ओ एक गोट अङ्ग हास्य-रस तँ सबटा संस्कृतहिमे अछि। गौरीस्वयंवरमे वार्त्तालाप बड़ विरल अछि, दू तीनिठाम मात्र, जे छोड़नहु नाटकक कथावस्तुमे कोनो विशेष त्रुटि नहि होएत। ई नाटक सम्पूर्ण गीतमय अछि ओ सबटा गीत गओला उत्तर नाटक सम्पूर्ण भए जाइत अछि। मुदा तैओ नाटक तँ तखन ने कहल जाइत जँ महादेवक उक्ति नायक गबैत, पार्वतीक एक स्त्री-वेषधारी गायक ओ मेनाक दोसर। अथवा नट-नटीक वेषभूषामे किछुओ पात्रक सादृश्य रहैत। परन्तु से तँ हो नहि। ओएह बेषभुषा रहैक जे सबदिन ओ राखए ओ सबटा गीत सब सङ्हिं मीलि गाबए। दोसर, एहि नाटिकामे सबटा गीत नाटकीय पात्रहिक उक्ति नहि अछि; कए गोट गीत तँ ग्रीक कोरस जकाँ अन्यपुरुषक उक्ति थिक। ई तँ नाटकक रीति नहि थिकैक। ओ तँहि किरतनिञा एकर अभिनय नीक जकाँ करए, कारण, अभिनय भेल किरतनिञाक आङ्गिक मात्र तथा किछु सात्त्विक, नाचि नाचि गाएब, भाव देखाए देखाए गीत सब गाएब ओ जें सबटा गीत शिव-विवाहक अछि तथा गीतहिमे सबटा कथा सेहो कहल भए जाइत अछि तें विवाहक अवसर पर गोटेक राति गौरी-स्वयंवर अवश्य भेल करए। हम मानि सकैत छी जे कविलाल प्रायः किरतनिञाकें दृष्टिमे राखि एहि नाटकक रचना कएल परन्तु नाटक ई नामहिटासँ अछि। विषयकें उपस्थापित करबाक

शैली नाटकक नहि थिक तथा स्वयं कविलाल एकर प्रस्तावनाक अन्तमे "नर्त्तनारम्भ" करए कहैत छथि, नाच आरम्भ करए कहैत छथि, नाटक नहि, अभिनय नहि। तथापि एहूमे दू तीनि ठाम कथोपकथन अछिए तथा प्रायः दू ठाम ततबा पात्रक समावेश भैए गेल अछि जे किरतनिञाक हेतु जुटाएब सम्भव नहि छल। यदि एकरा नाटक कही तँ हमरा दृष्टिएँ एकरहिटा यथाकथञ्चित् किरतनिञा-नाटकक आख्या देल जाए सकैत अछि। आओर जे नाटक सब अछि-श्रीजयकान्त बाबूक इतिहासमे उन्नैस गोट किरतनिञा-नाटक-कारक नाम अछि--तकरा तँ किरतनिञा-नाटक कहबे निराधार, प्रमाण-विरुद्ध।

दू गोट नाटक हम देखल अछि जे किरतनिञाक हेतु रचल गेल। एहि दूनूमे संस्कृतक छूति नहि अछि, वार्त्तालाप नहि अछि, केवल गीत अछि। एक गोट थिक स्वर्गीय विश्वनाथझाक उषाहरण ओ दोसर थिक शिवदत्तक पारिजातहरण। एहिमे कोनो प्रकाशित नहि अछ। प्रथमक लेख सरसकवि श्रीईशनाथझाक सङ्ग अछि,
दोसरक लालगञ्जनिवासी श्रीहरिनाथझाक सङ्ग अछि। परन्तु एकरा सबकें नाटक कहबे अयुक्त। ई सब तँ नृत्योपयोगी प्रबन्ध-गीत थिक। परन्तु किरतनिञा तँ करए सएह, गीत-नृत्य ओ तें ओकरा हेतु लिखल गेल वस्तुओ तँ सएह होएत। नाटक ने ओ करए, ने ओकरा हेतु कोनो नाटक लिखल गेल, ने जे नाटक लिखल गेल से ओ कए सकैत छल।

(७)

किरतनिञा नामहुसँ हमर मतक पुष्टि होइत अछि। वर्णरत्नाकरमे ई शब्द नहि अछि मुदा नाचक ओहिमे साङ्गोपाङ्ग वर्णन अछि तथा किरतनिञाक नायकक सदृश नृत्यक प्रधानकें ओतए विद्यावन्त कहल अछि। तथापि व्युत्पत्तिक बलसँ किरतनिञा शब्दक आशय स्पष्ट भए जाइत अछि। भजनिञा जकाँ ई शब्द ओहि व्यक्ति वा व्यक्तिसमूहक हेतु व्यवहृत होइत अचि जे कीर्तन-प्रभेदक गीत गाबए जेना भजनिञा भजन-प्रभेदक।

भगवानक नाम, गुण, ओ लीलाक वर्णन कीर्तन थिक ओ से कीर्तन ओना तँ बड़ प्राचीन वस्तु थिक तथा नवधा भक्तिमे बड़ प्राचीन समयसँ परिगणित अछि। परन्तु गौराङ्ग महाप्रभु चैतन्यदेव एकरा नव रूप देल। विद्यापति, चण्डीदास प्रभृति पूर्वक कविक गीत महाप्रभु नाचि नाचि गाबथि ओ एकरहि ओ कीर्तन कहल। चैतन्योत्तर-कालमे नवद्वीप कोन रूपें सहिं सङ्ग कीर्तन ओ नव्यन्यायक हेतु प्रसिद्ध भए गेल ओ तकर प्रभाव मिथिला पर कोन रूपें पड़ल तकर वर्णन हम अपन गोविन्ददासझाक प्रसङ्ग निबन्धमे कएने छी। हमरा विश्वास अछि जे जहिना एहिसँ पूर्वक युगमे बङ्गाली विद्यार्थी लोकनि मिथिलासँ विद्यापतिक गीत सीखि सीखि बङ्गाल आपस जाए ओतए ब्रजबूलीक सृष्टि कएल तहिना एहि युगमे मिथिलाक विद्यार्थी लोकनि नवद्वीपसँ कीर्तन सीखि सीखि स्वदेश प्रत्यावृत्त भए किरतनिञा नोचक चालि चलाओल। मिथिलाक संस्कृतिमे ओ लोकनि स्वयं तँ नाचब वृत्ति ग्रहण नहि कएल, परन्तु नटुआकें सिखाओल तथा ओहि नटुआकें किरतनिञा नाम देल। रागतरङ्गिणीमे लोचन जे कायस्थसूनु जयतक प्रसङ्ग लिखने छथि ताहिसँ स्पष्ट होइत अछि जे एहिसँ पूर्वक युगमे मिथिलामे विद्यापतिक गीतक गान मात्र होइत छल, नाच नहि। बङ्गालमे विद्यापतिक गीत नाचिकें

गाओल जाए तथा से कीर्तन कहाबए। मिथिलामे गानक स्वतन्त्र परिपाटी छल, नाचक सेहो परिपाटी छल। नवद्वीपक कीर्तनक अनुकरणमे दुहू मिश्रित कए देल गेल। परञ्च एहि अनुकरणमे ओ लोकनि अपन प्राचीन परिपाटीकें नहि त्यागल। नवद्वीपमे कीर्तनक स्वर ओ ताल भिन्न छैक ओ सब गीत कीर्तन कहबैत अछि वा कीर्तनक पद। मिथिलामे अपन स्वतन्त्र गान-पद्धति छल, गीतक राग ओ ताल, स्वर ओ भास सब पूर्वहिसँ आबि रहल छल। नवीन नाचहुमे सब पूर्ववत् रहल; गीतक नाम सेहो मान ओ बटगमनी, लगनी ओ मलार प्रभृति पूर्ववते रहल। केवल ओहि नाचक नाम, एहि गीत-नृत्यक नाम धरि, पड़ि गेल किरतनिञा। पूर्वहि जकाँ आबहुँ वाद्य रहल ओएह दूटा मृदङ ओ झालि। जनसाधारणक मनोरञ्जनक निमित्त विपटाक समावेश कए देल गेल जकर ने कोनो चर्चा ने प्रसङ सएह नवद्वीपक कीर्तनमे छल। वस्तुतः नवद्वीपक कीर्तन भक्तिमूलक छल परन्तु मिथिलामे किरतनिञा आदिअहिसँ मनोरञ्जनक हेतु भेल ओ किरतनिञा भक्तिहुक गीत गाबए परन्तु सेहो मैथिल पद्धतिसँ। विद्यापतिक गीतक जे अर्थ नवद्वीपमे लगाओल जाए से अर्थ तँ मिथिलामे कहिओ लगाओल गेल नहि। एहि रूपें एहि गीत-नृत्यक प्रचार भेल जे क्रमशः मिथिलाक अपन स्वतन्त्र नाचक रूपमे कमसँ कम अढ़ाइ सए वर्ष धरि देशक रसिक-समाजमे अत्यन्त लोकप्रिय रहल। हमर अनुमान अछि जे गोविन्ददासझाक नवद्वीपसँ फिरला उत्तर सत्रहम शताब्दीक आदिमे एकर प्रचार आरम्भ भेल होएत। कवीक्ष्वर चन्दाझा लिखैत छथि जे उमापति मकमानीक राजाक आश्रयमे एहि नाचकें प्रचारित कएल। तें एकर समय मोटामोटी १६५० ई० मानल जाए सकैत अछि, किरतनिञा-नाचक सृष्टि सत्रहम शताब्दीक द्वितीय चरणमे भेल होएत।

परन्तु जाहि जातिक नाटककें किरतनिञा-नाटकक आख्या देल जाइत अछि तकर परम्परा तँ १६५० ई० सँ बहुत पूर्वहिसँ मिथिलामे आबि रहल अछि। किरतनिञा-नाटकक लक्षण तँ कतहु कहल नहि गेल अछि

परन्तु किरतनिञा-नाटकक प्रसङ जे किछु एमहर लिखल गेल अछि तकर आशय हमरा एहने सन प्रीतत होइत अछि जे मैथिल पण्डित-कवि लोकनि जे संस्कृतमे नव नव नाटक लिखलैन्हि जाहिमे मध्य मध्यमे मैथिली-गीत अछि सएह भेल किरतनिञा-नाटक, कारण, किरतनिञा नटुआ एहि गीत सबकें गबैत छल। हालहिमे ज्योतिरीश्वर ठाकुरक धूर्त्तसमागम-प्रहसनक एक गोट संस्करण प्रकाशित भेल अछि जाहिमे संस्कृतक श्लोकक अर्थ लएकें मैथिलीमे गीत सब अछि; परन्तु एकरा यदि छोड़िओ दी तथापि विद्यापतिक गोरक्षविजय, गोविन्द ठाकुरक नलचरित ओ वंशमणिझाक ओ सब नाटक जकर रचना नेपालक मल्ल राजा लोकनिक प्रीत्यर्थ भेल ओ जे एखनहु नेपालमे भेटैत अछि से सब किरतनिञा-नाटकक श्रेणीमे आबि जाएत। परन्तु ताहि समयमे तँ किरतनिञाक नामो नहि छल तखन ओ किरतनिञा-नाटक कोना भेल? मुख्यतः गौरीस्वयंवर ओ यथाकथञ्चित् पारिजातहरणक गीतनृत्य किरतनिञा नटुआ करैत छल, तकरा अभिनय मानि ली ओ एतत्सजातीय मैथिली-गीत-मिश्रित संस्कृत नाटककें किरतनिञा-नाटकक आख्या दए दी, एकरा प्रचार छाड़ि आओर की कहि सकैत छी. मैथिलीमे गीत दए दए संस्कृत नाटकक रचनाक परम्परा मिथिलामे बड़ प्राचीन थिक हमरा जनैत विद्यापति ठाकुरहिक चलाओल थिक। ई चालि बड़ लोकप्रिय भेल, कारण, नाटकक तँ अभिनय होइक नहि जे ओकर प्रचार होइत परन्तु गीतक गान तँ होइक ओ पछाति गीत-नृत्य सेहो होइक, ताहि द्वारा एहि गीत सबहिक प्रचार सुगम छल। तखन केवल नटुआक हेतु गीत लिखबामे पण्डित-कवि

लोकनिकें जेना हीनताक बोध होइन्ह तें ओ लोकनि लिखथि संस्कृतमे नाटक ओ ताहिमे मिश्रित कए देथि मैथिलीक गीत। एहि परम्पराक अनुसरण उन्नैसम शताब्दीक अन्त धरि, पण्डितप्रवर हर्षनाथ झा धरि, मैथिल पण्डित-कवि लोकनि करैत अएलाह। अतएव जाहि दृष्टिसँ विचार करब, किरतनिञा-नाटकक कल्पना प्रमाण-विरुद्ध सिद्ध होएत। वस्तुतः किरतनिञाक नाचकें नाटकक अभिनय कहबे उचित नहि थिक।

(८)

किरतनिञा नाटकक कल्पना उपलब्ध प्रमाणक ततेक विरिद्ध अछि ओ से तेना स्पष्ट अछि जे ओहिमे ककरहु विप्रतिपत्ति होएतैन्हि तकर हमरा सन्देहो नहि अछि। परञ्च हमरा एतए विचारणीय किरतनिञा-नाटक नहि अछि। हमरा जिज्ञास्य अछि मिथिलामे नाटकक परम्परा ओ ताहि प्रसङ्ग मैथिल पण्डित-कवि लोकनिक रचित जे मैथिली-गीतमिश्रित संस्कृत-प्राकृतक नाटक अछि, जकरा एमहर आबि किरतनिञा-नाटकक आख्या देल गेल अछि, तकरा की बुझबाक चाही। एकरा मैथिलीक नाटक कहबाक हमरा युक्ति नहि भेटैत अछि। हमरा दृष्टिएँ तँ ई संस्कृतक नाटक थिक। एहि प्रसङ्ग सबसँ पूर्व ई विचारणीय थिक जे नाटकमे मुख्य वस्तु की थिक? नाटक थिक दृश्य काव्य ओ सब काव्य जकाँ नाटकहुमे कथा-वस्तु रहैत अछि। से कथा नाटकमे परस्पर कथोपकथन द्वारा एवं पात्रक क्रिया द्वारा प्रदर्शित होइत अछि। क्रियामे तँ भाषाक प्रयोजन नहि छैक परन्तु कथोपकथन-से कथोपकथन संवाद हो, आत्मगत हो, जनान्तिक हो अथवा अपवारित हो--कोनहु रूपमे हो परन्तु होएत कोनहु भाषाक द्वारा अतएव अमुक नाटक कोन भाषाक थिक एकर निर्णयक ओहि नाटकक कथोपकथनक भाषा थिक। उचित तँ इएह ने थिक जे जाहि भाषामे नाटकक मुख्य वस्तु उपनिषद्ध हो, जाहि भाषा द्वारा नाटकीय कथा-वस्तु उपस्थापित हो सएह ओहि नाटकक भाषा बुझल जाए।संस्कृत नाटकमे दू गोट भाषाक प्रयोग तँ आदिअहिसँ देखालाँमे अबैत अछि; एखन धरि एहन नाटक नहि भेटल अछि जाहिमे केवल संस्कृत हो। यदि से भेटत तँ भरत-प्रभृति आचार्यक मतें ओ विशुद्ध नाटक, सर्वलक्षणोपेत नाटक नहि कहाओत। परन्तु प्राकृत रहनहि कोनहु नाटककें प्राकृतक नाटक कहाँ कहल जाइत अछि? यदि से नहि तँ मध्य मध्यमे गीत मात्र मैथिलीमे रहने कोनहु नाटककें मैथिली-नाटक कोना कहब जखन संस्कृत-नाटकक लक्षणक अनुरूप संस्कृत ओ प्राकृत एहूमे अछि। कालिदासक विक्रमोर्वशीयमे संस्कृत ओ प्राकृत तँ अछिए,
चारिम अङ्कमे एहि दुहूसँ भिन्न अपभ्रंश सेहो अछि परन्तु तें की बिक्रमोर्वशीय अपभ्रंशक नाटक कहल जाइत अछि अथवा से कहब सङ्गत होएत? गौरीस्वयंवरकें छोड़ि प्रायः एतत्सजातीय कोनो दोसर नाटक नहि अछि जाहिमे संस्कृतक अंश आधासँ थोड़ हो। कतोकमे मैथिलीक 'अंश तँ तृतीयांश मात्र अछि। परन्तु गीत कतबओ रहओ, ओ तँ नाटकक मुख्य वस्तु नहि थिक। पारिजातहरणमे ई कौशल अवश्य अछि जे गीतहिसँ कथा-वस्तुक परिचय भए जाइत अछि परन्तु से केवल परिचय; हास्यरसक जे ओहिमे अंश अछि, जे ओकर एक गोट प्रधान अङ्क थिकैक, से गीत-भागसँ व्यक्त नहिए होइत अछि। आओर आओर नाटक सबमे यथा आनन्दविजय किंवा रुक्मिणीपरिणय अथवा उषाहरण, ताहिमे गीतक अंश हटाइओ दिऐक तँ ओतेक ह्रद्य तँ नाटक नहि रहए पाओत परन्तु नाटकक कथा-वस्तुमे कोनो विशेष हानि नहि होएत। उदाहरणार्थ एहि जातिक सबसँ पुरान नाटककें देखल जाए। ज्योतिरीश्वरक

धूर्त्तसमागम-प्रहसन आइ धरि संस्कृतक नाटक बुझल जाइत छल जेना शङ्करमिश्रक गौरीदिगम्बर प्रहसन। हालहिमे धूर्त्तसमागमक एक गोट संस्करण प्रकाशित भेल अछि जाहिमे मध्य मध्यमे गोट बीसेक गीत मैथिलीमे अछि, नव नहि किन्तु संस्कृतमे जे श्लोक अछि ताही अर्थपरक। यदि एहि सब गीतकें हटाए दिऐक तँ नाटकक स्वरूप ओएह रहैत अछि जे एतेक दिन उपलब्ध छल। आब ओहि किछु गीतक भेटलहिसँ ई प्रहसन संस्कृतक प्रहसन छूटि गेल, मैथिलीक प्रहसन भए गेल? ई कहब हमरा जनैत आग्रह मात्र थिक। मैथिली नाटकक परम्पराकें छओ सए वर्षसँ प्राचीन सिद्ध करबाक लोभसँ से भलहिं कएल जाओ परन्तु ई ऐतिहासिक सत्य थिक नहि, प्रचार मात्र भेल। सत्य तँ थिक ई जे एहिसँ हमर भाषा-साहित्यमे सङ्गीतक परम्परा, गीत-रचनाक परम्परा, छओं सए वर्षसँ पुरान प्रमाणित होइत अछि, नाटकक नहि। नाटकक परम्परा हमरा ओहिठाम अछिए नहि।

मुदा तखन प्रश्न रहैत अछि जे संस्कृतक नाटकमे मैथिलीक गीत देबाक प्रयोजन कोन तथा ई कहाँ धरि युक्तियुक्त? एहि प्रसङ्ग हम पूर्वहुँ संकेत कएने छी, पुनः कहब, जे नाटक मनोरञ्जनक साधन थिक, एकर उद्देश्य थिकैक आनन्द प्रदान करब। तदर्थ सब नाटकमे नृत्य ओ गीत रहैत अछि। नाटकीय वस्तुसँ गीतकें थोड़ सम्बन्ध रहैत अछि; ओ तँ मनोरञ्जनार्थ मध्यमे सन्निविष्ट रहैत अछि। ई वस्तु संस्कृतहिमे अछि से नहि, पाश्चात्य देशहुक नाटकमे ई भेटैत अछि। संस्कृतमे तँ प्रायः सब नाटकमे प्रस्तावनाक मध्यहिमे नटी एकटा गान करितहिं अछि। अभिज्ञानशकुन्तलमे से गीत प्राकृतमे ग्रीष्मसमयक वर्णन अछि। वस्तुतः संस्कृत नाटकमे श्लोक सङ्गीतहिक हेतु देल जाए लागल जखन श्लोकक गान होइत छल, ओकर पाठ नहि। जयदेव संस्कृतक प्रथम महाकवि भेलाह जे देशी भाषामे प्रचलित रागताललयाश्रित गीतक अनुकरणसँ पूर्वक श्लोककें तदुपयुक्त नहि बूझि संस्कृतहिमे रागताललयाश्रित गीतक रचना कएलैन्हि। अतएव स्पष्ट अछि जे मैथिल कविलोकनि से सङ्गीत संस्कृतमे नहि दए मैथिलीमे देब आरम्भ कए देल। मैथिलीमे सङ्गीतक परम्परा पूर्वहिसँ छल ओ से लोक-प्रिय छल। केओ मैथिल कवि एहि उद्देश्यसँ तँ नाटक रचलैन्हि नहि जे ओकर अभिनय होएत। ओ लोकनि तँ नाटक रचथि काव्यजकाँ, नाटक-विषय अपन पाण्डित्यप्रदर्शनार्थ, ओकरा पढ़बाक हेतु। यदि अभिनयो होइत तँ से बुझनिहार केवल संस्कृतज्ञे धरि होइतथि, ओकर प्रचार केवल ओही वर्गमे सीमित रहैत। परन्तु प्रचारक अभिलाषा तँ सब लेखककें रहैत छैक, स्वाभाविक थिकैक। नाटकक जँ प्रचारो होएत तँ केवल पण्डित-समाज धरि किन्तु गीत जँ नीक भेल तँ आशूद्रान्त, स्त्रीगण ओ पुरुष, समस्त देशमे ओकर प्रचार होएत, आदर होएत, तें ओ लोकनि मैथिलीमे गीत लिखथि। पारिजातहरणक भरतवाक्यक अन्तिम चरणसँ उमापतिक इएह आशय ध्वनित होइत अछि। ज्योतिरीश्वरसँ हर्षनाथ धरि बराबरि इएह क्रम रहल। जेना स्त्रीपात्र अथवा नीच पात्रक भाषा नाटकमे प्राकृत, तहिना गीतक भाषा मैथिली। दू गोट भाषाक प्रयोग जखन होइतहिं अछि तखन तीन गोट भाषाक किएक नहि? मिथिलाक ओहि स्वर्णयुगक पण्डितगणकें से साहस रहैन्हि, आत्मबल रहैन्हि, विश्वास रहैन्हि जे नव वस्तु चलाए ली। "यदि पथि विपथे वा वर्त्तयामः स पन्थाः" कहनिहार ओ मनीषीगण संस्कृत-नाटकमे ई नवीन कए देल, दु गोट भाषाक स्थानमे तीनि गोट भाषा चलाए देल। इतिहास साक्षी अछि जे कर देब स्वीकार कए दिल्लीक तुगलक सम्राट्सँ जखन मिथिलाक राज्य
ओइनिबार ठाकुर लोकनि प्राप्त कएल तखन हुनका समक्ष इएह प्रश्न छल जे हमरा देश राजा

स्वीकार करत की नहि, कारण, कर देलें तँ राजत्वक हानि होइत अछि ओ अनभिषिक्त तँ राजा नहि हो तथा ब्राह्मण भए ओलोकनि राज्याभिषेक कोना लितथि। एहना स्थितिमे सिद्धकामेश्वरक कनिष्ठ पुत्र राजा भवेश्वर ताहि समयमे वृद्ध रत्नाकरकार चण्डेश्वरकें बजाए हुनकासँ राजनीति-रत्नाकरक रचना कराओल जाहिमे चण्डेश्वर व्यवस्था देल जे राजा दू प्रकारक होथि, अकर ओ सकर, तथा कर देलहिटासँ राजत्वक हानि नहि हो। ओ इहो व्यवस्था देल जे अभिषेक राजाक हेतु आवश्यक नहि छैक तें ब्राह्मण किवा शूद्र केओ राजा भए सकैत छथि। चण्डेश्वरक एहि व्यवस्था पर ओइनिबारक राज्य सुस्थिर भेल तथा ओलोकनि सर्वमान्य भेलाह। तहिना ताहि समयमे यदि केओ मैथिल पण्डित नाट्यशास्त्र पर ग्रन्थ लिखितथि तँ ओ निश्चय ई व्यवस्था कए देने रहितथि जे नाटकमे गीतक भाषा देशी हो यदि ओहि देशी भाषामे गीतक परम्परा रहैक। परन्तु लक्षण-ग्रन्थमे नहिओ अछि तथापि वस्तुस्थितिसँ तँ सएह सिद्ध होइत अछि ओ लक्षण सेहो दृष्टान्तहिसँ बनैत अछि। एहि मैथिल संस्कृत-नाटक सबहिक अभिनय तँ देखल नहि थिक, सुनलो नहि थिक, परञ्च एहि नाटक सबहिक गीत सब गोटेक गोटेक तँ एतेक प्रसिद्ध अछि जे प्रायः सर्वत्र गाओल जाइत अछि ओ किरतनिआ तँ प्रायः सब नाटकक गीत गाबि गाबि नाच करए। गोविन्द ओ देवानन्द, उमापति ओ सरस-राम, रमापति ओ नन्दीपति, भानुनाथ ओ हर्षनाथ--हिनका लोकनिक ख्याति कथीक आधार पर, कोन बल पर? ओही नाटक सबहिक गीतसब पर ने। आ' ओ गीत सब की थिक? मान, बटगमनी, स्वरूपवर्णन, तिरहुति, चुमाओनक, परिछनिक, गोआलरी, ऋतुवर्णन, इत्यादि जकरा नाटकीय वस्तुसँ कोनो सम्बन्ध नहि, कोनो गीत कोनहु नाटकमे गाओल जाए सकैत अछि। एहि प्रसङ्ग इहो कहब असङ्गत नहि होएत जे कवि पहिने गीत रचि लैत छलाह तखन नाटक लिखैत छलाह जाहिमे ओहि गीत सबहिक क्रमशः समावेश कए दैत छलाह। गीतक प्रचार छल स्त्रीगण-समाजमे, गायकमे, नटुआमे, किछु पण्डित रसिक जनमे, परन्तु ताहिमे नाटक कतेक गोटाकें बोधगम्य होइत। अतएव गीतक अस्तित्व नाटकसँ पृथक् मानि लेब, नाटकहुमे गीतक पृथक्त्व मानि लेब, विशेष युक्तियुक्त होएत। जेना संस्कृत नाटकमे भाषा दू गोट प्रयुक्त होइत अछि तहिना मानि ली जे मिथिलाक कतोक संस्कृत-नाटकमे तीनि गोट भाषाक प्रयोग होइत अछि। ओ तखन एहि नाटक सबकें किरतनिआ-नाटक नहि कहि मैथिल-संस्कृत-नाटक कहब विशेष सङ्गत नाटक थिक।

लोकभाषामे नाटकक रचना आसाममे, अङ्किता नाट; ओ नेपालमे जे "नेपाले बाङ्ला नाटक" कहि प्रकाशित अछि। ओतए रङ्गमञ्च छल, अभिनयक परम्परा छल, अभिनयक साधनकें दृष्टिमे राखि नाटक रचल गेल, ओकर अभिनय भेल। मिथिलामे ने रङ्गमञ्च छल, ने नाटकक अभिनयक परम्परा छल, ने नाटकक अभिनय होइत छल, ने अभिनयकें दृष्टिमे राखि नाटकक रचना भेल। गीत गानक वस्तु थिक जे नाटकसँ पृथकहुँ गाओल जाए सकैत अछि ओ एहि गीत सबहिक रचना सत्ये नाटकसँ पृथक गाओल जएबाक हेतु भेल।

आसाम ओ नेपालक रचना छोड़ि मैथिली-नाटकक रचना सर्वप्रथम कविवर जीवनझा कएल ओ हुनक नाटक मैथिली साहित्यक हेतु नव वस्तु भेल। परन्तु ओहू नाटकक अभिनय नहि कतहु सुनल थिक। मैथिलीमे प्रथम नाटक जकर अभिनय भेल, ओ खूब लोकप्रिय भेल, से थिक साहित्यरत्नाकर मुन्शी रघुनन्दनदास जीक मिथिला नाटक। ताधरि मिथिलामे जकरा पारसी ष्टेज कहैत छिऐक तकर पूर्ण प्रचार भए गेल छल ओ मिथिलामे कए गोट नाटकक

मण्डली बनि गेल छल। ओही मण्डली सबकें दृष्टिमे राखि, ओही ष्टेजक हेतु, मुन्शीजी अपन नाटक रचलैन्हि।

(९)

अतः मिथिलाक त्रैभाषिक नाटक, संस्कृत-प्राकृत-मैथिली नाटककें हमरा विचारें मैथिली नाटक कहब
आग्रह मात्र थिक, शुद्ध प्रचार थिक। एहिसँ मैथिली नाटकक पुरान परम्पराक खण्डन भए जाइत अछि ओ तें सम्भव थिक जे हमर विचार कतोक मैथिली साहित्यक प्रेमीकें मैथिलीक विरोधी प्रतिभासित होइन्ह, कारण, एहिसँ हमरा साहित्यक गौरवमे, ओ गौरव मिथ्ये गौरव किएक नहि हो, किछु हीनता बूझि पड़त। परन्तु हम जाहि कथाक एतए प्रतिपादन कएल अछि से निष्पक्ष भए विचारणीय थिक। इतिहासमे सत्यक महत्त्व अपरिमेय छैक ओ सत्यक समक्ष हानि वा लाभक हिसाब नहि हो। तथा किछु गनल गूथल कृतिकें छोड़ि अधिकांश ई नाटक सब एहन अछिओ नहि जकरा अपनओने नाटकक क्षेत्रमे हमरा साहित्यकें गौरव होएत। एहि नाटक सबमे जे वस्तु सत्ये हमर थिक से थिक गीत ओ से सबटा गीत प्रत्येकें उत्तम अछि जाहिसँ कोनहु साहित्यकें गौरव होएत। हमरा जनैत एहि नाटक सबहिक यथार्थ स्वरूप स्वीकार कए लेने हानि होइत अछि बहुत रास काचक; हमर जे हीरा अछि से हमरे रहैत अछि। अतएव हम तँ बुझैत छी जे आग्रहकें छोड़ि यदि सत्यकें मानि लैत छी तथापि हमरा लोकनिक साहित्यक उत्कर्षमे कोनो विशेष हानि नहि होइत अछि, कारण, हमरा साहित्यक सङ्गीतक परम्परा अक्षुण्णे धरि नहि रहैत अछि प्रत्युत ओ आओर पुष्ट भए जाइत अछि। विश्वक साहित्यमे तथाकथित मैथिली-नाटक नगण्य अछि किन्तु मैथिली गीतकाव्य विश्वक कोनहु साहित्यक गीतकाव्यसँ न्यून नहि अछि। ई गौरव छोट नहि भेल ओ तेहन भेल जाहिमे कोनहु सन्देहक अवकाश नहि अछि किएक तँ ओ सत्य थिक।

३
विद्यापतिक शिवसिंह

अपन अनुपम कृति कीतिलताक प्रस्तावनामे विद्यापति कहने छथि जे

तिहुअन खेत्तहिं काञि तसु कित्ति-वल्लि पसरेइ।
अक्खर खम्हराम्भ जइ मञ्चा-बन्धि न देइ।।

आशय स्पष्ट अछि। संस्कृतमे कहबी छैक जे "कीर्त्तिरक्षरसम्बद्धा"। ताहिमे कीर्त्तिमे वल्लीक आरोप कए कवि साङ्ग रूपकक विच्छित्ति दए अपन उक्तिकें कविताक स्वरूप देल

अछि। एहिमे सन्देह नहि जे काव्यप्रतिभा जन्मजात होइत अछि ओ कविक ह्रदयक उमड़ैत भाव स्वतः भावानुकूल वाणी द्वारा कवितारूपें निःसृत होइत अछि। भवभूति कहने छथि जे "पूरोत्पीड़े तड़ागस्य परीवाहः प्रतिक्रिया" ओ शोक एवं क्षोभमे भलहिं प्रलापहिं ह्रदय धैर्य प्राप्त करओ परन्तु कविता-रूप परीवाह अनायास ओहि ह्रदयक हेतु होइत छैक जे आनन्दक भावसँ उमड़ल रहैत अछि। बहुजनसुखाय बहुजनहिताय अवश्ये कविताक रचना होइत अछि मुदा ई मानए पड़त जे ओकर प्रथम लक्ष्य रहैत अछि स्वान्तः-सुखाय। तें ई मानबामे कोनो विप्रतिपत्ति नहि जे विद्यापति अपन बहुविध कविताक रचना अपनहि आनन्दक अतिरेकमे कएल। तथापि ओहि स्वान्तःसुखाय लाभक सङ्ग सङ्ग अपन आश्रय, अपन मित्र, अथवा अपन हितैषीकें अमरत्व प्रदान करब सेहो हुनका उद्देश्य अवश्य छलैन्हि, नहि तँ अपन गीतक भनितामे एतेक व्यक्तिक नाम दए दए ओहि सबहुँ व्यक्तिक कीर्त्तिवल्लीकें पसरबाक हेतु ओ अक्षरक खाम्ह बनाए मचान नहि बान्हि जैतथि।

मिथिलाक इतिहासमे शिवसिंह ओ विद्यापतिक साहचर्य बड़ मधुर प्रसङ्ग अछि। शिवसिंह जँ राजकुलमे
उत्पन्न भेल छलाह तँ विद्यापति राजमन्त्रीक कुलमे, ओ सए वर्षसँ अधिक दिन धरि मिथिला-राज्यक शासनसूत्र ओ मैथिल समाजक नेतृत्व हिनकहि घरमे छलैन्हि। महाराज शिवसिंहक ओ बालसखा छलाह, अन्तरङ्ग मित्र छलाह, विश्वस्त सचिव छलाह,महाराज-पण्डित छलाह, राजकवि छलाह। शिवसिंह बड़ प्रतापी राजा भेलाह। मिथिलामे कहबी छैक जे

पोखरी रजोखरि आ'र सब पोखरा।
राजा शिवैसिंह आ'र सब छोकरा।।

परन्तु शिवसिंहक सभटा प्रताप विस्मृतिक गर्तमे गड़ि गेल रहैत ओ ई फकड़ा मात्र हुनक प्रतापक गौरवकें ख्यापित करैत हुनक नामकें मन पाड़ैत रहैत यदि विद्यापति अपन अनेकानेक रचनामे हुनका अमर नहि कए गेल रहितथि। पुरुष-परीक्षाक अवसन्न-बिद्य-कथामे विद्यापति राजा ओ कविक सम्बन्धक प्रसङ्गमे कहैत छथि जे सृष्टिक आदिकालहिसँ जे राजा लोकनि वाक्कलागौरवक हेतु कवि लोकनिकें आराधि आराधि गैल छथि

तेषां नाम सरस्वती-परिणतावद्यापि संगीयते।
जाताः के न मृता न के तदितरे ज्ञाता न गेहाद् बहिः।।

वस्तुतः "यशसां स्थापनस्थानं कविभाषितं" ई कथा जतेक शिवसिंह-विद्यापतिक प्रसङ्गमे चरितार्थ भेल अछि ततेक आओर कहाँ देखैत छी?

ओना तँ विद्यापति अपन प्रभु शिवसिंहक कीर्तिकपताका सएह फहराए गेल छथि परन्तु कीर्त्तिपताका नष्ट भए गेल लुप्तप्राय अछि। कीर्त्तिपताका कहि जे ग्रन्थ प्रकाशित भेल अछि तकर प्रस्तावनामे "जगतसिंह"क कीर्तन अछि! परन्तु जतबओ विद्यापतिक रचना उपलब्ध अछि, निश्चित रूपसँ विद्यापतिक रचना प्रमाणित होइत अछि, ततबहुसँ शिवसिंहक सम्बन्धमे बहुतो ज्ञातव्य विषय ज्ञात भए जाइत अछि। आश्चर्य होइत अछि जे शिवसिंह जे किछु विद्यापतिक हेतु

कएने होइथिन्ह ताहिसँ ओ बुझने होएताह जे ओ अपन बाल-सखाकें उपकृत करैत छथि, कवि अपनहु एकरा उपकारे मानने होएताह, ओ सबसँ बेसी तँ ओहि समयक लोक सब--कतोक तँ ईर्ष्यालु समेत भए--इएह कहने होएताह जे महाराज अपन बालसङ्गीतकें धन ओ सम्मान सब कथूसँ परिपूरित कए देल। परन्तु आइ जखन दुहू महापुरुषक परस्पर सम्बन्धक दिशि दृष्टिपात करैत छी तँ स्पष्ट प्रतीत होइत अछि जे उपकार तँ विद्यापति कएलथिन्ह शिवसिंहक जे हुनका अमर कए गेलथिन्ह। राजा जे किछु देलथिन्ह से अनित्य छल, नष्ट भए गेल, लोक बिसरि गेल, परन्तु कवि जे किछु हुनका दए गेलथिन्ह से नित्य अछि, एखन पर्यन्त ओ ओहिना अछि वा ई कहू जे जँ जँ लोककें ओहि समयक स्मृति क्षीण भेल जाइत छैक तँ तँ अन्धकारक प्रकाश जकाँ महाकविक वाणीमे उपनिबद्ध शिवसिंहक कीर्त्ति आओर तीक्षणतासँ आलोकित भए रहल अछि।

विद्यापतिक रचनामे शिवसिंहक प्रसङ्ग यावतो वर्णनक संग्रह कए ओकर क्रमबद्ध अध्ययन एक गोट बड़े रोचक ओ उपादेय विषय होइत परन्तु ताहि हेतु एक गोट क्षीणकाय निबन्ध पर्याप्त नहि होएत। पुरुष-परीक्षामे अनेक ठाम शिवसिंहक प्रशंसा अछि, स्तुति अछि। कमसँ कम दू गोट गीत केवल शिवसिंहक वर्णनमे उपलब्ध अछि। परन्तु सबसँ चमत्कारक अछि विद्यापतिक ओ गीत सब जाहिमे भनितामे शिवसिंहक नामतः उल्लेख अछि। विद्यापतिक भनिता केवल विधि-रक्षार्थ टा नहि अछि, कवि ओहिमे केवल अपन नाम वा उपाधि अथवा अपन आश्रय किंवा जनिक प्रमोदार्थ ओहि गीतक रचना भेल तनिक नामक कीर्तन मात्रे कएकें नहि छोड़ि देने छथि, अपितु ओहिमे बहुधा ओ अपन उक्ति बड़े मार्मिक रूपसँ अभिव्यक्त कएने छथि। गोविन्ददासहुक रचनामे भनिता एहिना सार्थक अछि, साभिप्राय अछि। हुनक परवर्ती कवि लोकनि भनिताकें केवल व्यवहार बनाए लेल। ताही कारणें विद्यापति वा गोविन्ददासहुक भनिताक महत्त्व साधारणतया लोककें आकृष्ट नहि कए सकलक ओ विद्यापतिक भनिताक स्वतन्त्र रूपसँ अध्ययन एकन पर्यन्त नहि भेल अछि। केवल श्रद्धेय डाक्टर श्रीविमानविहारी मजुमदार साहेब एकर महत्त्वकें बुझलैन्हि अछि। हुनक एक गोट लेख एहि प्रसङ्ग बिहार रिसर्च सोसाइटीक जर्नलमे १९४२ मे प्रकाशित भेल छल तथा विद्यापतिक गीतक जे संग्रह ओ सम्पादित कएल अछि ताहिमे भनिताक क्रमसँ गीतक वर्गीकरण कए एक भनिताक सबटा गीत ओ एकत्र संगृहीत कए देल अछि तथा ओकर विस्तृत भूमिकामे एहि भनिता सबहिक विचार सेहो ओ बड़े वैज्ञानिक रीतिसँ कएल अछि। यद्यपि ओ विचार सर्वांशें पूर्ण नहि अछि, केवल भनिताक विचारक दिग्दर्शन मात्र कराए देल गेल अछि, मुदा एहिमे कोनो सन्देह नहि जे श्रीमजुमदार साहेब जे काज कएल अछि ताहिसँ विद्यापतिक भनिताक स्वतन्त्र रूपसँ अध्ययन करबाक केवल सामग्री मात्रे संकलित नहि भेल अछि, अपितु ओकर अध्ययन ओ अनुशीलनक प्रकार सेहो प्रदर्शित भेल अछि।

ई कथा आब सर्वविदित अछि जे राधाकृष्ण विषयमे सख्यभाव मानि महाप्रभु चैतन्यदेव विद्यापतिक श्रृङ्गारक गीतकें भक्तिक भावसँ देखथि। महामना ग्रिअरसन साहेबकें एहि गीत सबमे जतए कतहु माधवक नाम नहिओ अछि तथापि केवल नायकहुसँ परमात्मा एवं राधा किंवा नायिकासँ जीवात्मा प्रतिभासित होइन्ह। एही देखाउसिमे आब अन्यान्यो कतेक जन विद्यापतिक श्रृङ्गारक गीतमे मधुर रसक परिपाक मानए लगलाह अछि। परन्तु श्रीमजुमदार साहेब एहि गीत-सबहिमे भनिताक सङ्ग शेष पदक समन्वय कए ई देखाओल अछि जे शिवसिंह-नामबला

गीत सबमे जतहु माधव ओ राधाक नाम अछि ततहु कवि हुनका नायक ओ नायिकाक Type क रूपमे, आदर्श जकाँ, देखैत छथि, भक्तिभावसँ नहि। गीत-संख्या १६४मे नायिका विलाप करैत छथि जे "सखि हे कतहु न देखिअ मधाई" ओ भनितामे विद्यापति हुनका आश्वासन दैत छथिन्ह जे "लखिमा-देविपति पुरहि मनोरथ आबहि शिवसिंह राजा"। गीतसंख्या १७५ मे विरहिणी नायिकाक मनोरथ जे जखन आओब हरि रहब चरन गहि चान्दे पुजब अरविन्दा। कुसुम सेज भलि करब सुरत केलि दुहु मन होएत सानन्दा। इत्यादिक अन्तमे ओकरा आश्वासन दैत कविक उक्ति भनितामे द्रष्टव्य थिक जे

भनहि विद्यापति सुन वर जउवति अछ तोकें जिवन अधारे।
राजा शिवसिंह रूपनराएन एकादस - अवतारे।।

गीतसंख्या १७७ मे

"माधव कठिन - ह्रदय परवासी
तुअ पेयसि मोयँ देखलि वियोगिनि" इत्यादि

सखी नायकसँ नायिकाक विरहावस्थाक करुण वर्णन कए अन्तमे कहैत अछि जे

"राजा शिवसिंह रूपनराएन करथु विरह उपचारे"।।

एहि गीत सबमे मधाइ, हरि वा माधवसँ परमात्मा तँ नहिए अभिप्रेत छथि, साधारण नायकक type "प्रतिनिधि" सेहो नहि, प्रत्युत अभिप्रेत छथि स्पष्टतः राजा शिवसिंह जनिका हेतु "एकादश अवतारा" विशेषतः विचारणीय थिक। अतएव श्रीमजुमदार साहेब एहि विषयक विचार तँ कएल निष्पक्ष भावसँ, वैज्ञानिक रीतिसँ, परन्तु निष्कर्ष हुनक आंशिके सत्य प्रकट भेल, पूर्ण सत्य धरि की तँ ओ नहि गेलाह अथवा वैष्णव सिद्धान्तक संस्कारक प्रभावसँ से कण्ठतः स्वीकार नहि कएलैन्हि।

मिथिलाक संस्कृति ओ परम्परामे विद्यापतिक श्रृङ्गारक गीत कहिओ भक्ति-भावसँ नहि देखल गेल। मधुर रसक कल्पनासँ मिथिलाकें कहिओ परिचय नहि। मिथिलामे विद्यापतिक श्रृङ्गारक गीत विशुद्ध
श्रृङ्गाररसक गीत बुझल जाइत छल ओ एखनहु बुझल जाइत अछि। गीतमे राधा ओ कृष्णक लीलाक वर्णन अछि तें एकर रसमे कोनो अन्तर नहि बुझल गेल वा मानल गेल। गाथा-सप्तशती पर्यन्तमे (काव्यमाला ४४७) "कान्ह"क प्रयोग साधारण नायकक हेतु भेल-अछि ओ मिथिलहिमे नहि बङ्गालहुमे जे लोकगीत प्रचलित अछि ताहिमे केओ रमणी अपन रसिक स्वामीकें कान्ह, मधाई प्रभृति शब्दें उल्लेख करैत अछि। एहि परम्परागत संस्कारक पुष्टि हमरा विद्यापतिक गीतसबसँ, विशेषतः हुनक गीतक भनितासँ होइत रहल अछि, ओ तें अपन सम्पादित पुरुष-परीक्षाक भूमिकामे हम एहि कथाक प्रतिपादन कएने छी जे विद्यापतिक कुष्ण ओ राधाकें परमात्मा ओ जीवात्मा तँ नहिए बुझबाक थिक; प्रत्युत हमरा तँ इएह प्रतीत होइत अछि जे विद्यापति कृष्ण ओ राधाक रूप ओ लीलाक व्याजें शिवसिंह ओ लखिमाक रूप ओ लीलाक वर्णन कएने छथि, विद्यापतिक कान्ह थिकथिन्ह शिवसिंह ओ राधा थिकथिन्ह लखिमा। हम बुझैत छी जे एहि प्रसङ्ग हमर जे दृष्टि अछि से ओएह जे श्रीमजुमदार साहेबक छैन्हि; भेद एतबे जे हम निस्संकोच पूर्ण सत्यक प्रतिपादन कएल अछि परन्तु श्रीमजुमदार साहेब जेना सशङ्क

रहथि, गेलाह अछि तँ सत्यक दिशामे अवश्य परन्तु पूर्ण सत्य प्रकाश नहि कएल।

परन्तु हमर सम्पादित पुरुषपरीक्षाक भूमिकाक समालोचनामे श्रद्धेय श्रीमजुमदार साहेब हमर एही कथाक सङ्ग अपन वैमत्य प्रकट कएल अछि। श्रीमजुमदार साहेब बड़ पैघ विद्वान छथि, इतिहास विचक्षण छथि ओ विद्यापतिक प्रसङ्ग हुनक पाण्डित्य देशमे ककरहुसँ न्यून नहि कहल जाए सकैत अछि, अतएव हमरा अत्यन्त आश्चर्य अछि जे हुनक सदृश निष्पक्ष विचारक हमर ओहि उक्तिक सङ्ग अपन वैमत्य प्रकट कएलैन्हि अछि जाहि हेतु हमरा प्रचुर प्रमाण अछि ततवे नहि, किन्तु जाहि प्रसङ्ग हमरा सबसँ बेशी बल स्वयं श्रीमजुमदार साहेबक विचारसँ भेटल छल। तें हम एहि विषयक पुनर्विचारमे प्रवृत्त भेल छी ओ एहिमे हमर विचारसरणि ओएह रहत जे श्रीमजुमदार साहेबक रहलैन्हि अछि तथा आधार रहत श्रीमजुमदार साहेबहिक संगृहीत ओ सम्पादित विद्यापतिक गीतावली।

एहि संग्रहमे विद्यापतिक रचित कहि गोट हजारेक गीत अछि जाहिमे प्रायः आधा भनिता-रहित अछि। नेपालक पोथीक लेखक महोदय तँ भनिताक महत्त्व बुझबे नहि कएलथिन्ह ओ अन्तमे भनइ विद्यापतीत्यादि लिखि भनिताक अध्ययनक मार्गे अवरुद्ध कए देल। हमरा ई विश्वास नहि होइत अछि जे विद्यापतिक कोनो गीत भनिता-विहीन छल, ई केवल लेखकक अनभिज्ञता ओ अपाटव सूचित करैत अछि जे गीतमे भनिताक पदकें निष्प्रयोजन बूजि ओकरा छोड़ि देल गेल। तथापि एहि गोट हजारेक गीतमे दू सएसँ किछुए अधिक गीत अछि जाहिमे भनितामे शिवसिंहक नाम अछि। एहिमे एक सए सत्ताइस गोट गीतमे शिवसिहंक सङ्ग-सङ्ग लखिमाक नाम सेहो अछि तथा सात गोट गीतमे शिवसिंहक सङ्ग-सङ्ग हुनक पाँचो अन्यान्य स्त्री, मधुमति (१८) सुषमा सोरम (९५) रूपिनि (१६६) ओ मोदवती (१६९)क नाम अछि जाहिमे सुषमाक नामक गीत तीनि गोट (५१, १०२, २०५) अछि ओ चारिम (१४८) मे सुषमाक सङ्ग लखिमाक नाम सेहो अछि। एकर प्रामाणिकता एहीसँ सिद्ध अछि जे पञ्चीमे सेहो शिवसिंहक छओ गोट विवाह उल्लिखित अछि ओ एहि छबो महादेवीक परिचय उपलब्ध अछि।

ई हमर कहबाक तात्पर्य ने पहिने छल ने एखनहु अछि जे विद्यापतिक सब गीतक भनिता साभिप्राये अछि अथवा शिवसिंह नामबला सब गीतमे हुनकामे कृष्णत्वक आरोप अछि। तकर तँ प्रयोजनो नहि अछि। एकहु दु ठाम विद्यापति यदि स्पष्ट शब्दें शिवसिंहकें कृष्ण कहल अछि अथवा मानल अछि तँ ई कथा सिद्ध भए गेल। ओ से विद्यापति एक दू ठाम नहि अनेक ठाम, अनेक प्रकारें, अनेक भङ्गिमासँ कहल अछि। केवल कान्ह वा माधव, कन्हाइ वा मधाइ प्रभृति शब्दक प्रयोगहिसँ हम एकर आरोप नहि मानि लेब, कारण, जे कथा हम पूर्वहुँ कहल अछि केओ नायिका अपन ह्रदयङ्गम स्वामीकें अपन "कान्ह" कहैत अछि, सब रमणीकें अपन रसिक प्राणेश्वर कृष्णाहिक अवतार होइत छथिन्ह। हमरा तँ स्पष्ट शब्दें शिवसिंहमे कृष्णाक आरोप चाही ओ तकर दृष्टान्त हम एहिठाम श्रीमजुमदार साहेबक संस्करणसँ उपस्थित करैत छी।

सबसँ पूर्व शिवसिंहक रूप-सौन्दर्यक वर्णन देखल जाए। शिवसिंह

तीनि भुवन महि अइसन दोसर नहि (५०)
रूपे अभिमत कुसुमसायक (९२)
पुहविहि अवतरु नव पँचवाने (१२७)
परतख पँचवाने (१३९)
जनि ऊगल नवचन्द (११३)
मेदिनि मदन समाने (१५१) इत्यादि शब्दें वर्णित छथि। हुनक रसिकताक वर्णन अछि :-
रतन सनि लखिमा कन्त। सकल कलारस जे गुनमन्त (४८)
सकल कला अवलम्ब (१०४)
रायनि मह रसमन्ता (१०९)
राय रसिक (१२२)
केलि कलपतरु सुपुरुष अवतरु नागर कुरुवर रतने (१८५)
रस आधार (९३)
रसवन्ता गुणानिवास (१२७) इत्यादि।

"सिंह सम शिवसिंह भूपति" (९) सँ हुनक शौर्यक वर्णन कए हुनक वदान्यताक कीर्तन कएल गेल अछि यथा

महोदार (२०)
सकल जन सुजन गति (१११)
सकल अभिमत सिद्धिदायक (९३) इत्यादि।

ताहि सङ्ग हिनक पिताक नामक कीर्त्तन--

देवसिंहनरेन्द्रनन्दन (८)
गरुड़नराएननन्दन (५२),

हिनक छबो पत्नीक उल्लेख, तिथिक उल्लेखक सङ्ग हिनक पिताक मृत्यु ओ हिनक सिंहासनाधिरोहणक वर्णन (८), हिनक विजयक वर्णन (९) इत्यादि सब कथाकें मिलाए शिवसिंहक व्यक्तित्वक एक गोट सुन्दर चित्र अङ्कित भए जाइत अछि। ताहि सङ्ग हिनक शरीरक श्याम वर्ण अनेक ठाम अनेक रूपें कहल अछि, यथा,

राजा शिवसिंह रूपनराएन साम सुन्दर काय (३४)
सपन देखल हम शिवसिंह भूप
बतिस वरस पर सामर रूप (९२०)
जकरा पुरुषपरीक्षमे "चारुपाथोदनील", सजलजलदवर्णसुन्दर, कहल गेल अछि।

एहिसँ स्पष्ट अछि जे शिवसिंह श्यामवर्णक सुन्दर कान्तिक नवयुवक छलाह जनिक रूप मनोमोहक छल अतएव जखन हुनका रसिकशिरोमणि कहबाक भेलैन्हि तखन विद्यापति एहि वर्णसाम्यसँ बलित कहबाक भए हुनका श्रृङ्गर-रसक अधिष्ठातृ देवता वृन्दावन-विहारी कृष्णहिक अवतार कहि देल। शिवसिंहकें ओ कहल अछि

परतख देव (१८०)
कान्हरूप सिरि शिवसिंह (७७)
अभिनव कान्ह (१०१)

अभिनव नागर रूपे मुरारि (९०);

जनिका केवल ओएह टा नहि समस्त संसार हरिक सदृश बुझए "हरि सरीसे जगत जानिअ" (४१) ओ तें विद्यापति वारंवार हुनका "एकादस अवतारा" (८९, १७५, १९७) कहि कहि अपन भक्ति प्रदर्शित करैत छथि तथा हुनक रसिकता, श्रृङ्गार प्रवणता, कामकला-कुशलता व्यञ्जित करैत छथि। ई सब ततेक स्पष्ट अछि, व्यक्त अछि जे एहि प्रसङ्ग आओर किछु कहब व्यर्थ।

तथापि एक गोट गीत आओर विचारणीय थिक। गीत संख्या ३५ मे केओ रमणी अपन स्वप्नक समाचार अपना सखीसँ कहैत अछि।

हरि हरि अनतए जनु परचार।
सपन मोए देखल नन्दकुमार।।

परञ्च भनितामे विद्यपति ओहि नागरीकें बुझबैत कहैत छथिन्ह जे
.....अरे वर जउवति जानल सकल भरमे।
शिवसिंह राय तोरा मन जागल कान्ह-कान्ह करसि भरमे।।
आओर ई वरयुवती स्वप्नमे जे स्वरूप देखल (जकरा ओ नन्दकुमार बुझलक) तकर वर्णन अछि--

नील कलेवर पीत वसन धर चन्दनतिलक धवला।
सामर मेघ सौदामिनि मण्डित तथिहि उदित शशिकला।।

ओहि स्वरूपकें वरयुवती नन्दकुमार मानल से ओकर भ्रम छल। श्यामवर्ण, पीताम्बर, श्वेतचन्दनतिलक-त्रिपुण्डलसित भाल ओ स्वरूप राजा शिवसिंहक छल। केहन मार्मिक रूपसँ भ्रान्ति प्रदर्शित अछि, केहन चमत्कारक व्यङ्ग्य स्फुट होइत अछि से सहृदयसंवेद्य अछि, कहबाक प्रयोजन नहि।

एकर पुष्टि पुरुष-परीक्षासँ सेहो होइत अछि। ओहिमे शिवसिंह वीर लोकनिमे मान्य, सुधी लोकनिमे वरेण्य, विद्वान् लोकनिमे अग्रविलेखनीय कहि वर्णित छथि जाहिसँ "वीरः सुधीः सविद्यश्च" ई जे पुरुषक लक्षण एहि ग्रन्थमे प्रतिपादित अछि ताहि तीनूक प्राशस्त्य हिनकामे कहल अछि तथा हिनक शौर्यक प्रसङ्ग कहल अछि जे गौड़ेश्वरक सङ्ग युद्धमे ओ से यश अर्जित कएल जे चारू दिशि कुन्दकुसुम सदृश शुभ्र आलोकित छल। परन्तु सबसँ महत्त्वपूर्ण अछि ओहि ग्रन्थक तृतीय परिच्छेदक अन्तमे उपलब्ध ओ श्लोक जकरा ग्रन्थसँ कोनो सम्बन्ध नहि, छैक, केवल शिवसिंहक गुणकीर्तन थिक :-

लक्ष्मीपती सर्वलोकाभिरामौ चन्द्रननौ चारुपाथोदनीलौ।
द्वौ पुरुषौ लक्षणौस्तैरुपेतौ नारायणो रूपनारायणो वा।।

एकर प्रथम दुहु चारणमे चारि गोट पद अछि जे चारि गोट लक्षण थिक ओ श्लोकक

उत्तरार्धमे कहल अछि जे एहि चारू लक्षणसँ युक्त दुइए गोट पुरुष छथि, एक तँ पुरुषोत्तम नारायण ओ दोसर शिवसिंह रूपनारायण। चारू गोट लक्षण श्लेषसँ युक्त अछि जे दुहूमे चरितार्थ होइत अछि। यथा नारायण छथि लक्ष्मीक पति ओ शिवसिंह 'लखिमादेइरमाने" वारंवार वर्णित छथि। दुहू सब लोकमे अथवा सब लोकक हेतु सुन्दर छथि
जे कथा गीतमे "परतख देव" वा "परतख नव पँचवाने" वा "तीनि भुवन महि अइसन दोसर नहि" शब्दें कहल अछि। चन्द्रमाक सदृश लोकलोचनाह्लादकर दुहूक मुख अछि जे कथा गीतमे "जनि ऊगल नव चन्द" शब्दें कहल अछि अथवा जे कथा दोसर गीतमे ऊपर प्रदर्शित अछि, शुभ्रत्रिपुण्डक उपमा चन्द्रमासँ, नवचन्द्रसँ देल गेल अछि। तथा घनश्याम तँ नारायणक नामे अन्वर्थ थिकैन्हि ओ शिवसिंहक "सामर रूप" "साम सुन्दर काय" एहिसँ अभिव्यक्त अछि। अतएव पुरुष-परीक्षाक एहि श्लोकसँ ओही कथाक पुष्टि होइत अछि जे भनितामे "हरि सरीसे जगत जानिअ" "अभिनव नागर रूपें मुरारि" "अभिनव कान्ह" अथवा "एकादश अवतारा" इत्यादि शब्दें कहल अछि। शिवसिंहक रसिकताक प्रसङ्ग, तहिना, पुरुष-परीक्षाक विदग्धकथामे विक्रमादित्यक वैदग्ध्यक कथा कहि अन्तमे विद्यापति कहैत छथि जे "साम्प्रतमपि"--एखनहु, कलावती कविता अथवा कलावती कामिनीक वेत्ता राजा शिवसिंह छथि--"तां वेत्ति राजा शिवसिंहदेवः"।

एहि कथाक पुष्टि कीर्त्तिपताकासँ सेहो होइत तथा ओहिसँ सम्भवतः ई कथा निर्विवाद सिद्ध भए जाइत, परन्तु कीर्त्तिपताका जाहि रूपमे उपलब्ध अछि ताहिसँ कोनो प्रयोजन सिद्ध नहि भए सकैत अछि। हमरा जे कीर्त्तिपताका उपलब्ध अछि तकर श्रृंङ्गर भागमे एक गोट श्लोक जे हमरा सम्पूर्ण पढ़ल भेल अछि तकर आशय अछि जे रामावतारमे भगवानकें सीता-विश्लोषक कष्ट भोगए पड़लैन्हि तें कृष्णावतारमे भगवान श्रृङ्गारक मूर्त्ति भए अवतीर्ण भेलाह। से जेहने द्वापरमे भगवान् कृष्ण, तेहने सम्प्रति अहाँ छी। सत्ये

संसारे भोगसारे स्फुटमवनिभुजां श्रीफलं वा किमन्यत्।

एहि श्लोकक "साम्प्रतं तादृशस्त्वम्" मे "त्वं" सँ ककर अभिप्राय से तँ बुझल नहि होइत अछि--जे पाठ उपलब्ध अछि ताहिसँ शिवसिंहक धरि नहि--परन्तु एतबा तँ स्पष्टे अछि जे रसिक राजाकें कृष्णाक अवतार कहब विद्यापतिक हेतु कोनो अभिनव कथा नहि भेल। तें अन्यथा उपलब्ध-प्रमाणक बल पर कहि सकैत छी जे स्वरूपतः, स्वभावतः, चरित्रतः, शिवसिंहकें कृष्णक अवतार मानि लेब कनेको अत्युक्ति नहि भेल।

एहि प्रसङ्ग ई शङ्का नहि कर्त्तव्य थिक जे नररूप शिवसिंहकें नारायणक सदृश कहब, हुनका भगवानक एगारहम अवतार मानि स्तुति करब अनुचित थिक, मिथ्या-स्तुति थिक, धार्मिक किंवा नैतिक दृष्टिसँ धृष्टता थिक। शिवसिंह साधारण मनुष्य तँ छलाह नहि, ओ राजा छलाह ओ मनु कहैत छथि जे "महती देवता होषा नररूपेण तिष्ठति"। स्वयं भगवान् गीतामे कहने छथि जे :

यद्यत् विभूतिमत् सत्त्वं श्रीमदूर्जितमेव वा।
तत्तदेवावगच्छ त्वं मम तेजोंशसम्भवम्।।

राजा शिवसिंह निश्चय विभूतिमान् छलाह, श्रीमान् छलाह, ऊर्जिततम छलाह। हुनका "प्रत्यक्ष देव" कहब आर्यजातिक राजत्व-भावनाक अनुकूल बुझबाक चाही, प्रतिकूल तँ कहिओ नहि, विरुद्ध तँ ओ नहिए भेल। ओ तखन एहि "केलि-कल्पतरु" "रायनि मह रसमन्ता" "सकल कला अवलम्ब" "पुहुबी नव पँचवाने" शिवसिंहकें यदि कोनहु देवताक अवतार कहबाक भेल, हुनक चरितक समता कोनहु देवताक लीलासँ देखएबाक भेल तँ कृष्णासँ विशेष सङ्गत दोसर कोन देवता भए सकैत छलाह।

अतएव श्रीमजुमदार साहेब हमर एहि कथासँ सहमत नहि होथु परन्तु हम तँ जतेक एहि विषयक विचार करैत छी ततेक हमर विश्वास दृढ़ भेल जाइत अछि जे विद्यापति केवल अपन गीतहिटामे नहि, अन्यत्रहु शिवसिंहकें कृष्णाक अवतार मानैत छलाह। शौर्यमे, वीर्यमे, चातुर्यमे, सौन्दर्यमे, वर्णमे, रसिकतामे,
कामिनीमनोमोहकतामे, कामकेलिप्रवणतामे, श्रृङ्गारिकतामे, अनेकधा, विद्यापति दुहूक समता प्रदर्शित कएने छथि। ई सत्य जे सब गीतमे, सब गीतक भनितामे, ई नहि भेटत; शिवसिंह-नामबला गीतहुमे सब ठाम एकर
उल्लेख नहि अछि। परन्तु तकर प्रयोजनो नहि छैक। एकहु ठाम यदि एहि कथाक स्पष्ट उल्लेख अछि तँ कविक भाव व्यक्त भए गेल ओ तखन अन्यत्र तँ व्यङ्ग्यरूपें ओकर उपलब्धि सुगम भए जाएत। तें हम कहने छी ओ पुनः कहैत छी जे विद्यापतिक श्रृङ्गारक गीतमे जतए शिवसिंहक नाम छैन्हि ततए यदि माधवक उल्लेख अछिओ तँ माधवसँ हमरा शिवसिंहक प्रतीति होइत अछि। तथा ई सर्वथा काल्पनिक नहि अछि किन्तु स्वयं विद्यापतिक अनेको गीतक भनितामे, कए गोट गीतहुमे, ई कथा स्फुट अछि। विद्यापतिक शिवसिंह वस्तुतः रूपनारायण छलाह तथा विद्यापति हुनका नर-रूपमे नहि, नारायणक रूपमे प्रत्यक्ष-देव मानैत छलाह, प्रत्यक्ष-देव आनन्दकन्द कृष्णक एकादश अवतार कहि हुनका अमर कए गेल छथि।

४
गोविन्ददास झा

मैथिली-साहित्यक इतिहासमे जे कतोक समस्या अछि जकर समुचित समाधान केवल मैथिली-साहित्यहिक टा गौरव-ख्यापनक हेतु नहि अपितु इतिहासक सत्यक सबहुँ जिज्ञासु व्यक्तिक सन्तोषार्थ आवश्यक अछि, ओहिमे सबसँ जटिल अछि गोविन्ददासझाक व्यक्तित्वक प्रश्न। हमरालोकनि मानैत अएलहुँ अछि, एखनहु बुझैत छी, जे गोविन्ददासझा रैआम ग्रामक वासी छलाह तथा कात्यायनगोत्रक कुजौली-मूलक भखरौली-शाखाक श्रोत्रिय ब्राह्मण छलाह। हुनक प्रपितामह महामहोपाध्याय शुचिकर उपाध्याय मिथिलाराज्योपार्जक महामहोपाध्याय महेशठाकुरक विद्यागुरु ओ सम्बन्धें मौसा छलथिन्ह। गोविन्ददासझा स्वयं महामहोपाध्याय छलाह ओ अपन छोट भाए रामदासझाक विद्या-गुरु छलाह जे सरस रामक उपनामसँ मिथिलेश

महाराज सुन्दरठाकुरक प्रीत्यर्थ आनन्दविजय नामक मैथिली-गीत-मिश्रित संस्कृत-नाटकक रचना कएने छथि, महामहोपाध्याय छलाह। सरस रामक शब्दमे गोविन्ददासझाक गर्जनसँ सभ बादी चुप भए जाथि जाहिसँ सूचित होइत अछि जे ई बड़का शास्त्रार्थी नैयायिक छलाह। कवीश्वर चन्दाझा हिनक काव्यकृतिक नाम "कृष्णलीला" कहैत छथि। हिनका दू गोट विवाह छल ओ यद्यपि हिनका पुमपत्य नहि छलैन्हि मुदा हिनक एक गोट कन्याक विवाह महाराज महेशठाकुरक प्रपौत्र, महाराज शुभङ्करठाकुरक पौत्र, रामठाकुरक बालक, रघुनाथ ठाकुरसँ छल। हिनक समय अनुमानतः १५७० सँ १६४० ईशवीय धरि मानैत छी। गोविन्ददासझाक सबसँ जेठ भाए, गङ्कादासझा कवि छलाह तथा हुनक दु गोट काव्य, गड़गाभक्ति ओ गड़गाविलासक उल्लेक कवीश्वर चन्दाझा कएने छथि मुदा ने ओ दूहू काव्य ने आने कोनो हुनक रचना उपलब्ध अछि। गोविन्ददासझाक अव्यवहित छोट भाए हरिदासझा सेहो कवि छलाह तथा हुनक एक गोट गीत रागतरङ्गिणीमे भेटैत अछि।

परन्तु ई जे परिचय देल अछि से की ओही गोविन्ददासझाक थिक जे बङ्गालक वैष्णव महाकविमे अग्रगण्य छथि ओ जनिक गीतक एक गोट संग्रह एमहर गोविन्दगीतावलीक नामसँ श्रीमथुराप्रसादजी दीक्षित प्रकाशित कराओल अछि ओ दोसर संग्रह श्रृङ्गारभजनगीतावलीक नामसँ स्वर्गीय अमरनाथ बाबू सम्पादित कए हमर साहित्यपत्रमे छपाओल। दीक्षितजी अपन संग्रहक आधार अथवा मूलक प्रसङ्ग किछु नहि कहल अछि; अमरनाथ बाबू अपन संग्रह कबीश्वर चन्दाझाक हाथक लिखल संग्रहसँ अपना हाथें उतारिकें प्रकाशित कराओल अछि। कवीश्वरक संग्रहक आधार की से ओ कतहु सूचित नहि कएने छथि परञ्च कवीश्वरक परिचय जनिका ककरहु छैन्हि सबहुँ एकस्वरसँ स्वीकार करताह जे ओ तँ मिथिलाभूमिकें छाड़ि अन्यत्रसँ संग्रह नहि कएने होएताह, सबटा गीत हुनका मिथिलाहिमे भेटल होएतैन्हि। अपनरामायणक अन्तमे कवीश्वर जे मैथिल कविक सूची देने छथि ताहिमे गोविन्ददासझाक काव्यकृतिक नाम कृष्णलीला लिखल अछि। ओ कृष्णलीला इएह
गीतावली थिक अथवा एहिसँ भिन्न ओहि नामक दोसरो ग्रन्थ हुनका उपलब्ध भेल छलैन्हि अथवा जानल छलैन्हि तकर कोनो उल्लेख कतहु नहि भेटल अछि। एहि गीतावलीक विषय-वस्तुकें देखि सम्भव इएह बूझि पड़ैत अछि जे एही गीतावलीकें ओ कृष्णलीला कहने छथि। मुदा कवीश्वरकें ई गीतावली भलहि मिथिलहिमे भेटल होइन्ह किन्तु एमहर मिथिलादेशमे कवीश्वरक संग्रहसँ अन्यत्र गोविन्ददासक गीत कतहु नहि भेटैत अछि। कए सए कविक गीत मिथिलामे प्रचलित अछि परन्तु गोविन्ददासक एहि गीत सबमे एको गोट गीत कतहु नहि भेटल अछि। मिथिलाक गायक-समाजमे, विशेषतः स्त्रीगण मध्य, हजारो गीत प्रचलित अछि परन्तु गोविन्ददासक गीतक, प्रचार जेना मिथिलामे कतहु नहि हो। ओमहर, बङ्गालक वैष्णव-समाजमे गोविन्ददासक पद बड़ प्रसिद्ध अछि ओ विद्यापति एवं चण्डीदासक पश्चात् ओतए गोविन्ददासहिक यश प्रसृत अछि। बङ्गालक कीर्त्तनमण्डली सबमे हिनक पद अत्यन्त प्रसिद्ध अछि, बड़ लोकप्रिय अछि, तथा कीर्त्तनक गायक लोकनि जे हिनक पद गबैत छथि से अत्यन्त मधुर, अत्यन्त ललित, अत्यन्त सरस होइत अछि। मिथिलामे प्राचीन गीतक संग्रह तँ प्रकाशित बड़ थोड़ अछि परन्तु प्रायः प्रत्येक नीक परिवारमे एक गोट गीतक पोथी रहैत आएल अछि जाहिमे पुरान पुरान गीत सब स्त्रीगणकें सिखबाक हेतु लिखल रहैत अछि। हम स्वयं कए गोट एहन एहन पुरान गीतक पोथी देखल अछि परन्तु गोविन्ददासक एको गोट गीत हमरा कतहु

उपलब्ध नहि भेल अछि। सत्रहम शताब्दीमे लोचन अपन रागतरङ्गिणीमे बहुतो कविक गीत राग सबहिक उदाहरणमे उद्घृत कएने छथि परन्तु गोविन्ददासक गीत ओहूमे नहि अछि। गोविन्दक गीत भेटैत अछि परन्तु ई नाम तँ बड़ प्रसिद्ध अछि। नलचरित-कर्ता गोविन्द ठाकुर, काव्यप्रदीपकर्ता गोविन्दठाकुर, सोदरपुरिए गोविन्दमिश्र प्रभृति एहि नामक अनेको कवि भए गेल छथि ओ गोविन्द-भनिताबला गीत सब ओहिमे ककरो भए सकैत अछि। जेना रामदासझा गीतमे अपन उपमान राम लिखैत छथि तथा ओहिमे विशेषण जोड़ि दैत छथिन्ह सरस, तेना गोविन्ददास अपनाकें गोविन्द लिखैत छलाह तकर कोनो प्रमाण नहि अछि प्रत्युत एहि गीतावलीमे सर्वत्र दास-युक्ते गोविन्दक उल्लेख अछि। ओमहर बङ्गालमे एहि तीनि सए वर्षमे कोनो प्राचीन गीतक संग्रह नहि भेल अछि जाहिमे गोविन्ददासक पद प्रचुरतया नहि भेटए। फलतः बङ्गाली-लोकनि गोविन्ददासकें बङ्गाली मानैत छथि, हुनका वैष्णव महाजन बुझैत छथि, हुनक भाषाकें ब्रजबूली कहैत छथि, हुनका मैथिल नहि स्वीकार करैत छथि।

परन्तु भाषा एहि गीतावलीक थिक विशुद्ध मैथिली। ई कथा आब निर्विवाद सिद्ध भए गेल अछि जे चैतन्य-सम्प्रदायक वैष्णवलोकनिक साहित्यिक भाषा जे ब्रजबूलीक नामसँ परिचित अछि से केवल मैथिलीक अनुकरणमे एक गोट कृत्रिम भाषा थिक। विद्यापतिक गीतक तेहन प्रभाव चैतन्यदेव ओ हुनक शिष्यलोकनि पर भेल जे ओ लोकनि विद्यापतिक अनुकरणेमे गीतक रचना करए लगलाह जाहिमे विद्यापतिक भाव, रीति, शैली ओ छन्द आदिहिकटा अनुकरण नहि कएल गेल। से तँ विश्वक साहित्यमे ओनेको ठाम देखल गेल अछि, प्रसिद्ध वस्तु थिक। ओ लोकनि तँ विद्यापतिक भाषा समेतक अनुकरण कएल, तेहन मधुर, ललित, सरस विद्यापतिक पद छल। ओ एना भाषान्तरक अनुकरण असाधारण वस्तु भेल जकर दृष्टान्त विश्वक साहित्यमे तकलहु उत्तर प्रायः नहि भेटत। ई अनुकरण केहन व्यापक भेल तकर दृष्टान्त इएह पर्याप्त होएत जे विश्वकवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर पर्यन्त अपन पहिल कवि-कर्म विद्यापतिहिक गीतसँ अनुप्रमाणित भए, हुनकहि शैली पर, हुनकहि भाषाक अनुकरणमे कएल। परन्तु अनुकरण अनुकरणे थिक। अन्य-भाषा-भाषी कतहु भाषान्तरकें विनु सिखलें शुद्ध जकाँ प्रयोग कए सकए? फल भेल जे भाषान्तरभाषी कविलोकनि जखन विद्यापतिक अनुकरणमे मैथिलीमे रचना करए लगलाह तखन हुनक अपन जे भाषा छलैन्हि से विद्यापतिक भाषा मैथिलीक सङ्ग मिझराए गेलैन्हि ओ हुनक गीतक भाषा एक गोट अपूर्व भाषा भए गेल जकरा ने शुद्ध मैथिली कहि सकैत छी ने भाषान्तर, दुहूक सम्मिश्रणसँ एक गोट कृत्रिम भाषा भए गेल। चैतन्यदेवक वैष्णव धर्म क्रमशः समस्त उत्तर भारतमे पसरैत गेल। आसामक वैष्णव कवि तँ केवल गीतहिटामे नहि, नाटकहुमे मैथिलीक अनुकरण कएल ओ ताहि सबमे मैथिलीक सङ्ग सङ्ग असमिआ भाषा भिझराए गेल। तहिना उड़ीसाक कविलोकनि जे गीत रचलैन्हि
ताहिमे ओड़िआ भाषा मिश्रित भए गेल। ओ बङ्गाली वैष्णव कविलोकनिक गीतक भाषा बङ्गलामिश्रित मैथिली भए गेल। एहि सब गीतमे एक अंश, ओ से अंश प्रचुर अछि, मैथिली रहल, विशुद्ध मैथिली नहि परन्तु मैथिलीक अनुकरण मात्र जकरा हमरालोकनि अशुद्ध मैथिली कहब; ओ एक अंश रहल तत्तद्भाषाक। क्रमशः लोक इ बिसरि गेल जे ई भाषा मैथिलीक अनुकरण मात्र थिक। परन्तु भाषा तँ ओ छल तत्तद्देशक भाषासँ भिन्न, अभिनव, ओ जें एहि सब गीतमे व्रजभूमिमे कृष्णक लीलाक वर्णन अछि तें ई मिश्रित भाषा व्रजबूलीक नामसँ अभिहित होअए लागल। विद्यापतिक भाषाक अनुकरणसँ एहि कृत्रिम भाषाक सृष्टि भेल ई कथा विस्मृत

भए गेल। परन्तु कतबओ अनुकरण कएल गेल तथापि भाषा एनमेन विद्यापतिक भाषाक सदृश तँ भेल नहि। इएह कृत्रिम भाषा, अशुद्ध मिथिला-भाषा, भाषान्तरक सङ्ग मिश्रित मिथिला-भाषा, बङ्गालक वैष्णव सम्प्रदायक साहित्यिक भाषा भए गेल। परन्तु गोविन्ददासक भाषामे कृत्रिमताक कनेको भान नहि होइत अछि। एकरा विद्यापतिक भाषाक अनुकरण नहि, विद्यापतिक भाषा मैथिली सएह मानए पड़त ओ जे उचित थिक विद्यापतिक भाषामे जे कतोक प्राचीनताक लक्षण सब अछि से सब गोविन्ददासक भाषामे नहि अछि। स्वयं बङ्गाली विद्वान लोकनि गोविन्ददासक प्रसङ्ग स्वीकार करैत छथि जे हिनक भाषा एनमेन विद्यापतिक भाषाक अत्यन्त सदृश अछि। परन्तु स्मरण रहए जे अनुकरण कोनहुना कएल जाएत तँ ओ अनुकरणे रहत, ओहिमे कृत्रिमता अवश्ये आबि जाएत। शतावधि वा ताहूसँ अधिक वैष्णवलोकनि व्रजबूलीमे कविता कएने छथि परन्तु ई चमत्कार ओहि व्रजबूलीक कविगण मध्य केवल गोविन्ददासक भाषामे भेटत जे एहिमे बङ्गालक प्रभाव प्रायः नहि सन अछि। ओना तँ बङ्गीय-साहित्य-परिषद्सँ प्रकाशित वैष्णव महाजन-पदावलीक गोविन्दगीतावलीमे किछु एहन पाठभेद भेटैत अछि जाहिमे बङ्गलाक प्रभाव परिलक्षित होइत अछि जेना दीक्षितजीक गोविन्द-गीतावलीमे, हिन्दीक। परन्तु श्रृङ्गारभजनमे, कवीश्वरक संगृहीत पदावलीमे, तकर कोनो प्रभाव नहि अछि। भाषा हिनक विशुद्ध मैथिली थिक, मैथिलीक अनुकरण एकरा कथमपि नहि कहि सकैत छी।

मुदा गोविन्ददासक गीतक भाव-धारा मैथिल परम्पराक अनुसरण नहि करैत अछि। विद्यापतिसँ लएकें हर्षनाथ धरि मैथिली-गीतक जे परम्परा अछि ताहिमे जे गीत भक्तिक थिक से छोड़ि शेष सब गीत श्रृङ्गारक थिक। विद्यापतिक गीतमे अधिकमे तँ राधाकृष्णक नामो नहि अछि तथा जाहिमे नाम अछिओ ताहिमे कृष्ण श्रृङ्गाररसक अधिष्ठातृ देवता-स्वरूप छथि, परमात्माक रूपमे नहि छथि ओ तें ओहि गीत सबकें भक्तिक उद्रेक नहि, श्रृङ्गारक अभिव्यक्ति कहैत अएलहुँ अछि, बुझैत अएलहुँ अछि। विद्यापतिक रचित भक्तिहुक गीत अछि यथा नचारी, गङ्गाक, गोसाञुनिक; हुनक रचित शान्त-रसक गीत सब अछि, हुनक रचित विष्णुपद सेहो अछि ! परन्तु एहि गीतसबहिक शैली ओहि जातिक गीतक शैलीसँ सर्वथा भिन्न अचि जाहिमे राधाकृष्णक केलिलीलाक वर्णन अछि जकरा चैतन्यमहाप्रभु ओ हुनक शिष्य लोकनि मधुररसक काव्य मानैत आएल छथि परन्तु जकरा हमरा लोकनि विशुद्ध श्रृङ्गाररसक गीत मानैत आएल छी। मिथिलामे विद्यापतिक अनुकरण एहि शताब्दीक प्रारम्भ धरि होइत आएल ओ एहि सम्प्रदायक अन्तिम महाकवि छलाह हर्षनाथझा। एहि सम्प्रदायमे सएसँ कम कवि नहि होएताह ओ हुनका लोकनिक रचल हजारो गीत उपलब्ध अछि परन्तु ओहि गीतसँ कहिओ ककरहु भक्तिक भावना नहि भेलैक अछि। कविलोकनि ओकरा श्रृङ्गाररसक बूझिकें रचल; लोक ओकरा। श्रृङ्गाररसक गीत बुझलक ओ बुझैत अछि। परन्तु गोविन्ददासक गीत एहि सबसँ भिन्न अछि। गोविन्ददासक गीत सर्वथा भक्तिमूलक प्रतीत होइत अछि ओ श्रृङ्गार एहिमे केवल आवरणक काज करैत अछि। एक तँ विनु आत्मसमर्पणक भावना ऐहिक नहि पारमार्थिक प्रतीत होइत अछि। हुनक कृष्णा "कुलवति युवति बरत भय भञ्जत" थिकथिन्ह। बहुतो गीत तँ शुद्ध भजन थिक। विद्यापतिक नखशिख-वर्णन ओ गोविन्ददासक स्वरूप-वर्णनक परस्पर तुलना कएला उत्तर दुहूक भावक भेद स्पष्ट भए जाइत अछि। गोविन्ददास विशुद्ध ओहि मधुर-रसक कविता रचल जकर प्रचार चैतन्यदेवक सम्प्रदायमे विद्यापतिक अनुकरणमे भेल। तँहि तँ साहित्यसम्राट् अमरनाथ बाबू गोविन्ददासझाक गीतावलीक नामकरण श्रृङ्गार भजन कएल।

एहि प्रसङ्ग विद्यापति ओ गोविन्ददासक गीतसबहिक भनिता सेहो भेद जनबैत अछि। गीतमे भनिता संस्कृतमे तँ जयदेव चलओलैन्हि परन्तु भाषा-कवि लोकनि बहुत दिन पूर्वहिसँ एकर प्रयोग करैत आएल छथि ओ सहजपन्थी सिद्धलोकनिक चर्यापदहुमे भनिताक पद भेटैत अछि। एमहर आबिकें तँ भनिताक प्रयोग एकटा व्यवहार भए गेल अछि तथा एकर प्रयोग कविक अपन नाम, उपाधि ओ ठाम ठाम कविक आश्रयक नामोल्लेख मात्रमे पर्यवसित होइत गेल अछि; परन्तु विद्यापतिक गीतमे भनिता बहुधा सार्थक रहैत अछि ओ गोविन्ददासक गीतमे तँ प्रायः सर्वत्र भनिता सार्थक अछि। भनितामे कवि बहुधा अपन उक्ति व्यक्त करैत छथि। गीत ककरो उक्ति हो--नायकक, नायिकाक अथवा सखीक--परन्तु भनिताक पद गीतक भावक प्रति कविक अपन ह्रदयक उद्‌गार-स्वरूप रहैत अछि। विद्यापति भनितामे बराबरि ई जनबैत रहैत छथि जे हुनक गीत श्रृङ्गार-रसक काव्य थिक, "रस सिङ्गार सरस कवि गाओल" इत्यादि। विद्यापतिक अन्तरात्मा जेना मनक उमंगमे गाबि उठैत अछिष सुरत रसरंग संसार-सारा। शिवसिंहकें अपर कामदेव, अभिनव कुसुम-सायक अथवा श्रृङ्गार-रसक अधिष्ठातृ देवता कृष्णाक "एकादश अवतारा" प्रभृति कहि अनेक प्रकारसँ अपन कविताक उद्‌बोधनक संकेत करैत रहैत छथि। परन्तु गोविन्ददासक गीतक भनितामे से नहि भेटैत अछि। हुनक कोनहु भनितामे श्रृङ्गार-रसक नामो नहि अछि। अपनाकें ओ भगवान्‌क "नखमणि निछान" कहैत छथि तथा "गोविन्ददास ह्रदय मणि मन्दिर अविचल मुरति त्रिभंग" कहि अपन भक्त ह्रदयक परिचय दैत छथि। ओ वारंवार नाना प्रकारें नाना शब्दें अपनाकें भगवल्लीलाक साक्षी मात्र मानैत छथि। "गोविन्ददास प्रमाण", "गोविन्ददास एक साखि" "गोविन्ददास हेरि भेल भोर", "लुबुधल गोविन्ददास", "मुगुधल गोविन्ददास" "आनन्द निरखै गोविन्ददास", "हेरइत आनन्द गोविन्ददास", "गोविन्ददास ह्रदय अवधारल" प्रभृति उक्ति सबसँ स्पष्ट होइत अछि जे ओ अपनाकें कृष्णक केलिलीलाक द्रष्टा कहैत छथि ओ ओहि लीलाक मानसिक प्रत्यक्ष कए कए ओकर संकीर्तन करैत छथि, ओ अपनाकें धन्य बुझैत छथि। "गोविन्ददास गुण गाय", गोविन्ददास प्रशंस", "गोविन्ददास भरम दुरि गेल" इत्यादि शब्दें ओ अपन कविताक स्रोतक परिचय दैत छथि, अपन मनोभाव व्यक्त करैत छथि। स्पष्ट अछि जे कीर्तन जे थिक भगवानक नाम, गुण ओ लीलाक वर्णन, गोविन्ददासझाक कवितामे सएह टा अछि। कवीश्वर जे हिनक काव्यकृतिकें कृष्णलीला कहल अछि ताहूसँ इएह कथा पुष्ट होइत अछि। एहि सबमे श्रृङ्गाररस अङ्ग थिक, स्थायीभाव अछि भक्ति ओ कतहु कतहु तँ अद्‌भुत रसहुक निवेश अङ्गरूपें स्पष्ट होइत अछि। श्रृङ्गारमे उत्कट श्रृङ्गार कतहु नहि अछि ओ जेहो श्रृङ्गारक वर्णन अछि ताहूसँ पाठककें श्रृङ्गारक उद्‌बोधन नहि होइत अछि, कारण, ई सब वर्णित अछि भगवानक, मनुष्यक नहि, ओ तें साधारणीकरण जे रसक धर्म थिकैक से एहिमे नहि होअए पबैत अछि। ई बङ्गलक वैष्णव सम्प्रदायक रीति थिकैक यद्यपि एकर प्रथम प्रयोग हमरा लोकनिकें श्रीमद्‌भगवतक दशम स्कन्धमे भेटैत अछि। एहि रूपक श्रृङ्गर-रसक नाम वैष्णव-साहित्यमे "मधुररस" कहल अछि। मिथिलाक जे प्राचीन परम्परा थिकैक जकर आरम्भमे हमरा लोकनिकें विद्यापतिक गीतमे भेटैत अछि से गोविन्ददासक कवितामे नहि भेटैत अछि प्रत्युत बङ्गाली लोकनि जे रस विद्यापति समेतक कवितामे पबैत छथि से गोविन्ददासक कवितामे प्रचुरतया भेटैत अछि, सएहटा भेटैत अछि।

एहि सङ्ग सङ्ग गोविन्ददासक गीतक भाषा सेहो किछु विचित्र अछि ! एहिमे कोनो सन्देह नहि जे ई भाषा थिक विशुद्ध मैथिली, विद्यापतिक गीतक भाषा; ओ विद्यापतिसँ जतबा ओ नवीन छथि ततबा भाषामे सेहो आधुनिकता अछि। परन्तु गोविन्ददासक गीतक अर्थ ठाम ठाम दुरूह अछि, कष्टसाध्य तँ प्रायः सर्वत्र अछि। काव्यमे जकरा प्रसाद गुण कहैत छिऐक से हिनक काव्यमे एकदम नहि रहैत अछि। अर्थक ई दुरूहता कए कारणें अछि, यथा, तद्भव शब्दक प्रचुरतया प्रयोग करब जाहिमे कतोक शब्द सर्वथा अभिनवरूपें तद्भव बनाओल गेल अछि; अर्थबोधक हेतु आवश्यक पद यथा क्रियापद तकरा ऊह्य छोड़ि देब; एकहि गीतमे कए व्यक्तिक उक्ति देब जाहिमे कोन अंश वा कतबा अंश ककर उक्ति तकर कोनो संकेत नहि रहब; भगवल्लीलाक घटना-विशेष अथवा स्थितिविशेषक वर्णन जे जनसाधारणकें बुझल नहि रहब; अपनहिसँ अर्थक अनुरूप ध्वनिक
शब्द बनाए ओकर प्रयोग करब इत्यादि। एहि कारणें गोविन्ददासक गीतक रसास्वादन ओहि प्रकारें नहि भए पबैत अछि जेना आन कविक गीतक रसास्वादन होइत अछि। वस्तुतः अर्थक वैमल्य गोविन्ददासकें जेना लक्ष्ये नहि रहैन्हि। ई कहब तँ परम अयुक्त होएत जे गोविन्ददासक गीतमे उत्तम काव्य नहि छैन्हि, ध्वनिक प्रधानता जे उत्तम काव्यक लक्षण थिक से गोविन्ददासक गीतमे बड़ विन्याससँ सन्निविष्ट अछि; अलङ्कारक चमत्कार जेहन गाविन्ददासक गीतमे अछि तेहन विद्यापति समेतमे नहि भेटैत अछि। विद्यापतिक कतेक गीत अवश्ये अपूर्व अछि। परन्तु गोविन्ददासक गीतक जँ अध्ययन करब, ओकर अर्थानुसन्धान करब, तँ प्रतीत होएत जेना ई सब वस्तु ओहिमे गौण रहए, मुख्य वस्तु गोविन्ददासक गीतमे लक्ष्य रहैन्हि जेना शब्दक विन्यास। गीत होइत अछि गाओल जएबाक हेतु ओ गीतक धर्म थिक श्रुतिमाधुर्य, कानक तुप्ति। गोविन्ददासक गीतमे पदक विन्यास शब्दक अर्थहि टाकें दृष्टिमे राखिकें नहि कएल गेल अछि, प्रत्युत शब्दक जे ध्वनि कानमे पड़त, कर्णगोचर होएत, तकरहु दृष्टिमे राखि कएल गेल अछि। फलतः गोविन्ददासक सब गीत कर्णसुखावह अछि, अत्यन्त मधुर अछि, विनु अर्थक अनुसन्धान कएनहु केवल सुनलहिटासँ मनकें मुग्ध कए दैत अछि। तें श्रुतिमाधुर्यक हेतु जँ गोविन्ददासकें शब्दकें तोड़हु पड़लैन्हि, अर्थबोधक निमित्त आवश्यक पदक समावेश नहिओ भए सकलैन्हि, अपनहि शब्दकें बनबहु पड़लैन्हि, अप्रसिद्ध शब्दक प्रयोग करहु पड़लैन्हि तथापि ओ अर्थक विमलताक निमित्त श्रुतिमाधुर्यकें नहि त्यागल। श्रुतिमाधुर्यक हेतु प्रसाद गुणक परित्याग करबामे हुनका कोनो आपत्ति नहि बूझि पड़लैन्हि ! स्पष्ट अछि जे गोविन्ददास अपन गीतक रचना कीर्तनमण्डलीमे गाओल जएबाक हेतु कएल, काव्य जकाँ पढ़ल जएबाक निमित्त ओ गीत नहि रचल। तें शब्दक आडम्बरमे, विन्यासमे, चमत्कारमे अर्थ अधिक ठाम ओझाए गेल छैन्हि। दृष्टान्तक हेतु ओहि गीत सबकें देखि सकैत छी जाहिमे प्रायः प्रत्येक पद एकहि वर्णसँ आरम्भ भेल अछि। काव्यक दृष्टिसँ ई नेनपन सन लगैत अछि। एकहि वर्णसँ आरम्भ कए पदक विन्यास कएलासँ समस्त गीतमे अर्थक निर्वाह करब असम्भव सन अछि। परन्तु आश्चर्य तँ ई जे कठिन तँ अवश्ये अछि, दुरूह समेत अछि परन्तु कष्ट कएकें, माथ दुखाएकें, जखन गोविन्ददासक गीतक अर्थ लगाएब तखन ओ अर्थ एहन सुन्दर प्रतीत होएत जे मन मुग्ध भए जाएत। तँहि तँ जे कथा प्रसिद्ध टीकाकार मल्लिनाथ महाकवि भारविक प्रसङ्गमे कहल अछि सएह कथा हमरा गोविन्ददासहुक प्रसङ्ग समीचीन जँचैत अछि जे गोविन्ददासक गीत नारिकेरक

फलक सदृश अछि जकर मधुर रसक आस्वादनक हेतु नारिकेरक खोइँचाकें कष्टसँ छोड़बए पड़त, ओकर फलकें फोड़ए पड़त। एहिमे सन्देह नहि जे अर्थक दुरूहता भारवि ओ गोविन्ददासमे दू कारणें अछि; भारविमे अर्थक गौरव अछि, व्यङ्ग्यक गम्भीरता अछि; गोविन्ददासमे शब्दक विन्यास अछि, शब्दक आडम्बरमे अर्थक प्रसादगुण विलीन अछि। विचारला उत्तर एहन सन प्रतीत होइत अछि जे ई गीत सब अपरिपक्कावस्थाक रचना हो जखन कविकें प्रतिभा तँ पूर्ण छलैन्हि परन्तु रचनाक अभ्यास ओहन परिपक्क नहि भेल छलैन्हि। अतएव गोविन्ददासक गीतक पदविन्यास हम किछु विचित्र कहल अछि ओ शब्दालङ्कारक प्राचुर्य ओ प्राशस्त्यसँ स्पष्ट बूझि पड़ैत अछि जे ओ गीतमे गेयधर्मताकें प्रमुखता दए ओकरा श्रुतिमधुर बनाओल, हुनक सब गीत कीर्तनमणड्लीमे झालि ओ मृदङ्गक सङ्ग गाओल जएबाक हेतु रचल गेल।

एहि संक्षिप्त विवरणसँ गोविन्ददासक प्रसङ्ग परस्पर-विरुद्ध प्रमाणापुञ्जक प्रतिपादन होइत अछि। मिथिलामे गोविन्ददासझा नामक महाकवि प्रसिद्ध छथि परन्तु हुनक गीतक प्रचार बङ्गालमे अछि। भाषा हुनक मिथिलाक भाषा थिक परन्तु हुनक गीत मिथिलाक परम्पराक नहि, बङ्गालक वैष्णव सम्प्रदायक जे परम्परा छैक तकर अनुसरण करैत अछि। हुनक गीतमे आवरण अछि श्रृङ्गारक परन्तु थिक ओ कीर्तन। फलतः गोविन्ददासकें बङ्गली लोकनि बड़गली कहैत छथि तथा हुनक सब परिचय बङ्गलहिमे दैत छथि। परन्तु बङ्गलमे एक दू नहि, छओ गोट कबि गोविन्ददास नामक भए गेल छथि ओ ई कहब बङ्गलिओ विद्वानक हेतु कठिन अछि जे कोन गीत कोन गोविन्ददासक थिक। परन्तु एक गोट गोविन्ददासकें ओहो लोकनि सबसँ विशिष्ट मानैत छथि जनिक भाषा अन्य गोविन्ददासक भाषासँ भिन्न अछि ओ से विद्यापतिक भाषाक एतेक अनुरूप कोना भेल तकर आश्चर्य हुनकहु लोकनिकें कम नहि छैन्हि। अतएव स्पष्ट अछि जे अन्यान्य गोविन्ददास जनिक
भाषा विद्यापतिक भाषाक अनुकरण व्रजबूली थिक जे सब बङ्गली थिकाह परन्तु जे गोविन्ददास विशुद्ध मैथिलीमे रचल से मैथिल थिकाह। परन्तु ई हमरा लोकनिक विश्वास थिक ओ एतबहिसँ तँ ई कथा सिद्ध नहि होइत अछि जे गोविन्ददास जनिक मधुर-रसक पद बङ्गलमे एतेक प्रचलित अछि से मैथिल थिकाह।

एहि प्रसङ्ग ई स्मरण रहए जे आइसँ साठि-सत्तरि वर्ष पूर्व विद्यापति समेत बङ्गली लोकनिक दृष्टिमे बङ्गली बुझल जाइत छलाह ओ गोविन्ददासहि जकाँ हुनको सब परिचय बङ्गलहिमे देल जाइत छल। जहिना गोविन्ददासक पद बङ्गलमे आदृत अछि तहिना वा ताहूसँ बेसी विद्यापतिक पद ओतए भक्ति ओ श्रद्धासँ समादृत छल ओ अछि, कारण, स्वयं चैतन्य महाप्रभु विद्यापतिक पद गाबि गाबि आनन्द-विभोर होथि। परन्तु विद्यापतिक गीत गोविन्ददासक गीत जकाँ मिथिलामे महिओ अप्रसिद्ध नहि भेल, प्रत्युत समस्त मिथिलामे लाखहु कण्ठसँ "भनहि विद्यापति" सब दिन गुञ्जित होइत रहल। तथापि एमहर सए डेढ़ सए वर्षसँ बङ्गली लोकनि विद्यापति मैथिल छलाह से बिसरि गेलाह ओ हुनका बड़ग्रैली कहए लगलाह। समय आएल ओ स्वयं बङ्गली लोकनि, सत्यक जिज्ञासु बङ्गली मनीषी लोकनि, स्वीकार कएलैन्हि जे विद्यापति मैथिल छलाह; प्रमाणसँ सिद्ध कए ई भ्रम दूर कए देलैन्हि जे विद्यापति बङ्गली छलाह। एहिमे बड़का सहायक भेल मिथिलामे विद्यापतिक गीतक प्रचुर प्रचार ओ विद्यापतिक हाथक लिखल भागवातक पोथी। गोविन्ददासक ने कोनो हस्तलेख उपलब्ध अछि ने हुनक गीतक कोनो

प्राचीन संग्रहे भेटैत अछि। एहना स्थितिमे यावत् पर्यन्त गोविन्ददासक गीतक बङ्गलमे एहि रूपक व्यापक प्रचार एवं हुनक गीतमे वैष्णव सम्प्रदायक कीर्तनक परम्पराक अनुसृतिक समीचीन एवं युक्तियुक्त समाधान नहि देल जाए तावत् पर्यन्त जँ बङ्गली लोकनि गोविन्ददासकें बङ्गली मानैत छथि, हुनका मैथिल स्वीकार नहि करैत छथि, तँ एहिमे आश्चर्य कोन? मैथिली-साहित्यक क्षेत्रमे ई एक गोट जटिल प्रश्न अछि; इएह थिक गोबिन्ददासक व्यक्तित्वक समस्या। एकर समाधान प्रत्येक मैथिली-साहित्य-सेवीक हेतु अनुसन्धानक विषय थिक।

परन्तु खेदक विषय थिक जे एहि दिशामे मैथिलक दिशिसँ कोनो काज एखन धरि नहि भेल अछि, कोनो अनुसन्धान नहि भेल अछि जाहिसँ गोविन्ददासझाक व्यक्तित्वक निर्धारण भए सकए, एहि गीत सबहिक रचयिता गोविन्ददास मैथिल प्रमाणित होथि। गोविन्ददासक गीतक अध्ययन भेल अछि परन्तु प्रश्न तँ अछि हुनक व्यक्तित्वक, तथा गीतक अध्ययन ओ व्यक्तित्वक परिचय दू भिन्न वस्तु भेल। ई कथा सर्वमान्य अछि जे प्रत्येक कृतिक पाछाँमे एक गोट कर्ता रहैत अछि, प्रत्येक काव्यक पाछाँमे एक गोट मानव कवि रहैत छथि तथा कविक व्यक्तित्वक परिचय भए गेलासँ हुनक काव्यकृति बुझब सुगम भए जाइत अछि। परन्तु केवल काव्यकृतिक आधार पर व्यक्तित्वक कल्पना भ्रमसँ शून्य नहि भए सकैत अछि। व्यक्ति होइत अछि देश, काल ओ समाजक अनुरूप, तीनूक प्रभावसँ युक्त। अतएव कोनहु कविक व्यक्तित्वक परिचयक हेतु ओहि कविक देश ओ कालक परिचय प्राप्त कए लेब आवश्यक, ओहि समाजक परिचय आवश्यक जकरा निमित्त कविक कृति भेल। से नहि कए केवल काव्यक आधार पर व्यक्तित्वक कल्पना करब कतेक भ्रमाह भए सकैत अछि तकर ज्वलन्त दृष्टान्त विद्यापति ठाकुर छथि। अतएव गोविन्ददासक व्यक्तित्वक परिचयक हेतु हुनक देश, काल ओ समाजक परिचय प्राप्त करब आवश्यक ओ तखन द्रष्टव्य जे हुनक काव्यकृति तदनुकूल होइत अछि वा नहि। महाकवि जे छथि से नवयुगक स्पष्टा कहल जाइत छथि परन्तु भविष्यक हेतु नव युगक स्पष्टा होइतहुँ ओ प्राचीनताक संस्कार लेने अपना युगक सृष्टि होइत छथि। एहि दृष्टिसँ जखन विचार करब तखन कविक व्यक्तित्वक यथार्थ परिचय होएत ओ व्यक्तिक परिचय भए गेला उत्तर ओहि व्यक्तिक कृतिक विचार मसीचीन ओ सुसङ्गत होएत।

(२)

हम पूर्वहुँ कहि आएल छी जे हमरालोकनि जाहि गोविन्ददासझाकें महाकवि जनैत छिऐन्हि ओ कुजौली महाकुल-सम्भूत महामहोपाध्याय शुचिकर झाक प्रपौत्र, महोपाध्याय शिवदासझाक पौत्र, महोपाध्याय कृष्णदासझाक द्वितीय बालक छलाह। म.म. शुचि अपना समयक प्रसिद्धतम नैयायिक छलाह ओ हुनकहिसँ महामहोपाध्याय महेशठाकुर न्यायशास्त्र पढ़ने छलाह। म.म. महेशठाकुरक जेठ भाए म.म. भगीरथठाकुर जे मेघठाकुरक नामसँ प्रसिद्ध छथि ओ कुसुमाञ्जलि पर जलद नामक सुप्रसिद्ध टीकाक रचना कएल, महामहोपाध्याय पक्षधरमिश्रक शिष्य छलाह परन्तु जखन महेशठाकुर अध्ययनक योग्य भेलाह तावत् पक्षधरक देहान्त भए गेल छल ओ सम्बन्धें मौसा शुचि उपाध्यायसँ महेशठाकुर पढ़ल। एतावतैव शुचि उपाध्यायक वैदुष्यक अनुमान कए सकैत छी, कारण, महेशठाकुर केवल मिथिलाराज्यक उपार्जनेटा नहि कएल, ओ नैयायिको अपूर्व छलाह ओ पक्षधरक आलोक पर जे टीका दर्पण कहि ओ लिखल से

नव्यन्यायक निकष बुझल जाइत अछि। शुचि उपाध्यायक बेटा ओ पौत्र सब नैयायिक छलाह ओ हुनक प्रपौत्र चारू भाइ नैयायिक छलाह। गोविन्ददासक आओर सब भाइ साहित्यिक सेहो रहथि। जेठ गङ्गादास ओ छोट हरिदास एवं रामदास सभक काव्यकृतिक उल्लेख भेटैत अछि, गङ्गादासक कृति तँ उपलब्ध नहि होइत अछि परन्तु हरिदासक गीत राग-तरङ्गिणीमे अचि ओ रामदासक आनन्दविजय नाटक प्रकाशित अछि। गोविन्ददास नैयायिकक वंशमे प्रादुर्भूत नैयायिक छलाह ओ मैथिली-साहित्यक सेवा हुनका समयमे हिनक परिवारक सब कएल। प्रायः ओही समयमे रागतरङ्गिणीकार लोचन सेहो हिनकहि गाममे, रैञाममे, साहित्यिक रचना कएल ओ से लोचन हिनकहि बाप कृष्णदासक पितिऔत भाए यदुनाथक दौहित्र छलाह, गोविन्ददासकें सम्बन्धें भागिन छलथिन्ह।

गोविन्ददासक काल प्रायः निर्णित अछि। हिनक कन्याक विवाह महाराज महेशठाकुरक प्रपौत्र, महाराज शुभङ्करठाकुरक पौत्र, रामठाकुरक बालक रघुनाथठाकुरसँ छल ओ हिनक बहिनिक विवाह महाराज शुभङ्करठाकुरक जेठ बालक महाराज पुरुषोत्तम ठाकुरसँ छल। हिनक छोट भाए महामहोपाध्याय रामदासझा अपन आनन्दविजय नाटिका मिथिलाविलासिनीक ह्रदयमन्दिरक सुन्दरनरेशकें उपहारीकृत कएने छथि तथा गोविन्ददासझाकें ओ "श्रीगोविन्दघनेन तेन गुरुणा" इत्यादि शब्दें गुरु कहने छथि। महाराज सुन्दरठाकुरक राजत्वकाल १६३६ सँ १६५२ ई० अछि ओ ते स्पष्ट अछि जे १६३६ ईशबीयक प्रान्तमे गोविन्ददासझा अवश्य जीवित छलाह परन्तु वृद्ध छलाह अतः हिनक काल सोड़हम शताब्दीक अन्तिम चरणसँ सत्रहम शताब्दीक चारिम दशक धरि मानब सर्वथा सङ्गत अछि। गोविन्ददासझाक जे परिचय हमरालोकनिकें उपलब्ध अछि ताहि सबसँ इएह हिनक जीवन-काल सिद्ध होइत अछि।

मिथिलाक सांस्कृतिक इतिहासक पर्यालोचनासँ अवगत होइत अछि जे सोड़हम शताब्दीक अन्त धरि मिथिलाक सांस्कृतिक गौरव ह्रासोन्मुख भए रहल छल। कार्णाट क्षत्रिय लोकनिक राजत्वकालमे मिथिला जाहि गरिमाकें प्राप्त कएल, ओ जकर परिणाम-स्वरूप ओइनिबार-वंशक राजत्वकाल मिथिलाक सांस्कृतिक इतिहासमे स्वर्णयुग छल, ओहि गरिमाक अन्त सोड़हम शताब्दीक अन्त धरि सब दिशि परिलक्षित होइत अछि। ई गौरव मिथिलहिभूमिकें अछि जे जखन समस्त आर्यावर्त्त विदेशी ओ विधर्मी मुसलमान विजेतागणसँ विजित भए गेल छल तैओ, प्रायः दू सए वर्ष धरि, मिथिलामे क्षत्रियक राज्य रहल ओ मैथिल लोकनि एहि युगमे अपन सामाजिक संघटन एहि एहि दूरदर्शिता एवं कुशलतासँ कए लेल जे १३२४ ई० मे जखन हरिसिंहदेवकें परास्त भए मिथिलाकें त्यागए पड़लैन्हि तथापि मिथिला मुसलमानक शासनमे नहि आएल प्रत्युत आधिपत्य मुसलमानक छलो तथापि शासन रहल ब्राह्मणक, ओइनिबार-वंशक। एहि नवीन सङ्घटनमे विद्याक व्यवसाय ओ चरित्रक चारुताकें से महत्त्व देल गेल जे मिथिला विद्यायक केन्द्र भए गेल ओ आर्यावर्त्तक एहि पूर्वोत्तर भूभागमे सांस्कृतिक नेतृत्व करए लागल। जाहि महापुरुष लोकनिक जन्मभूमि होएबाक गौरवें मिथिलाक मुख अद्यापि उज्ज्वल अछि से लोकनि प्रायः सबहुँ एही युगमे प्रादुर्भूत भेल छलाह। नव्यन्यायक प्रवर्त्तक परमगुरु गङ्गेश, हुनक सुपुत्र वर्धमान, सप्तरत्नाकर चण्डेश्वर, सन्मिश्र शङ्कर, पक्षधर, वाचस्पति, जगद्धर, विद्यापति--सबहुँ एही युगमे अवतार लए मिथिलाकें गौरव प्रदान कएल। शङ्करमिश्र अपन पिता अयाची भवनाथ मिश्रक प्रसङ्ग जे कहने छथि जे

यस्यान्तेवासिभिः प्राज्ञैरासमुद्रं वसुन्धरा।
विद्याविनोदव्यसनव्यापारैकपरा कृता।।
(गौरीदिगम्बर प्रहसनमे)

तथा अपन वैशेषिकसूत्रोपस्कारक प्रसङ्ग जे हुनक उक्ति अछि
श्लाघास्पदं यद्यपि नेतरेषामियं कृतिः स्यादुपहासयोग्या।
तथापि शिष्यैर्गुरुगौरवेण परस्सहस्रैः समुपासनीय।।

एहीसँ स्पष्ट अछि जे ताहि दिन मिथिलाक विद्यावैभव कोन रूपक छल। भवनायक शिष्य लोकनि "आसमुद्र" व्याप्त छलाह; शङ्करमिश्रकें सहस्रक हिसावें शिष्यक गौरव। ओइनबार महाराज भैरवसिंहक राजत्वकालमे एहि वैभवक उत्कर्ष चरम छल जखन हुनक कएल जरहटिआ पोखरिक यागमे निमन्त्रित पण्डितमे केवल मीमांसक चौदह सए सुनल जाइत अछि। एही समयमे शङ्करमिश्र, मक्षधर मिश्र, जगद्धर झा, रुचिपति झा, गोविन्द ठाकुर प्रभृति विद्धन्मूर्धन्य वर्त्तमान छलाह ओ विद्यापति ठाकुरक देहान्त भेलेटा छल। देश देशसँ छात्रगण जे अपन अपन विद्याक परिष्कारक निमित्त मिथिला आबथि ताहिमे बङ्गल, उड़ीसा ओ आसामक विद्यार्थी लोकनि विशेष छलाह। एहि पूर्वाञ्चलसँ मिथिलाकें सांस्कृतिक सम्बन्ध बहुत दिन पूर्वहुसँ छल, कारण, तन्त्रक प्राधान्य एहि समस्त भूभागकें सांस्कृतिक एक सूत्रमे बन्हने छल। भाषा ओ लिपिक साम्य सेहो एहि भूभागकें विशेष। बङ्गाल आदिक पण्डित लोकनि जखन विद्या पढ़ि पढ़ि एतएसँ जाथि तँ ओ लोकनि केवल शास्त्रीय ज्ञाने टा नहि लेने जाथि। अपि तु विद्यापतिक सुमधुर गीत सेहो अपना कण्ठमे लेने जाथि।इएह भेल विद्यापतिक गीतक बङ्गालमे एहन व्यापक प्रचारक कारण। विद्यापतिक गीत सूनि सूनि स्वयं चैतन्यदेव मुग्ध भए जाथि, गाबि गाबि आनन्दविभोर भए जाथि। हुनका एहि गीतमे अद्‌भुत आध्यात्मिकता भासित होइन्ह। स्त्री ओ पुरुषक प्रेमकें, विशेषतः परकीयाक प्रेमकें, ओ परमात्माक भक्तिक प्रतीक बुझथि। परन्तु गीत तँ ई सब छल श्रृङ्गारक ओ श्रृङ्गरक माध्यमसँ भक्तिक एहि कल्पनाकें सिद्ध करबाक उद्देश्यसँ बङ्गालक वैष्णव-समाजमे एक गोट नवीन रसक कल्पना कएल गेल जाहिमे स्थायीभाव हो भक्ति परन्तु ओकर माध्यम हो श्रृङ्र्ल्ि अर्न्ीर्ि्ीर्ि श्रृङ्र्ल्ि क्ष्ह्ब्र्फ,अड़ग हो अङ्गी हो भक्ति। चैतन्यदेवक महापण्डित ओ महाकवि शिष्य लोकनि सनातन, रूप ओ जीव, सबहुँ, शास्त्रीय रीतिएँ एहि मधुररसक प्रतिपादन कएल : क्रमशः विद्यापतिक अनुकरणमे हुनकहि शैली पर हुनकहि भाषामे गीतक रचना होअए लागल। वस्तुतः बङ्गाल, आसाम ओ उत्कलमे भाषासाहित्यक विकासमे मैथिली गीत-काव्यक अपूर्व प्रभाव अछि। कालक्रमें जखन मिथिलासँ सम्पर्क क्षीण भए गेल ओ चैतन्यक नव सम्प्रदायक प्रभाव मिथिलामे नहि होअए पओलक तखन ओहि भाग सबहिक लोक विद्यापतिक मैथिलत्व बिसरि गेल। विद्यापतिकें ओ लोकनि बङ्गाली बुझए लगलाह, विद्यापतिक भाषाक अनुकरणकें ओ लोकनि तत्तद्‌भाषाक सङ्ग मिश्रित मैथिली बिसरि गेलाह, ओकरा नाम देल ब्रजबूली।

परन्तु पक्षधर मिश्रक सङ्गहि जेना मिथिलाक विद्यावभवक अस्त भए गेल। एकर अभिप्राय ई नहि जे मिथिलामे तकर पश्चात् विद्वान् नहि भेलाह, अथवा मिथिलासँ विद्याक व्यवसाय ऊठि गेल, अथवा मिथिलामे विद्याक प्रति आदर ओ श्रद्धा नहि रहल। एकर आशय केवल एतबए जे

जेना गङ्गेशक समयसँ लए पक्षधरक समय धरि मिथिला विद्याक केन्द्र छल, जतएसँ शास्त्रीय आलोक लए लए समस्त आर्यावर्तमे वैदुष्यक प्रसार होइत छल, तेना ओ नहि रहल। प्रवाद अछि जे नवद्वीपसँ एक जन कनाह पण्डित रघुनाथ नामक मिथिला अएलाह पक्षधर मिश्रसँ न्यायशास्त्र पढ़ए, परन्तु बुद्धिक तीक्ष्णता, तर्कक प्रौढ़ता ओ शास्त्रीय विवेचनाक
सूक्ष्मतामे ओ पक्षधरकें परास्त कए देल ओ शास्त्रार्थमे विजय प्राप्त कए शिरोमणिक उपाधिसँ विभूषित घूरिकें नवद्वीप गेलाह। रघुनाथ शिरोमणि गङ्गेशक न्यायशास्त्रकें तर्कक चरम उत्कर्ष पर आनि देल। पक्षधर मिश्र अपन आलोक नामक टीकामे गङ्गेशक चिन्तामणिक अद्‌भुत विवेचना कएल जे न्यायशास्त्रक उत्कर्ष बुझल जाइत छल परन्तु शिरोमणि जे चिन्तामणि पर दीधिति लिखल ताहिमे ओ पक्षधरक तर्कक दोषकें ताकि ताकि उद्‌घाटित कएल ओ अपन सूक्ष्मातिसूक्ष्म तर्कसँ ओहि सबहिक खण्डन कए चिन्तामणिक आशयकें से रूप देल जे चिन्तामणि-दीधिति तहिआसँ समस्त भारतवर्षसँ नव्यन्यायक चरम सिद्धान्तक रूपमे परिगृहीत होइत आएल अछि। आलोक लुप्त भए गेल, दीधिति नाययशास्त्रक आकर ग्रन्थ भए गेल। शिरोमणि नवद्वीपकें नव्यन्यायक केन्द्र बनाए देल ओ हुनक शिष्य परम्परामे एकसँ एक दुर्धर्ष विद्वन्मूर्धन्य होइत गेलाह जे अपन कृति सबसँ केवल दीधितिहिक सिद्धान्तकें स्पष्ट नहि करैत गेलाह प्रत्युत न्यायशास्त्रकें सब विद्याक शीर्षस्थानीय बनाए देल। शिरोमणिक कृति १५०० इशबीय धरि सम्पन्न भए गेल छल ओ सए वर्षक भीतरहिं नवद्वीप विद्याक अद्वितीय आगार भए गेल। शिरोमणिक शिष्य परम्परामे तीनि जन महपण्डित सर्वोपरि विख्यात भेलाह--मथुरनाथ (१५५०-१५९० धरि) जनिक सब ग्रन्थक प्रतिलिपि करबामे कहल जाइत अछि जे महाभारतक प्रतिलिपि करबासँ तीनि बर मसय लागत; जगदीश (१५५०-१६१०) जनिका समयमे कहल जाइत अछि नवद्वीपमे चारि हजार विद्यार्थी न्यायशास्त्र पढ़ैत छलाह ओ साढ़े पाँच सए नैयायिक अध्यापक छलाह, ओ गदाधर (१६०४ सँ १७०९ धरि) जनिका समयमे नवद्वीपक ख्याति-प्रतिपत्ति चरम सीमा पर प्राप्त भेल ओ अनुमान-खण्डक सूक्ष्मातिसूक्ष्म विचारप्रणाली भारतवर्ष मे यावतो विद्यासमाजकें अभिभूत कए देलक। न्यायशास्त्रक विवेचनाक पद्धति सब शास्त्रमे चलि गेल, व्याकरण ओ साहित्य समेतक विचार विनु अनुमान-खण्डक बोलिएँ नहि हो। फलतः विनु न्यायशास्त्रक अवगति भेलें पण्डित होएब असम्भव भए गेल, पण्डित जकाँ विचार करब सम्भव नहि रहल। परन्तु न्यायशास्त्रक अवगतिक हेतु अनिवार्य रहल दीधितिक अध्ययन ओ ताहि सङ्ग सङ्ग माथुरी, जगदीशी ओ गादाधरीक। एहि तीनू महानैयायिकक ग्रन्थ पढ़ि पढ़ि आइ चारि सए वर्षसँ लोक नैयायिक होइत आएल अछि, शास्त्रीय विचारक क्षमता प्राप्त करैत आएल अछि।

एही समयमे चैतन्य महाप्रभुक प्रादुर्भावसँ नवद्वीपक महिमा आओर व्यापक भए उठल। महाप्रभु शिरोमणिक सहाध्यायी छलाह सेहो कहल जाइत अछि। हुनक ऐहिक लीलाक समय थिक १४८६ सँ १५३४ ईशवीय धरि। भक्तिक स्रोत भारतीय संस्कृतिमे ओना तँ बड़ पुरान थिक ओ श्रीमद्‌भगवत ओकर स्वरूपाधायक कहल जाइत अछि जाहिमे राधा ओ कृष्णाक प्रेमलीला भक्तजनक आह्लादक सामग्री रहल अछि, परन्तु चैतन्य तँ कृष्ण-भक्तिक एक गोट नव स्रोत नवद्वीपमे बहाए देल जे क्रमशः पसरैत पसरैत वृन्दावन धरि पहुँचि गेल। चैतन्य संस्कृतकें छोड़ि भारतीय भाषाक गीत द्वारा जनमनकें मोहि लेल ओ ताहिमे विद्यापतिक गीत हुनका बड़ सहायक भेल। जन-साधारणमे प्रचारार्थ एहिसँ विशेष उपादेय आओर की होइत? परन्तु विद्यापति-प्रभृतिक श्रृङ्गारक गीतमे आध्यात्मिक अभिप्राय बुझब जनसाधारणक हेतु सुगम नहि

छल। ताहि हेतु मधुर-रसक कल्पना कएल गेल ओ चैतन्यदेवक कवि-पण्डित शिष्य लोकनि विशेषतः सनातन गोस्वामी (१४८४ सँ १५५८ ई०) रूप गोस्वामी (१४८६ सँ १५३४ ई०) ओ हुनक भातिज जीव गोस्वामी संस्कृतमे काव्यहिक टा रचना कए एहि मधुर-रसक धारेटा नहि बहाओल अपितु शास्त्रीय परिपाटीसँ मधुर-रसक युक्तियुक्त ओ तर्कपूर्ण प्रतिपादन सेहो कएल जाहिसँ ओ प्रमाणपुष्ट हो, सिद्ध हो। महाप्रभुक सहचर नित्यानन्द लोकविषय भगवन्नामकीर्तनक परिपाटी चलाओल जाहिसँ सम्पूर्ण नवद्वीप गुञ्जित भए उठल। चैतन्यक एहि नवीन वैष्णव-धर्मक अभिन्न अङ्ग भए गेल कीर्तन। जतए कतहु एहि धर्मक प्रचार भेल ततहि कीर्तनक सेहो प्रचार भेल। बङ्गालमे, आसाममे, उत्कलमे, सर्वत्र भगवन्नामकीर्तनक सङ्ग सङ्ग कीर्तनक पद प्रचलित भए गेल। अनेकानेक कविगण कीर्तनक पद रचए लगलाह जाहि सबमे विद्यापतिक रचना शैलीक अनुकरण छल, विद्यापतिहिक भाषाक अनुकरणमे सब गीत रचल गेल। समस्त पूर्वोत्तर भारत गीतमय भए गेल, भाषा-साहित्यक अपूर्व समृद्धि जागि उठल। सोड़हम शताब्दीक अन्त धरि नवद्वीपमे न्यायशास्त्रीय चर्चाक ध्वनि ओ कीर्तनक पदक ध्वनि इएह सर्वत्र सुनल जाए।

एही समृद्धिकें दृष्टिमे राखि बङलाक प्रसिद्ध कवि भारतचन्द्र नवद्वीपकें "भारतीय राजधानी क्षितिर प्रदीप" कहने छथि ओ से प्रशंसोक्ति नहि, यथार्थ वस्तुस्थितिक वर्णन थिक।

एमहर मिथिलामे विद्याक ओ प्रकर्ष नहि रहल। पक्षधरक परोक्ष होइतहिं मिथिलाक स्थान लए लेलक नवद्वीप। मिथिलामे बहुतो महापण्डित होइत रहलाह परन्तु एक तँ मिथिलामे एकाङ्गी विद्याक कहिओ व्यवसाय भेल नहि, केवल न्यायशास्त्रहिक अनुशीलन छल नहि, दोसर नवद्वीपक प्रवर्धमान प्रकर्ष; मिथिलामे क्रमशः विद्याक ह्रास होअए लागल। पक्षधरक शिष्यलोकनि अनेक छलाह, बड़ विशिष्ट विद्वान, यथा भगीरथ ठाकुर जनिका मेघठाकुर कहि पण्डित-समाज चिन्हैत छैन्हि अथवा मिथिलाराज्योपार्जक महाराज महेशठाकुर जनिक दर्पण नामक टीका पक्षधरक आलोककें सुव्यक्त कएल। परन्तु नवद्वीपक महिमामे ई सब डूबि गेल। शिरोमणि अपन दीधितिमे बराबरि एतबे यत्न कएने छथि जे पक्षधरक आलोकमे दोष प्रमाणित करी। मिथिलामे तहिअहिसँ पक्षधरक युक्तिकें युक्त सिद्ध करबाक चेष्टा होइत रहल। वासुदेव, रुचिदत्त, खाँतर, माधव अनेको विद्वान् एकर यत्न कएल। मधुसूदन ठाकुर तँ आलोकक तर्कमे प्रदर्शित कण्टककें दूर करबाक दीधितिमे देल गेल दोषक ओ मण्डन कएल। १७०० ईशवीयक अन्तमे मिथिलाक विद्यावैभवक अन्तिम विभूति गोकुलनाथ दीधितिक सकल सिद्धान्तकें युक्तिसँ खण्डन करैत शिरोमणिक मानक अपनयन करबाक उद्देश्यसँ "सिद्धान्ततत्त्व" नामक ग्रन्थक रचना कएल। परन्तु ई सब ग्रन्थ जहिना लिखल गेल तहिना रहि गेल। दर्पण समेत आइधरि प्रकाशमे नहि आएल अछि, कण्टकोद्धार सब पुस्तकालय मात्रमे सुरक्षित अछि, सिद्धान्ततत्त्व सम्पूर्ण उपलब्ध समेत नहि अछि। परन्तु दीधिति तथा न्यायशास्त्रीय माथुरी, जगदीशी ओ गादाधरी लाखक संख्यामे प्रकाशित भए समस्त विश्वकें शास्त्रीय विवेचनाक प्रकार प्रदर्शित कए रहल अछि। वस्तुतः मैथिल नैयायिकक विचार-सरणि एवं तार्किक युक्तिक अध्ययन समेत नहि होअए पओलक।

मथिलाक एही ह्रासोन्मुख युगमे गोविन्ददासझा प्रादुर्भूत भेलाह। सोड़हम शताब्दीक अन्तिम चरणमे हुनक जन्म एक बड़ प्रतिष्ठित नैयायिक महाकुलमे भेल। पक्षधरमिश्रक

मानमर्दनसँ समस्त मैथिल-समाज, विशेषतः पण्डितसमाज, क्षुब्ध ओ सामर्ष छल। तखन मधुसूदन अपन कण्टकोद्धारक रचना कए स्मर्तव्य भए गेल छलाह। महेशठाकुर मिथिलाराज्यक उपार्जन कए पण्डितक सम्मानमे धौत-परीक्षाक व्यवस्था कए अन्तमे काशी चल गेलाह। तेजस्वी नैयायिक मिथिलासँ ऊठि गेल छलाह से तँ कहब असङ्गत होएत परन्तु नवद्वीपक प्रवर्धमान तेजस्विताक समक्ष मिथिलाक तेज मलिन भेल जाइत छल। गोविन्ददासझा कुलक्रमागत न्यायशास्त्रक अध्ययन आरम्भ कएल ओ एहि उच्च अभिलाषाकें लए आरम्भ कएल जे मैथिलक मान राखि सकी। परन्तु ताहि हेतु तँ नवद्वीपक प्रतिभाक परिज्ञन आवश्यक छल, कारण, विनु तकर साक्षात् परिचय प्राप्त कएने ओकर प्रतिस्पर्धाक क्षमता कोना होइत। अतएव नव्यन्यायमे उत्कर्ष ओ व्युत्पत्तिक समासादनार्थ गोविन्ददासझा निश्चय नवद्वीप जाए ओतहि शास्त्रीय विवेचनाक परिष्कार कएल। जे आचार्य लोकनि मैथिलक मानमर्दनक सङ्कल्प लए एतेक ख्याति पओने छलाह तनिक तर्क, युक्ति, प्रतिभा, व्युत्पत्ति, अध्यापन-शैली ओ पाण्डित्य-प्रकर्षक परिज्ञानक हेतु एहिसँ विशेष उपयुक्त ओ प्रशस्त मार्ग आओर भए की सकैत छल ! तें हमर अनुमान अछि जे मिथिलासँ जे पण्डित लोकनि मण्डली बनाए बनाए नवद्वीप जाए नव्यन्यायक अध्ययन सम्पन्न करए लगलाह ताहिमे जँ सर्वप्रथम गोविन्ददासझा नहि छलाह तँ प्रारम्भहिक कोनहु मण्डलीमे ओ अवश्य छलाह तथा प्रतिभामे निश्चय ओ सबसँ विशिष्ट छलाह। सोड़हम शताब्दीक अन्तिम दशकमे १५९० सँ १६०० ई०क मध्यमे जखन गोविन्ददासझा बीस पचीस वर्षक नवयुवक छलाह तखन ओ देशमे न्यायशास्त्रक अध्ययन सम्पन्न कए नवद्वीप गेलाह। जगद्गुरु मथुरानाथसँ ओ विद्याग्रहण कए सकलाह अथवा नहि से तँ नहि कहि सकैत छी। जइतहिं ओ जगद्गुरुक अन्तेवासी भए सकल होएताह से तँ ओतेक सम्भव नहि प्रतीत होइत अछि। परन्तु जगदीश तर्कालङ्कारक अन्तेवासी ओ अवश्य भए गेल होएताह; हुनकहिसँ न्यायशास्त्र पढ़ि ओ नैयायिक भए देश आपस भेल होएताह।

नवद्वीपमे ताहि दिन विद्यापतिक पद कीर्तनक मण्डली सबमे सब पदक शीर्षस्थानीय छल; विद्यापति स्वयं चैतन्यदेवकें मुग्ध कएने छलाह। ओही विद्यापतिक देशक प्रतिभावान् पण्डित, विद्यापतिहिक भाषाक भाषी, कोन सन्देह जे शीघ्रहिं गोविन्ददासझा कीर्तनमण्डली सबमे सम्मानसँ आहूत होअए लगलाह, सम्मिलित होअए लगलाह। हुनक स्वर मधुर छल, सङ्गीतक हुनका परिचय छल, प्रायः अभ्यासो छल, कमसँ कम "रसना-रोचन" "श्रवण्-रसायन" पद-रचनाक प्रतिभा हुनका जन्मसिद्ध छल। मैथिलीमे कविता-रचनाक परम्परा हुनका परिचित छल। नवद्वीपक वैष्णव-युसमाजमे ई मैथिल-वक सम्मानसँ आहूत होइत गेलाह। क्रमशः ओ पद सब रचि रचि कीर्तनक मण्डली सबकें गएबाक हेतु देब आरम्भ कएल ओ तेहन रुचिर हुनक गीत भेल, एहन श्रुतिमधुर जे यावत् गोविन्ददासझा नवद्वीपमे रहलाह, स्वान्तः सुखायसँ अधिक वैष्णवजनमनोरञ्जनार्थ पदक रचना करैत रहलाह। एही युवक छात्र गोविन्ददासझाक ई सब पद थिक जकर रचना ओ पाठावस्थामे, नवद्वीपमे, नवद्वीपक विशिष्ट विशिष्ट कीर्तनमण्डली सबहिक हेतु, नवद्वीपक वैष्णव-सम्प्रदायक अनुरूप शैलीमे कएल परन्तु भाषा छल हुनक अपन, मिथिलाक, विद्यापतिक अपन, विद्यापतिक अनुकरण नहि जकरा पाछाँ आबि "ब्रजबूली" संज्ञा देल गेल।

ई अनुमान शुद्ध काल्पनिक नहि थिक, यद्यपि कल्पना कएनहु हमरा एहिमे कोनो क्षति

नहि सुझैत अछि, कारण एहिसँ समस्याक सबटा समाधान भए जाइत अछि। परन्तु हमरा दू गोट सङ्केत एहन उपलब्ध अछि जाहिसँ एहि रूपक कल्पना करबाक निर्देश भेटैत अछि, जे एहि अनुमानमे हमरा सहायक होइत अछि। प्रथमतः आनन्दविजय नाटकमे हिनक सबसँ छोट भाए महामहोपाध्याय रामदासझाक उक्ति जे

यस्मिन् गर्जति रोमदण्डकपटेनायत्नरत्नाङ्कुरा-
नातन्वन्ति वपुर्विदूरखणयो विख्यातसंख्यावताम्।
श्रीगोविन्दघनेन तेन गुरुणा कारुण्यपुण्याम्भिसा।
सिक्तस्यामरशाखिनो नवरसं रामस्य रम्यं फलम्।।

गोविन्ददासक कृपासँ सरस राम ई नाटक रचल परन्तु एहि गोविन्ददासक गर्जन सूनि प्रख्यात संख्यावान् लोकनिकेँ रोमाञ्च भए जाइन्ह। स्पष्ट अछि जे एहि प्रशंसोक्तिसँ गोविन्ददासक व्यक्तित्वक प्रसङ्ग दू गोट महत्ता सूचित होइत अछि, एक तँ रामदासक कवित्व हुनक भाइक प्रसादात्। एतावतैव गोविन्ददासक कवित्व-प्रतिभा रव्यापित होइत अछि। दोसर, गोविन्ददास गर्जनसँ प्रकाण्ड पण्डितलोकनिकेँ रोमाञ्च होएब। ई गर्जन निश्चय न्यायशास्त्रीय वादक चित्र उपस्थित करैत अछि, नैयायिकहिक बौलीकेँ पण्डितक गर्जन कहि सकैत छी। जाहि युगमे गोविन्ददासझाक प्रादुर्भाव भेल ताहिमे विनु दीधितिकार शिरोमणि ओ हुनक परवर्त्ती नवद्वीपक महारथीलोकनिक तर्क, युक्ति, ओ वाद-शैलीक अनुसरण कएने केओ वादी पण्डित "प्रख्यात-संख्यावान्" लोकनिकेँ रोमाञ्च कराए देथि ई समीचीन कथा नहि प्रतीत होइत अछि। मिथिलाक जे प्राचीन शास्त्रार्थ-परिपाटी छल अथवा तर्कक प्रकार छल से तँ शिरोमणिसँ परास्त भए गेल छल;स्वयं पक्षघर तँ शिरोमणीक तर्कसँ पराजित भए गेल छलाह। नवद्वीप न्यायशास्त्रीय विचारक प्रागल्भ्यमे समस्त भारतवर्षक दिग्विजय कए लेने छल। तेहना स्थितिमे गोविन्ददासझाक हेतु वा ककरहु हेतु "वादि-मत्तेभ-सिंह"क गौरव ताधरि कोना सङ्गत होएत जाधरि हुनकामे शिरोमणिक सम्प्रदायक प्राशस्त्य, कौशल ओ ओजस्विताक कल्पना नहि कएल जाए। अतएव हमरा तँ रामदासझाक उक्तिसँ स्पष्ट प्रतीत होइत अछि जे गोविन्ददासझा नवद्वीपमे दीधितिकारक सम्प्रदायमे अन्तेवासी भए न्यायशास्त्रक अनुशीलन कएने छलाह, प्रशिक्षण प्राप्त कएने छलाह, ओ काव्यक क्षेत्रमे कृतित्वक प्रतिष्ठा सेहो प्राप्त कएने छलाह। शुष्क कठोर तर्कक अभ्यासक सङ्ग-सङ्ग सुकुमार काव्यक कोमल कल्पना मैथिल विदून्मूर्धन्यलोकनिक हेतु अभिनव वस्तु नहि थिक। शङ्करमिश्र अपन उज्झट
श्लोकक संग्रह रसार्णवक प्रसङ्ग कहने छथि जे ई ओहि श्लोकसबहिक संग्रह थिक जकर रचना हम "तर्काभ्यासपरिश्रान्तस्वान्तविश्रान्तिहेतवे" कएल। तथा प्रसन्नराघवकार जयदेव तँ तर्ककर्कशविचारचातुरीक सङ्ग कोमलकान्तपदावलीक रचनाक प्रसङ्ग दृष्टान्त दैत छथि जे

"यैः कान्ताकुचमण्डले कररुहाः सानन्दमारोपिता-
स्तैः कि मत्तकरीन्द्रकुम्भदलने नारोपणीयाः शराः।।

द्वितीयतः, नवद्वीप जाए न्यायशास्त्रक अध्ययन सम्पन्न करबाक जे परम्परा मिथिलामे आइ शतावधि वर्ष धरि अनुवर्त्तमान छल ताहूसँ हमरा एहि कल्पनाक निर्देश भेटल अछि।

मिथिलासँ पण्डितलोकनि एमहर दुइए ठाम अध्ययनार्थ जाइत छलाह, काशी ओ नवद्वीप ओ न्यायक परिष्कारक हेतु यदि कतहु अन्यत्र जाथि तँ नवद्वीपहिं। विदेश केओ एकसर नहि जाथि, चारि-पाँचजन मीलिकें जाथि ओ अन्तिम मैथिल नैयायिक जे नवद्वीप जाए न्यायशास्त्र सम्पूर्ण अध्ययन कए आएल छलाह ओ छलाह स्वर्गीय पण्डित नीलाम्बरझा जनिक भागिन छलाह महामहोपाध्याय बालकृष्णमिश्र जे न्यायशास्त्र आरम्भमे हुनकहिसँ पढ़ल। नीलाम्बरझा आइसँ सत्तरि-पचहत्तरि वर्ष पूर्व नवद्वीप गेल छलाह। ई परिपाटी कहिआ चलल से तँ ज्ञात नहि अछि परन्तु जे कथा हम पूर्वहिं कहि आएल छी एकर आरम्भ सोड़हम शताब्दीक अन्त धरि भेल होएत ई सर्वथा सङ्गत बूझि पड़ैत अछि। शिरोमणिक प्रदर्शित पक्षधरक दोषकें सद्‌युक्ति द्वारा समुत्सारणक उद्योग किछु दिन धरि मिथिलामे अवश्य भेल परन्तु एहि विषय पर अद्यपर्यन्त कोनो अनुसन्धान नहि भेल अछि जे एहि कण्टकोद्धार-कार्यमे मैथिल नैयायिक कतेक दुर घरि सफल भेलाह। गोकुलनाथ अन्तिम मैथिल महापण्डित छलाह जे अपन सिद्धान्त-तत्त्व एही दृष्टिसँ रचल जे दीधितिक तर्ककें खण्डन कए पक्षधरक मर्यादाकें पुनः स्थापित करी। परन्तु कालक दोष कही, अथवा प्रतिभाक ह्रास, मिथिलाक तेज दिनानुदिन मलिन होइत गेल ओ १७०० ई०क पश्चात् तँ मिथिलाक न्यायशास्त्र सर्वथा लुप्त भए गेल। परन्तु ई स्थिति सहसा तँ भेल नहि होएत। विद्याक अर्जनक हेतु लोक, विशेषतः प्रतिभावान छात्र, ओतहि जाएत जतए अध्यापन सर्वोत्कृष्ट होएत ओ से यश मथुरानाथहिक समयसँ नवद्वीपकें प्राप्त भेल जाहि कारणें मथुरनाथकें जगद्‌गुरुक आख्या देल जाइत अछि। तँहि हमर अनुमान अछि जे जगद्‌गुरुक यशकें सूनि गोविन्ददासझा १५९०क प्रान्तमे नवद्वीप गेलाह ओ ओतहि ओ अपन गीतावलीक रचना कएल।

(३)

यदि ई कथा सत्य तँ गोविन्ददासक समस्याक समाधान सुगम भए जाइत अछि ओ सब दृष्टिएँ विचार कएलासँ एकरा छोड़ि दोसर कोनो समाधानो नहि भेटैत अछि जाहिसँ परस्पर विरुद्ध प्रमाणपुञ्जक सामञ्जस्य भए सकए। देश, काल ओ समाजक जे चित्र हम उपस्थित कएल अछि से ऐतिहासिक तथ्य थिक, ओ ताहि सङ्ग एहि कल्पनाकें अथवा एहि अनुमानकें कोनो विरोध नहि होइत अछि, प्रत्युत गोविन्ददासक रचनाक स्वरूप, शैली एवं प्रचार सब कथूक सङ्गति एही ऐतिहासिक पृष्ठभूमिमे युक्तियुक्त प्रतीत होइत अछि।

गोविन्ददासक भाषाक प्रसङ्ग ई छोड़ि दोसर कथा सङ्गते नहि होइत अछि जे ई मैथिलक कृति थिक, मिथिलाभाषा-भाषीक कृति थिक। मैथिलेतर कतबओ अनुकरण करताह तथापि एहि रूपें विशुद्ध भाषा नहि लीखि सकताह। कतेक मैथिलेतर कविगण विद्यापतिक भाषाक अनुकरण कएल अछि परन्तु केओ मिथिलाभाषा नहि लीखि सकलाह, सबमे कृत्रिमताक स्पष्ट चिन्ह उपलब्ध होइत अछि जाहि कारणें एकगोट भाषान्तरक, व्रजबुलीक, कल्पना करए पड़ल। गोविन्ददास-भनितासँ युक्त कतेको गीत व्रजबूलीमे अछि ओ बङ्गला-साहित्यक इतिहासमे अनेक कवि एहि नामक भेटैत छथि, छओ गोट गोविन्ददास बङ्गालमे भेलाह अछि। हुनका
लोकनिक गीतक भाषाक आधार पर ई कहब सुगम अछि ओ सङ्गत अछि जे ब्रजबूलीक सबटा गीत बङ्गीला गोविन्ददासक थिक परन्तु मिथिलाभाषाक गीत मैथिल गोविन्ददासक थिक ! एक

जन बङ्गाली कवि मैथिल जकाँ मिथिलाभाषामे गीतक रचना कएल ताहिसँ विशेष सङ्गत तँ ई मानब अवश्ये होएत जे मैथिल गोविन्ददास एहि गीत सबहिक रचना नवद्वीपमे कएल, जखन अन्य प्रकारें हुनक नवद्वीपमे अध्ययनक निमित्त ओहि युगमे रहब युक्तियुक्त होइत अछि जाहि युगमे नवद्वीप न्यायशास्त्रीय विद्या ओ चैतन्यमहाप्रभुक वैष्णवधर्मक चरम उत्कर्ष पर छल।

ओ एहि सब गीतक रचना भेल कीर्त्तनमण्डलीमे झालि ओ मृदङ्गक सङ्ग गाओल जएबाक हेतु तें गेयधर्मक प्रधानता पूर्णसङ्गत। अर्थक विमलतासँ विशेष शब्दक झङ्कार पर ध्यान देल गेल अछि, श्रुतिमाधुर्यक हेतु शब्दालङ्कारक प्रचुर प्रयोग भेल अछि। कोनहु दोसर मैथिल कविक गीतमे एहि रूपें शब्दक ध्वनि पर एतेक ध्यान नहि देल गेल अछि; जतेक कीर्तनहुक पदसँ हम परिचित छी हमरा तँ ब्रजबूलीहुक अन्यान्य कविक रचनामे शब्दक ई झङ्कार नहि भेटैत अछि। अतएव ई कल्पना करब पूर्ण सङ्गत प्रतीत होइत अछि जे गोविन्ददास एहि पद सबहिक रचना साधारण काव्यक दृष्टिसँ नहि, साधारण गीत जकाँ गाओल जएबाक हेतु नहि, प्रत्युत कीर्तनमे गाओल जएबाक हेतु कएल। अर्थक विमलता पर तँ तखन ने ध्यान देल जाइत जखन एकर लक्ष्य होइत कविताक रसास्वादन। साधारण गीत ओ कीर्तनक गीतमे भेद होइत अछि, ओ गोविन्ददासक गीत कीर्तनक हेतु रचल गेल से एहि गीत सबहिक स्परूपे कहैत अछि।

गोविन्ददासक काव्यगत जे दोष लक्षित होइत अछि से ओही जातिक दोष थिक जे एकगोट छात्रक पाठावस्थाक रचनामे होएब स्वाभाविक, विशेषतः जखन ओहि छात्रकें रचनाक उद्देश्य कविक ख्याति नहि हो किन्तु समाज-विशेषक अनुरञ्जन, जाहि समाजक हेतु ओ तदनुकूल गीतक रचना करए। गोविन्ददासक काव्यक दोष हुनक प्रतिभाक नहि थिक, गोविन्ददासक प्रायः सब गीत विद्यापतिक कतोक गीतसँ उच्च कोटिक अछि। ओ दोष हुनक व्युत्पत्तिक नहि थिक; शब्दक एहन विन्यासी कविक व्युत्पत्तिमे दोषक चर्चा कोन? ओ दोष थिक हुनक अपरिपक्व काव्यकौशलक, अभ्यासक अभावक, नैयायिकक कठोर परन्तु सूक्ष्म कल्पना-शक्तिक। प्रसादगुणक अभाव हिनक गीतमे शब्दक आडम्बर ओ ध्वनिक झङ्कारक कारणें अछि परन्तु से आडम्बर ओ झङ्कार तँ तखन चमकैत जखन ताहि सङ्ग-सङ्ग अर्थक निर्मलता सेहो रहैत। परन्तु अर्थक प्रति गौणताक भाव सूचित करैत अछि जे कवितामे भावाभिव्यक्तिक माध्यम जे थिक शब्द ताहि पर हुनका पूर्ण अधिकार नहि छल, ओ ओहि रचनाक उद्देश्यक पूर्त्ति हुनका ओकर गेयधर्मता मात्रमे पूर्ण भए जाइन्ह, जाहिसँ आगाँ जेना हुनका लक्ष्ये नहि हो। नेनपनक अनेक लक्षण हिनक प्रशस्तहु पदमे स्पष्ट अछि। समस्त गीतमे एकहि वर्णसँ आरम्भ पदक समावेश करबाक चेष्टा नेनपन नहि तँ की थिक? चित्रकाव्यक स्थान साहित्यशास्त्रमे गौण अछि ओ एहि एक-वर्णक बहुल प्रयोग अनुप्रासक सीमाकें लाँघि गीतकें चित्र-काव्यत्व प्रदान करैत अछि। विद्यापतिक एक एक गीतमे नव-नव कल्पनाक समावेश अपूर्व चमत्कारक अछि, परन्तु गोविन्ददासक समस्त गीतमे एक गोट कल्पनाक साङ्गोपाङ्ग चित्रण हुनक कल्पनाक प्रौढ़ता, ओकर सूक्ष्मता, ओकर दृढ़ताक प्रमाण थिक तथा ई कल्पना नैयायिकक मस्तिष्कक धर्म थिक। आशयक गाम्भीर्य, ध्वनिक सूक्ष्मता, व्यङ्ग्यक दूरत्व सेहो प्रायः अधिक ठाम हिनका गीतमे अर्थक दुरूहताक कारण अछि; से सब नैयायिकक सूक्ष्म विवेचनाक अभ्यासक परिणाम कहल जाए सकैत अछि। यदि गोविन्ददासझामे काव्यकलाक परिपक्वता रहैत, जँ ओ आर्थिक

निर्मलताकें लक्ष्य बनाए प्रसाद गुणक दिशि सचेष्ट होइतथि, यदि ओ अर्थबोधक निमित्त आवश्यक पदक समावेश कए अपन गीतकें सुबोध बनएबाक यत्न करितथि तँ प्रतिभा हुनक तेहन तीव्र छल, व्युत्पत्ति तेहन चमत्कारक छल, कल्पना हुनक तेहन सूक्ष्म छल, शब्दक ओ तेहन विन्यासी छलाह, ओ श्रुतिमाधुर्यक ओ ततेक प्रिय छलाह जे ओहन गीतकार भारतीय भाषामे प्रायः तकलहु नहि भेटैत। परञ्च ओ तँ "रसना-रोचन श्रवण-रसायन" कीर्तनक पदक रचना मण्डली सबहिक अनुरञ्जनार्थ करैत
रहलाह। कवित्वक यश हुनका हेतु गौण छल, ओ तँ नैयायिकक ख्यातिक भूखल छलाह। नवद्वीपसँ फिरला उत्तर ओ कविता रचबो कएलैन्हि की नहि ताहिमे सन्देह; हमरा जनैत तँ ओ नहिए रचलैन्हि।

इएह कारण थिक जे गोविन्ददासक समस्त रचना मधुर-रसक थिक, जाहि मधुर-रसक कल्पना चैतन्यक विद्वान् शिष्य लोकनि, विशेषतः रूपगोस्वामी, कएलैन्हि। एहि मधुर-रसमे श्रृङ्गार आवरण मात्र रहैत अछि; ओहि श्रृङ्गारमे अन्तर्निहित रहैत अछि आध्यात्मिकता। मिथिलामे एकर कहिओ प्रचार नहि भेल परन्तु नवद्वीपक वैष्णवसमाजमे इएह प्रधान रस छल। गोविन्ददास एहि विषयक अध्ययन कएने छलाह। उज्ज्वलनीलमणि, विदग्धमाधव प्रभृति रूपगोस्वामीक कृतिक, जीवगोस्वामीक कृतिक, सनातनगोस्वामीक कृतिक, ओ ताहि सङ्ग सङ्ग श्रीमद्भगवतक हिनका पूर्ण अनुशीलन छलैन्हि। हिनक कविताक विशेष अध्ययन कएने ताकि ताकिकें बहार कएल जाए सकैत अछि जे कोन रूपें गोविन्ददासक गीतमे संस्कृतक वैष्णवकवि लोकनिक छाया अछि। अनेक गीत तँ सोझे अनुवाद थिक। छाया तँ विद्यापतिहुक गीतमे बराबरि भेटैत रहैत अछि परन्तु से श्रृङ्गारक गीतक--अमरुशतकक, आर्यासप्तशतीक, गाथासप्तशतीक, श्रृङ्गारतिलकक, ओ ठाम ठाम गीतगोविन्दक, परन्तु अनुवाद विद्यापति कतहु नहि कएल अछि। गोविन्ददासझाक प्रसिद्ध गीत (श्रृङ्गारभजनक प्रथम भाग गीत संख्या ४९) "कहाँ नख चिन्ह चिन्हल तोहें सुन्दरि" इत्यादि जे विभासरागक कन्दर्प तालमे अछि से थिक उज्ज्वलनीलमणिक एहि श्लोकक अनुवादः-

नखाङ्का न श्यामे घनघुसृणरेखाततिरियं
न लक्षाम्भः क्रूरे परिचिनुगिरेर्गैरिकमिदम्।
धियं धत्से चित्रं हत मृगमदेप्यञ्ञ्डनतया
तरुण्यास्ते दृष्टिः किमिव विपरीतस्थितिरभूत्।।

एहिना श्रृङ्गारभजनक द्वितीयभागक ५३म गीत जे धनाश्रीरागमे अछि "सजनि मरण मानिय बड़ भागि" इत्यादि से रूपगोस्वामीक विदग्धमाधवक एहि श्लोकक अनुवाद थिक :-

एकस्य श्रुतमेव लुम्पति मतिं कृष्णेति नामाक्षरं
सान्द्रोन्मादपरम्परामुपनयत्यन्यस्य वंशीकलः।
एष स्निग्धघनद्युतिर्मनसि मे लग्नः सकृद्वीक्षणात्
कष्टं धिक् पुरुषत्रये रतिरभून्मन्ये मृतिः श्रेयसे।।

श्रृङ्गारभजनक प्रथमभागक गीत संख्या-१५, सूहबरागक 'सजनि कि कहब राहिक सोहागि' इत्यादि रूपगोस्वामीक श्लोकक अनुवाद थिक :-

संकेतीकृतकोकिलादिनिनदं कंसद्विषं कुर्वतो
द्वारोन्मोचनलोलशंखवलयकाणं मुहुःश्रृणवतः।
केयं केयमिति प्रगल्भजरतीवाक्येन दूनात्मनो
राधाप्राङ्गणकोणकोलिविटपिक्रोड़े गता शर्वरी।।

गोविन्ददासझाक जे फागुक गीत सब अछि से समेत श्रीमद्भगवतक छाया थिक। केवल हुनक बरहमासा टा एहन गीत अछि जाहिमे विशुद्ध श्रृङ्गार भेटैत अछि, ने ओहिमे राधा वा कृष्णक नाम अछि वे आध्यात्मिकताक आभास अछि। आओर गीत सबमे जँ राधाकृष्णक नाम कतहु नहिओ अछि तथापि
आत्मसमर्पणक भावना ततेक अछि जे ओहिमे आध्यात्मिकताक आरोप सुगम भए जाइत अछि, विशेषतः जखन ओहि भावक अन्यान्य पदमे मधुर-रसक अभिव्यञ्जन भेटैत अछि। अतएव वैष्णव-साहित्य-शास्त्रक अनुसरण, वैष्णव-साहित्यक प्रभाव ओ वैष्णव कविक भावानुवाद एहि कल्पनाकें दृढ़ करैत अछि जे छात्र गोविन्ददासक ई कृति थिक। प्रोढ़ पाण्डित्य प्राप्त कए केओ एहि रूपें प्रसिद्ध पदक अनुवाद नहि करत; कवित्वक यशक प्रेप्सु एना नहि कए सकैत अछि, ओ यदि करतो तँ यशस्वी नहि भए सकैत अछि। परन्तु जाहि स्थितिमे, जाहि उद्देश्यसँ, जाहि समाजक हेतु एहि गीतावलीक रचनाक कल्पना कएल अछि ताहिमे ई सब असङ्गत नहि प्रतीत होइत अछि प्रत्युत इएह पूर्ण सङ्गत जँचैत अछि।

ओ तँहि गोविन्ददासझाक गीतक प्रचार मिथिलामे नहि भेल। वस्तुतः मिथिलाक परम्परामे ई मधुर-रस परिचित नहि छल तें रसिक-समाजमे एकर आस्वादन कोना होइत ओ साधारण जनक हेतु ई गीत सब ततेक दुरूह छल जे ओहि समाजमे एकर प्रचारक आशा करबे व्यर्थ। ई सब तँ रचित भेल वैष्णव-जनक हेतु, ओ ताहू समाजमे कीर्तनमण्डलीमे गाओल जएबाक हेतु। परन्तु ई एक गोट ऐतिहासिक तथ्य थिक जे बङ्गालक कोन कोनमे चैतन्यक धर्म पसरि गेल, दूर वृन्दावन धरि एकर प्रचार होइत गेल, किन्तु मथिलामे चैतन्यक धर्मक कोनो प्रभाव नहि पड़ल। मैथिलक मानमर्दनक सङ्कल्प कए शिरोमणि जे साफल्य लाभ कएल ताहिसँ नवद्वीपक महिमा बढ़ल अवश्य, ओ मिथिलाक तेज मलिन भए गेल, परन्तु मैथिल पण्डित-समाज एहिसँ सब दिन क्षुब्ध रहल ओ विद्योपार्जनक हेतु मैथिललोकनि नवद्वीप जाथि तैओ बङ्गालक सङ्ग सांस्कृतिक सम्बन्ध दिनानुदिन छूटए लागल। गोविन्ददासझा अपन पद कीर्तनमण्डलीकें देथि ओ तें ओतहि ओकर प्रचार होइत गेल। मिथिलामे यदि ओहि पदसबहिक प्रतिलिपि अएबो कएल तँ ओ जतहि गेल ततहि पड़ल रहल। एतए ने वैष्णव समाज छल, ने कीर्तनक मण्डली छल, ने मधुर-रसक परिचय छल। इएह कारण थिक जे गोविन्ददासक रचना प्रचुरतया बङ्गालमे प्रचरित होइत गेल ओ मिथिलामे एकर कोनो प्रचार नहि भए सकल। स्वयं हिनक भागिन लोचन हिनकहि गाम रैआममे पढ़िकें पण्डित भेलाह ओ प्रायः हिनक परोक्ष भेलाक पर जे रागतरङ्गिणीमे मिथिलामे ख्यातगीतकें उदाहरण दए दए राग-रागिनीक परिचय

लिखल ताहिमे हिनक भाए हरिदासक एकटा गीत अछि परन्तु गोविन्ददासक कोनो गीत नहि अछि। स्पष्ट जे गोविन्ददासक गीत मिथिलाक ख्यात गीत नहि छल ओ तें एकरा दृष्टान्त देब लोचनक सङ्कल्पक विरुद्ध छल।

परन्तु मैथिल छात्र गोविन्ददासझाक ई सब रचना थिक ई कथा बङ्गालमे विस्मृत भए गेल एहिमे कोनो आश्चर्य नहि। गोविन्ददास बङ्गालक लोकप्रिय कीर्तन-पद-कार भेलाह एहिमे कोनो सन्देह नहि। तें क्रमशः मिथिलाक सांस्कृतिक सम्बन्धक विच्छिन्न भेलाक पर लोककें एकरा विसरि जाएब जे ई कीर्तनपदकार मिथिलाक छलाह पूर्ण स्वाभाविक छल। ओ लोकनि जखन विद्यापति समेतकें मैथिल नहि जानि सकैत रहलाह जे अपन गीत मिथिलामे रचल तँ गोविन्ददासक परिचय बिसरि जएबामे आश्चर्यक अवकाश कतए, कारण, गोविन्ददास तँ नवद्वीपहिमे गीत रचल। अनेको कवि ओतए गोविन्ददास नामक भेलाह ओ ताहिमे अन्यतमक सङ्ग एहि गीत-कारकें एक बूझि ओलोकनि हिनक ओहि रूपक परिचय देल। भाषाक दृष्टिसँ विचार कएलें मैथिल गोविन्ददासक पृथक्त्व स्पष्ट भए जाइत अछि ओ से गोविन्ददास इएह छलाह जनिक परिचय एतए देल अछि, ई मिथिलाक परम्परागत विश्वास निर्मूल नहि।

परन्तु सङ्गहि सङ्ग एहूमे सन्देह नहि जे गोविन्ददासझाक गीत मधुररसक काव्य थिक, वैष्णव कीर्तनसमाजक हेतु रचित भेल, ओ एकर प्रचार बङ्गालमे भेल। साहित्यमे देश-भेदक प्रभाव नहि होइत अछि। मिथिलाक कवि मैथिलीमे कविता रचि बङ्गाली समाजकें देल जतए ओकर आस्वादन भेल, आदर भेल, प्रचार भेल, तें ओ कवि अवश्य बङ्गालक कवि भेलाह। स्वयं विद्यापति तँ बङ्गालक कवि भेलाह कारण हुनको कविताक आस्वादन, आदर ओ प्रचार बङ्गालमे भेल। मिथिलाक ई गौरव थिक ओ हमरालोकनिकें
गोविन्ददासझाकें बङ्गालक लोकप्रिय महाकवि स्वीकार करबामे क्षति नहि, गौरवक अनुभव करबाक चाही। हमरालोकनिकें एतबए प्रतिपाद्य जे गोविन्ददासझा मिथिला-भाषामे कविता रचल ओ तकर प्रमाण हुनक रचना विद्यमान अछि। तें ऐतिहासिक तथ्यक आधार पर गोविन्ददासझाक व्यक्तित्वक जे चित्र एतए उपस्थित कएल अछि ताहिसँ परस्पर-विरुद्ध प्रमाणपुञ्जक सामञ्जस्य जँ सुधी-समाज समीचीन बुझथि तँ एहि पुरान समस्याक समाधान भए जाइत अछि।

५
कवीश्वर चन्दाझा

मैथिली-साहित्यक क्षेत्रमे कवीश्वर चन्दाझा बड़ उत्कुष्ट ओ यशस्वी कविक रूपमे सुप्रसिद्ध छथि। अपन रामायणक रचना कए ओ अमर भए गेल छथि, ओ जाधरि एहि भाषाक अस्तित्व अछि, मिथिलाक सद्म सद्मे आबालवृद्धवनिता हिनक रामायणक ललित पद गाबि गाबि हिनक यशःशरीरमे जरामरणक भय नहि आबए देत। परन्तु हिनक कृति केवल रामायण मात्र नहि अछि। विद्यापतिक पुरुषपरीक्षाक गद्य-पद्यमय अनुवाद कए ई प्रकाशित करओने छथि; हिनक चारि गोट कविता-संग्रह वाताह्वान, गीतसप्तशती, गीतिसुधा ओ लक्ष्मीश्वरविलास

प्रकाशित अछि। हिनक रचित महेशबानीक संग्रह प्रयागसँ स्वर्गीय डा० अमरनाथ झा प्रकाशित करओने छथि तथा आओरो महेशबानी तथा अन्यान्य छोट छोट कविताक संग्रह चन्द्रपद्यावलीक नामसँ राजपण्डित श्रीबलदेव मिश्र प्रकाशित करओने छथि। पचाढ़ी स्थानक संस्थापक महन्थ साहेबरामदासक कविताक संग्रह ई स्वयं सम्पादित कए प्रकाशित कएने छथि। मैथिली-साहित्यक क्षेत्रमे सबसँ प्रचुर कृति विद्यापतिक कहल जाइत अछि परन्तु कवीश्वरक कृति हुनकहुसँ कत अधिक प्रचुर अछि ओ केवल प्रचुरतहिक दृष्टिसँ देखलहु उत्तर प्रतीत होएत जे मैथिली-जगतमे कवीश्वरकें केहन प्रमुख स्थान प्राप्य थिकैन्हि।

परन्तु अत्यन्त खेदक विषय थिक जे कवीश्वरक प्रसङ्ग हमरा लोकनिक ज्ञान कतेक सीमित अछि, हुनक कार्यक महत्त्व हमरा लोकनि कतेक थोड़ जनैत छी, हुनक कृतिक गौरवसँ हमरा लोकनि कतेक अनभिज्ञ छी। रामायणक तीनि गोट संस्करणक बहार भए चुकल अछि परञ्च एहि रामायणहुक वैशिष्ट्यक प्रसङ्ग ओहिमे कोनहुमे किछुओ उल्लेख नहि अछि। काशीसँ ज्योतिषी श्रीबलदेव मिश्र कविवर चन्दाझा नामक एक गोट महत्त्वपूर्ण समीक्षाक ग्रन्थ लीखि प्रकाशित करओलें छथि परन्तु ओहूमे साधारण--अत्यन्त साधारण--गपसप छाड़ि कोनो मार्मिक विषय नहि अछि, कवीश्वरक जीवनक कोनो चित्र नहि अछि, रामायणक रचना ओ कोन आदर्शकें समक्ष राखि कएलैन्हि तकर चर्चो नहि अछि, अन्यान्य रचनाक उल्लेखो बड़ विरल अछि। डा० श्रीजयकान्त मिश्र अपन मैथिली-साहित्यक इतिहासमे अनेक ठाम कवीश्वरक रचनाक चर्चा कएल अछि ओ गत शताब्दीक अन्तिम भागकें ओ कवीश्वरक युग कहि हिनक महत्त्वक निर्देश मात्र कएल अछि परन्तु हिनक ओहि महत्त्वक ओहो दिग्दर्शन मात्रो नहि कराए सकलाह जाहि कारणें ओहि युगकें ओ कवीश्वरक युग कहल अछि। मिथिलाक पुरातत्त्वक प्रसङ्ग हिनक कएल काजक तँ ओ चर्चो नहि कएलैन्हि अछि। सबसँ आश्चर्य तँ ई जे हिनक जन्म ओ निधनक तिथिसमेत ओहो नहि दए सकलाह अछि जाहिमे आश्चर्यक कारण इएह जे अपन जन्मक तिथि धरि तँ कवीश्वर स्वयं अपन रचित वाताह्वानक अन्तमे देदए गेल छथि जे

शकाब्दे रामेशाननमुनिनिशानायकमिते
तपोऽच्छे सप्तम्यामधिगुरुदिनं चन्द्रकवितुः
जनुः इत्यादि

अर्थात् शाके १७५३ माघशुदि सप्तमी बृहस्पतिकें, तदनुसार २० जनवरी १८३१ ई० कें, चन्द्रकविक जन्म भेल छल। वस्तुतः कवीश्वरक रामायणक एक मात्र यथार्थ समीक्षा, जाहिसँ केवल कवीश्वरक प्रतिभा ओ हुनक रामायणक महत्त्व नहि प्रख्यापित होइत परन्तु जे हमरा साहित्यक समीक्षाक एक गोट नव मार्ग प्रदर्शीत करैत ओ हमर समीक्षा साहित्यक एक गोट अभिनव वस्तु होइत, हमर मित्र श्रीश्रीकृष्ण मिश्रजी स्वदेशमे आरम्भ कएने छलाह परन्तु दू अङ्कमे ओकर पूर्वरूपमात्र देखलाँमे आएल, तत्पश्चात् स्वदेशक सङ्हिं ओहो पुनि दर्शनपथसँ विलीन भए गेल ओ नहि जानि श्रीश्रीकृष्ण बाबू ओकरा कहिआ धरि समाप्त कए प्रकाशमे अनैत छथि। एम्हर आबि डा० श्रीललितेश्वरझा हिन्दीमे कवीश्वरक काव्यप्रतिभाक बड़ सुन्दर विश्लेषणात्मक निबन्ध लिखलैन्हि अछि परन्तु मौलिक अनुसन्धान ओहूमे परिमिते अछि।

तथापि कवीश्वरक रामायणक देशमे प्रसिद्ध अछि ओ हुनक कवित्व-ख्याति प्रसृत अछि।

एतए मुख्यतः हमरा कवीश्वरक काव्यप्रतिभा विवेचनीय नहि अछि यद्यपि अनुपदहिं ओकरो चर्चा करबे करब ओ देखाएब जे एहू दिशामे कवीश्वरक सेवा कोन रूपें स्तुत्य अछि, अनुकरणीय अछि। एतए हमरा मुख्यतः देखएबाक अछि जे मिथिला, मैथिल ओ मैथिलीक प्रसङ्ग अपन दीर्घ जीवनकालमे कवीश्वर कोन रूपें एकसर बराबरि अनुसन्धान करैत रहलाह ओ से कार्य ओ कोन कोन मार्गें कएल जकरे अनुगमनसँ ओ कार्य एखनहु फलद सिद्ध भए सकैत अछि।

सुधी-समाजकें ई कथा विदिते अछि जे कहबाक प्रायः हमरा प्रयोजन नहि अछि जे अनुसन्धानक काज--पुरातत्त्वक अनुसन्धानक काज--एक गोट व्यसन थिकैक ओ एक बेरि एहिमे पड़ला उत्तर ओ एकर रसक आस्वादन भेला उत्तर पुनि एहिसँ मुक्ति भेटब कठिन। छोट छोट विषय जकरा आन लोक तुच्छ बुझत एक गोट यथार्थ अनुसन्धानीक हेतु अपूर्व महत्त्वक भए जाइत अछि ओ तकर समाधानक हेतु ओकर चित्त व्याकुल रहैत छैक, समयक महत्त्व जेना ओकरा हेतु नगण्य भए जाइत छैक। हँ, तखन अनुसन्धानक मार्गमे पूर्णताक आशा करबे असङ्गत। कोनहु प्रसङ्ग मे यावतो विषयक समुचित समाधान कैएकें सिद्धान्त ख्यापित करब दोष थिक। ज्ञानक मार्ग कतहु अवरुद्ध नहि छैक, सबटा समाधान भेले ताकए से आवश्यक नहि छैक। अनुसन्धानक मार्ग प्रदर्शित भए गेलासँ अन्यो व्यक्ति ओहि मार्गक अनुसरण कए कतेक भ्रमक निराकरण कए सकत, कतेक नव नव समाधान देत, अनुसन्धानक कार्य विकासोन्मुख रहत, नव नव व्यक्तिकें उत्साह होएत--इत्यादि विषय अनुसन्धान-कार्यक हेतु मूल सिद्धान्त जकाँ बुझबाक थिक। एहि हेतु आवश्यक छैक जे अनुसन्धानी व्यक्तिकें से साधन प्राप्य रहैक जाहि द्वारा ओ अपन अनुसन्धानक फल समय समय पर प्रकाशित करओने जाए। हमरा लोकनिकें से साधन एखनहु नहि अछि, आइसँ साठि सत्तरि वर्ष पूर्व तँ से ककरहु मनःपथहुमे नहि आएल छलैक।

परन्तु छलाह धरि कवीश्वर अनुसन्धानक एहने व्यसनी। पूर्वक समाचार तँ हमरा निश्चित रूपसँ विदित नहि अछि परन्तु महाराजलक्ष्मीश्वरसिंह बहादुरक सभामे जखन ओ अएलाह तखनुक समाचार हमरा अनेको बेरि अपन मातुल स्वर्गीय म० म० डा० सर गङ्गानाथझाक मुहसँ सुनल थिक जे कोनरूपें कवीश्वरक जीवन केवल मिथिला, मैथिल, ओ मैथिलीक प्रसङ्ग अनुसन्धान करैत, एकरे चर्चा करैत, एकरे भावना करैत बितए। हुनक जीवनक जेना कोनो दोसर लक्ष्ये नहि रहैन्हि। मनोविनोदक हेतु, स्वान्तःसुखाय, ओ कविता रचथि, सेहो अपन आराध्य देव शिवजीक वन्दनामे, अथवा देशक विकारल दशापर, ओ शेष समय ओ केवल पुरातत्त्वक अन्वेषण कार्यमे, एकरे चिन्तनामे, एकरे भावनामे बितबथि। आओर की, नेओत पूरए जाथि ओ सुनथिन्ह जे अमुकक घरमे प्राचीन पोथी छैक तँ बाटसँ फराको रहैक तथापि ओतए जाए पोथी देखि ओकर सूची बनाए राखि लेथि, कोनहु प्राचीन मन्दिरक नाम सुनथिन्ह तँ ओतए जाए देवताक दर्शन कए चारू दिशि ताकए
लागथि जे किछु प्राचीन वस्तु तँ ने ओतए छैक। मिथिलाक पुरातत्त्वक विषय तँ ताहि दिन परम्परया श्रुते छल, लिखित तँ एमहर आबिकें किछु भेल अछि परन्तु से श्रुत विषयक जङ्गमे भण्डार कवीश्वर छलाह ओ ताहि प्रसङ्ग हिनक संलग्नता, मनःप्रवेश ओ ऊहिक भूरि भूरि प्रशंसा हमरा अपना मामक मुहसँ अनेको बेरि सुनल थिक।

परन्तु अत्यन्त खेदक विषय थिक जे से भण्डार कवीश्वर, अधिकतया, अपना सङ्गहिं लेने

चल गेलाह। हम कहल अछि अधिकतया, कारण, किछुओ ओ लीखि नहि गेलाह से बात नहि अछि, कमसँ कम नव नव जे विषय हुनका उपलब्ध होइन्ह से ओ अपन नोट-बहीमे लिखने जाथि; अपना ऊहिसँ जे विषय ओ बहार करथि सेहो अपना बहीमे लीखि लेथि ; ग्रन्थाकारहु ओ कए गोट विषय लिखब आरम्भ कएल जे प्रायः नवीन विषयक उपलब्धीक भरोसँ अथवा कोनहु शङ्काक दुरूहतें अपूर्ण रहि गेल। सेहो सब खिष्टा रूपमे बहीमे अवश्ये लिखल होएत। परन्तु प्रकाशित धरि ओ बड़ थोड़ विषय कए सकलाह। रामायणमे ओ महाराज महेशठाकुरक मैथिली गीत ओ सँएतालीस गोट मैथिलीक कविक नाम मात्र दए सकलाह; पुरुषपरीक्षामे टिप्पणीक रूपमे ओ दश पाँच गोट अपूर्व कथा लीखि गेलाह जे अन्यथा जानल नहि थिक, साहेबरामदासक गीतक संग्रहक सङ्ग सङ्ग ओ पचाढ़ी स्थानक इतिहास दए गेलाह। विद्यापतिक रचनाक संग्रह समस्त मिथिला घूमि घूमि जे ओ कएल ताहिमे गीत अंश स्वर्गीय नगेन्द्रनाथगुप्त महाशय प्रकाशित कराओल; गोविन्दासझाक गीतक जे संग्रह कएल से एमहर आबि अमरनाथ बाबू श्रृङ्गार-भजन-गीतावलीक नामसँ प्रकाशित कराओल। हँ, विद्यापतिक हाथक लिखल भगवातक पोथी धरिक पता इएह लगाओल, ओकरा ताकि कें बहार कराओल जे भाग्यसँ दरभंगा राजकीय पुस्तकालय मध्य, आब संस्कृतविश्वविद्यालय मध्य, सुरक्षित अछि। प्रकाश रूपमे कवीश्वरक कएल पुरातत्वक अनुसन्धान एतबए उपलब्ध अछि। ई थोड़ नहि से अवश्य, परन्तु हिनक एतबए कृति नहि छैन्हि ओ हमरा स्वयं जे हिनक कतोक लेख हस्तगत भेल अछि, हिनका प्रसङ्ग कतोक लिखल भेटल अछि, तथा हिनक उपलब्ध लेखक आधार पर हिनक कएल अनुसन्धानक विभिन्नता ओ विशालताक जे अनुमान करैत छी ताहिसँ स्पष्ट होइत अछि जे कवीश्वरक कार्यक्षेत्र कतेक विस्तीर्ण छल, हिनक प्रतिभा केहन सर्वतोमुखी छल।

एहि प्रसंग इहो कहब अप्रासंगिक नहि होएत जे कवीश्वरक प्रादुर्भाव समुचित समयमे नहि भेल। महाराज लक्ष्मीश्वर सिंह बहादुरक सदृश उदाराशय प्रभु भेटलथिन्ह से हिनक सौभाग्य अवश्य ओ हुनके उदार गुणग्राहितासँ समुत्साहित भए ई अपनाकें एहि रूपें एहि कार्यमे संलग्न राखि सकलाह। परन्तु महाराज बहादुर बहुत दिन धरि राज्य नहि कएलैन्हि; ताहूमे पश्चात हुनक स्वास्थ्य ततेक अधलाह भए गेलैन्हि जे क्रमशः उत्साह क्षीण होअए लगलैन्हि। रहबो करथि राजधानी मध्य ओ थोड़ काल ओ सार्वजनिक कार्यक संकुलतामे थोड़ समय बचाए सकथि जखन साहित्यिक चर्चा हो। अतएव कवीश्वर आरम्भ तँ कएल बड़ उत्साहसँ ओ अनुसन्धानक फलक रसास्वाद कए ओहिमे संलग्न रहलाह भरि जन्म, परन्तु हुनका तादृश केओ पोषक नहि भेटल, सहायक नहि केओ भेल, समर्थक थोड़ लोक भेल, हुनक कार्यक रस बुझनिहारो बड़ विरल भेल। कवीश्वरहिक कार्यसँ मुग्ध भए, हुनकहिसँ प्रोत्साहन पाबि, एहि शताब्दीक आरम्भमे एतए दड़िभंगामे एक गोट मिथिलानुसन्धान-समितिक सेहो स्थापना भेल छल जकर प्राण छलाह स्वर्गीय चेतनाथ झा प्रसिद्ध कृष्णजी बाबू ओ मन्त्री छलाह स्वर्गीय बाबू केशी मिश्र। एकर प्रमुख सदस्य छलाह स्वर्गीय वक्शी जी, गणनाथ बाबू, मुन्शी रघुनन्दन दास, ओ बाबू तुलापति सिंह साहेब। इहो लोकनि थोड़ काज नहि कएल परन्तु युगे ओ तेहन छल जे शिक्षितो समाजसँ हिनका लोकनिकें प्रोत्साहन नहि भेटल जकर फलस्वरूप इहो समिति पश्चात् भग्न भए गेल ओ पाछाँ तँ ई लोकनि अपनहु एकरा "मुर्दा क्लब" कहए लगलाह, कारण, हिनका लोकनिक संलग्नता पुरान वस्तुक दिशि छल, जीवनक संघर्षसँ ई लोकनि दूर रहैत छलाह। यदि कवीश्वर ततबा पूर्व प्रादुर्भूत भेल रहितथि जे महाराज लक्षमीश्वसिहं वहादुरक

राजत्वकालक आदि भागहिमे हिनक अनुसन्धानक फल प्रकाशनीय रहैत अथवा यदि महाराज बहादूरहिकें से स्वाश्थ्य, अवकाश, ओ अभिनिवेश रहितैन्हि तँ निश्चय ओहन
उदाराशय ओ गुणग्राही प्रभुक ओतए हिनक कार्यक उचित सम्मान होइत, हिनका सहायता भेटैत, प्रोत्साहन होइत, ओ मिथिलाक स्वरूप आइ दोसर रंगक रहैत, कमसँ कम मैथिलीक स्नीकृति तँ ताहि दिन भए गेल रहैत ओ जेना हिन्दी हमरा लोकनिक ऊपरमे लादि देल गेल से धरि तँ नहिए होइत। अथवा यदि कवीश्वर पचासो वर्ष पछाति प्रादुर्भूत होइतथि तँ निश्चय शिक्षाक प्रसारसँ हिनक काजक गुण बुझनिहार बेशी लोक होइत, जनताक दिशिसँ हिनक काजक समर्थन होइत, हिनक यश एना क्षुण्ण नहि होअए पबितए। परन्तु से तँ भेल नहि। कवीश्वर एकाकी अपन काज करैत रहलाह ओ बड़ थोड़ लोक जे हिनकासँ घनिष्ठ सम्बन्धमे छल, हिनक प्राप्त छल, सएह टा हिनक कार्यक मर्म बूझि सकल, हिनका प्रोत्साहन दैत रहल। ओना तँ विशुद्ध अनुसन्धानक मर्म बुझनिहार एखनहु विरले अछि, ताहि दिन तँ सहजहिं गनले गूथल छल।

ओना तँ कवीश्वरक नाम, यश ओ हुनक रामायणक पद सब जहिअहिसँ ज्ञान भेल तहिअहिसँ सुनैत आएल छी। कवीश्वरकें हमरा मातृकसँ बड़ घनिष्ठ सम्पर्क। ओहि युगक प्रायः बहुतो पैघ पण्डितकें ससे सम्बन्ध, यथा म. म. जयदेवमिश्र, म.म. रज्जेमिश्र, कवीश्वर चन्दाझा, कारण, हमर मातृमातृक गन्धबारि ड्यौढ़ीसँ बहुतो पण्डितकें पाठावस्थहिसँ जीविका भेटैन्हि तें कवीश्वरसँ हमरा माम लोकनिकें आत्मीयता। रामायणक बहुतो पद तें हमरा अबोधावस्थाहिसँ अपना माइक मुहसँ सुनल। तथापि कवीश्वरक एहि दिशामे कृतित्वक प्रथम आभास हमरा हिनक रचित महेशबानी-संग्रहक भूमिकामे भेटल जाहिमे हमर माम स्वर्गीय डाक्टर (पछाति सर) गङ्गानाथझा लिखैत छथि :-

"जाही दिन मिथिलाभूषण कविवर चन्दाझाक मृत्युक समाचार पाओल ताही दिन हम अपन पूज्यपाद ज्येष्ठ भ्राता स्वर्गीय विन्ध्यनाथ बाबूक ओतए प्रार्थनापत्र पठाओल जे कवीश्वरक गीत ओ मिथिला तथा मैथिल ब्राह्मणक पुरावृत्तक प्रसङ्ग जे उक्त कवीश्वर बहुत लिखने छलाह तकर संग्रह कराए जाहिसँ ओ सब प्रकाश भए जाए से करैक चाही। हमरा भाइक पत्रोत्तर आएल जे चन्दाझाक लिखल जे किछु छलन्हि से सब पोथा श्रीमिथिलेशक आज्ञानुसार म.म. पण्डित परमेश्वरझाक "जिम्मा"कएल गेलैन्हि अछि ओ छपएबाक प्रबन्ध करएबाक आज्ञा भेटलैन्हि अछि। ताही दिनसँ एकर बाट तकैत छी। मिथिला-पुरातत्त्वक विषय कदाचित् मिथिलातत्त्वविमर्श-रूपें प्रकाशित भेल हो ई सम्भव परन्तु गीतावलीक एखन धरि कतहु पता नहि।"

ई कथा १९२१ क थिक। मिथिलातत्त्वविमर्श पूर्वमे प्रकाशित होअए लागल छल अवश्य, परञ्च समग्र तँ इएह चौदह पन्द्रह वर्ष भेलैक अछि छपल अछि। म.म. मुकुन्दझा वक्शीक इतिहास प्रकाशित भए गेलाक पर एहि मिथिलातत्त्वविमर्शक महत्त्व हमरा हेतु थोड़ रहि गेल अछि। हमरा विश्वास अछि जे यदि एकर निर्माण कवीश्वरक अनुसन्धानक आधार पर भेल तँ से कवीश्वरक खिष्टाबहीसँ, ओकर टिप्पणी-सबहिक संकलन मात्र कएकें। पूर्णरूपसँ पल्लवित कए कवीश्वर एकरा लिखने नहि छलाह। परन्तु जेहो, कवीश्वरक "पोथा" सब की भेल से पता नहि।

हुनक गीतावलीक प्रकाशन राजप्रेससँ एमहर आबि चन्द्रपद्यावलीक नामसँ भेल अछि परञ्च ओकरो आधार, कवीश्वरक पोथा, कतहु दृष्टिपथमे नहि आएल अछि। बूझि पड़ैत अछि जे जतहि हुनक "पोथा" पड़ल ततहि ओ पड़ले रहि गेल। एकर फल ई भेल जे कवीश्वरक यश तँ विलाइत लागल, समाजक ज्ञानवृद्धिक एक गोट विलक्षण साधन लुप्त भए गेल। एहि "पोथा" सबमे रङ्ग विरङ्गक वस्तु सङ्गहि सङ्ग भेटत। इतिहास, साहित्य, परिचय, विचार सब कथूक सम्मिश्रण हिनक अपन रचनाक सङ्ग सङ्ग तेनाकें मिझराएल छैन्हि जे सबकें फराक कए प्रकाश कएला उत्तर ओहिसँ अनेक विलक्षण वस्तुक अवगति भए जाएत। मिथिलाक इतिहासक ई एक गोट अत्यन्त दुःखद घटना थिक जे कवीश्वरक ई "पोथा" सब एहन अनुसन्धानी व्यक्तिक हाथमे नहि पड़ल जे एहिमे निहित रत्नक सञ्चय करबाक श्रम करितए।

आब बारह वर्षसँ भपर भेलैक, १९५०क गप्प थिक, जे कवीश्वरक अपन हाथक लिखल रामायणक
पोथी एवं अन्यान्यो अनेक रचना ओ लेख देश ओ विदेशसँ संगृहीत कए जखन हम एक दिन स्वर्गीय स्वनामधन्य अमरनाथबाबूकें कहलिऐन्हि तँ ओ बड़े उत्सुकता एवं सन्तोषसँ हमर काजक विवरण सुनलैन्हि आ कहलैन्हि जे कवीश्वरक दू किंवा तीनि गोट पोथा हुनकहु सङ्ग छैन्हि जाहिसँ गोविन्ददासक पद सबकें तँ उतारिकें ओ श्रृङ्गार-भजन छपाओल परन्तु ओहिमे आओरो अनेक विषय छैक जकर सङ्कलन कएलासँ मिथिलाक पुरातत्त्वक कतोक रहस्य उद्घाटित भए जाएत ओ से ओ ताकिकें हमरा पठाए देताह। अमरनाथबाबू अनेक कार्यमे अतिव्यस्त रहथि ओ आब तँ एहि लोकमे ओ छथिओ नहि। हम एकरा अपन अकर्मख्यता बुझैत छी जे ओ पोथा सब हमरा बुतें लेल नहि भेल। परन्तु तावत् हमर साहित्य-गुरु कविशेखर श्रीबदरीनाथझाजी सएह हमरा कवीश्वरक लिखल दू गोट खिष्टाबही देल--इएह डा० झाक शब्दमे आब बुझैत छी जे "पोथा" भेल-जे कतोक दिनसँ हुनका सङ्ग छलैन्हि ओ कतएसँ प्राप्त भेलैन्हि से हुनकहु स्मरण नहि छैलन्हि। एहिमे एकटामे विद्यापतिक सए डेढ़ेक गीत कवीश्वरक अपना हाथें लिखल अछि जाहिमे शतावधि, विशेषतः नचारी ओ कूट, एखन पर्यन्त अप्रकाशित अछि। सबसँ महत्त्वक विषय एहि संग्रहमे ई अछि जे ठाम-ठाम एहिमे कवीश्वर टिप्पणी लीखि देने छथिन्ह जे आब पुनि केओ नहि कहि सकैत अछि, तथा कूटक गीत सबहिक अर्थ लगएबाक सङ्केत अछि। टिप्पणीक एक गोट दृष्टान्त पर्याप्त होएत। मानक प्रसिद्ध गीत "अरुण पुरुब दिशि बहल सगर निशि"--इत्यादि विद्यापतिक गीतक संग्रहमे देखि अनेक बेरि मनमे होइत छल जे नगेन्द्रनाथ गुप्तजी एकरा भ्रमसँ विद्यापतिक रचना मानल अछि, ई गीत तँ पारिजातहरणमे अछि, उमापतिक थिकैन्हि। कवीश्वर ई गीत विद्यापतिक भनिताक सङ्ग अपना बहीमे लीखि नीचामे टिप्पणी करैत छथि :-

"ई गीत म.म. उमापतिझाक कृत पारिजातहरण नाटकमे उदाहृत अछि परञ्च शाके १३१०क लेख तालीपत्रमे देखल ताहिसौं निश्चित भेल जे कवि विद्यापतिक थिक।"

खेद जे कोन तालीपत्रक लेखमे ई भेटलैन्हि से कवीश्वर नहि देलैन्हि परन्तु तैओ एहि टिप्पणीक कतेक महत्त्व भेल से हम एतए नहि कहए लागब, मैथिली-साहित्यक वेत्ताकें से

कहबाक प्रयोजन नहि अछि। दोसर जिल्दमे रङ्ग-विरङ्गक विषय भरल अछि, अपन खरचओटासँ लए रचना धरि तथा अनेक ऐतिहासिक व्यवस्था ओ छोट-छोट वार्त्ता एहिमे यत्र-तत्र भरल अचि। एहिसँ एक गोट मात्र दृष्टान्त एतए देब पर्याप्त होएत। १८९१ ई०क ३० दिसम्बरकें कवीश्वर एक मासक फुरसति लए गाम दिशि गेलाह ओ सोनवर्षाक राजासाहेबक ओहिठामसँ पाता छलैन्हि से नेओत पूरए गेलाह। भरि मासक डाइरी कवीश्वर एहि बहीमे लिखलें छथि जे समस्त पढ़बाक योग्य अछि परन्तु हम ओकर २८ जनवरी १८६२ माघ १४ बृहस्पति दिनुक लेख एतए उद्घृत करैत छी:-

"सोनबरिसासौं श्रीमन्महाराजाज्ञासौं सबारी भेटल। राजीपन्ना आबी, श्रीचण्डीमाताक दर्शन करी, प्रस्तर एक चौकठि जे पुरान बड़क गाछ मठ बनैक समय काटल गेल छल ताहि तर उखड़ल जाहि खम्भामे लेख तिरहुता अक्षरमे--

श्रीमन्माहेश्वरीवरलब्ध-समस्तप्रक्रियाविराजमान-युद्धेशवंशकुमुदानन्दचन्द्र-
राजश्रीमत्सर्वसिंहदेवारिविजयी ल.सं.२०० कतेक छल।"

एहि यात्रामे कतए-कतए वर्ष भरिक पाताक नेओत पूरल, कतए की बिदाइ भेल, कतए कोन शास्त्रीय चर्चा भेल, कतए कोन कोन तालीपत्रक पोथी देखल, सोनवर्षामे केहन-केहन रम्य भोजन भेटल इत्यादि विषयक सङ्ग ई एक गोट शिलालेखक उल्लेख कतेक महत्त्वपूर्ण अछि से कहबाक प्रयोजन नहि। एहिना कतेक वस्तु एहि पोथामे भरल अछि। अनुमान कए सकैत छी जे कवीश्वरक सबटा पोथाक संग्रह कए सबटामे जे छीटफूट विषय उल्लिखित अछि सबहिक वर्गीकरण कए सबटा क्रमबद्ध लिखल जाए तँ से कोन रूपक वस्तु
होएत, मिथिला-मैथिल-मैथिलीक पुरातत्त्वक कतेक अन्धकार ताहिसँ दूर भए सकत, कवीश्वरक यश कतेक निर्मल भए देशक अज्ञान-तिमिरकें बिलाए सकत !

प्रथम मैथिलीक क्षेत्रकें लिअ। कवीश्वरक अपन रचनाक उल्लेख पूर्वहिं कएल गेल अछि परन्तु से केवल प्रकाशितक। हुनक कए गोट ग्रन्थ अप्रकाशितो सुनल थिक यथा अहल्याचरित नाटक। कहल जाइत अछि जे प्रारम्भावस्थामे मिथिला-मिहिरमे ई नाटक छपए लागल छल परन्तु हम आयासो कएल अछि तथापि से कतहु देखि नहि सकलहुँ। यदि ओ एकर रचना कएल तँ ओकर लेख कतहु अवश्य होएत, सम्पूर्ण नहिओ भेल होएत तथापि अपूर्ण ओ कोनहु पोथामे अवश्य होएत। आशा तँ इएह कएल जाए सकैत अछि जे म.म. परमेश्वरझाक जिम्मा जे पोथा सब कएल गेलैन्हि से राजलाइब्रेरीमे हो परन्तु ओतए पचीस वर्षक अवधिमे हमरा कवीश्वरक दू गोट व्यवस्था-पत्र छाड़ि आओर किछु नहि देखलामे आएल। आतएव एहि नाटकक कोनो पता नहि लगैत अछि। तहिना राजावालीक नाम सेहो सुनलॉमे आएल अछि जँ एहिमे मिथिलाक राजालोकनिक वर्णन अछि तखन तँ ई मिथिलाक इतिहास भेल। कवीश्वरक एक गोट पोथामे हमरा "मिथिलेतिहास"क प्रारम्भ भेटैत अछि जाहिमे मङ्गलाचरणक पश्चात्क श्लोकमे अछि

सकलगुणनिवासं तीरभुक्तीतिहासं
लिखति सुकृतकर्मा मैथिलश्चन्द्रशर्मा।।

तथा चौपाइसँ आरम्भ कए महाराज जनकक पदवीक हेतु तथा जनक-शब्दार्थक विवेचना मात्र, मुदा से अंश गद्यमे अछि। एहिसँ भान होइत अछि जे एकर रचना चम्पूक रीतिसँ ओ करितथि। जँ ओ एहि विषयमे आओर लिखल तँ से कोनहु आन पोथामे होएत। परन्तु एहि विषयक लेख मिथिलातत्त्व-विमर्शमे आबि गेल हो तँ कोनो आश्चर्य नहि। पुनः सुनैत छी जे कवीश्वर मैथिल-ब्राह्मणक मूलग्रामक वर्णनात्मक निबन्ध लिखने छलाह। मूलग्रामक कहिकें तँ नहि परन्तु मिथिलाक गामसबहिक परिचय अक्षराक्रमें हिन्दीमे लिखल तीन पत्र मात्र हमरा एक गोट "पोथा" मे बीचमे राखल भेटल अछि जाहिमे पत्रसंख्या १३-१४-१५ अछि ओ इजोत, इजरा बसौली, इजरा कन्दर्प, उमगाम, उफरौली, उसथुआ, ऊटी, ऋगा, एहु, एकमा बभनगामा, एकमीघाट वागमती नदी, एकहर, ओ ओइनी, बस इएह बारह गोट गामक परिचय अछि। छीटफूट गामक प्रसङ्ग लेख अन्यत्रहु भेटल अछि परन्तु क्रमबद्ध इएह तीनि गोट पात भेटल अछि जाहिमे भाषा हिन्दी ध्यान देबाक थिक। तहिना मैथिलीक छन्दोविषयक कवीश्वर विशेषज्ञ छलाह। एहि प्रसङ्ग आगाँ चर्चा करैत छी परन्तु ग्रन्थ एहू प्रसङ्ग कोनो देखलाँमे नहि आएल अछि।

कवीश्वरक रचना, फुटकर गीत, कवित्त, कुण्डलिया प्रभृति अनेको एखन धरि प्रकाशित नहि भेल अछि। जे "पोथा" प्रकाशमे नहि आएल ताहि मध्यक लिखल रचना पड़ले रहि गेल। हमर "पोथा" मे तत्समयक देश-दशाक बड़ विलक्षण चित्रण भेटैत अछि। सर्वे सेट्लमेन्टक समयक हिनक दू गोट कुण्डलिया, हमरा जनैत अप्रकाशित, एतए देखल जाए।

घर घर चिन्ता अन्नको कौन सुनै दुख कान।
ता पै बन्दोवस्त नव भयो चहत भगवान।।
भयो चहत भगवान अमीनी टिट्टी ऐहें।
जमीदार ओ कृषक लोग निर्धन ह्वै जैहें।।
भनत चन्द्र आनन्द कहाँ जिव काँपत थरथर।
भजन भावको छोड़ नापकी चरचा घर घर।।
पटु पटबारी धरमधुज तहसिलदार अमीन।
सत्यधर्मव्रत जगतको इनको दया अधीन।।
इनको दया अधीन तीन वञ्चक नहि होता।
कहीं न लेता घूस स्वामिको स्वत्व न खोता।।
भनत चन्द यह सुखी सदा परवित्तविहारी।
कपट न कागत लिखत होत जो पटु पटबारी।।

एहि दूहू कुण्डलियाक भाषा मिथिलाक हिन्दी थिक। एहिना पुरुषपरीक्षाक भूमिका हिन्दीमे अछि, रामायणहुमे किछु अंश एही हिन्दीमे अछि, मिथिलाक गामसबहिक परिचय सेहो एही हिन्दीमे कवीश्वर लिखए लागल रहथि। एकर कारण स्पष्ट अछि। कवीश्वरक रचना काल धरि अर्थात् महाराज लक्ष्मीश्वरसिंहक राजत्वकालमे हिन्दी एतएक भाषा निर्धारित कए देल गेल छल। हिन्दी एतए केहन छल तकर प्रमाण हिनके गद्य ओ पद्य अछि परन्तु व्यापकरूपें अपन

रचनाक प्रचार हो तदर्थ कवीश्वरकें हिन्दीक शरण लेअए पड़ल। कोर्ट्स आफ वार्ड्सहिक समयमे राजदरभंगाक व्यावहारिक भाषा हिन्दी भए गेल छल। महाराजकुमार बाबू गुणेश्वरसिंह साहेब जे शुभङ्करपुरमे विशाल मन्दिर बनबाओल तकर शिला-लेख हिन्दीमे अछि। व्रजभाषाक प्रचार राज-दरबारमे पूर्ण छल ओ जे नहिओ जनैत छल सेहो एहि भाषामे बजबाक हेतु वाध्य होइत छल। भाषाक क्षेत्रमे हमरालोकनिक दुर्दशाक आरम्भे हिनकहि समयसँ होइत अछि ओ जे कथा हम पूर्वहुँ कहि आएल छी महाराज लक्ष्मीश्वरसिंह बहादुरक समयसँ पूर्वक शतावधि वर्ष मिथिलाक संस्कृतिक हेतु ह्रासक युग छल। हिनके भाषा एहि कथनक ज्वलन्त उदाहरण थिक जे मिथिलाक भाषा हिन्दी कहब कतेक न्याय्य भेल ओ एखनहु थिक।

ई तँ भेल हिनक अपन रचना। प्राचीन मैथिली-साहित्यक ई केहन ज्ञाता छलाह ओ ताहि क्षेत्रमे हिनक अनुसन्धान कोन रूपक स्तुत्य छल तकर आभास निम्नलिखित उद्धरणसँ होएत जे स्वर्गीय नगेन्द्रनाथगुप्तजी अपन विद्यापति-पदावलीक भूमिकामे लिखैत छथि--

"किन्तु यिनि सकलेर अपेक्षा आमार कृतज्ञता-भाजन, याँहार सहायता ना पाइले एइ ग्रन्थ प्रकाश करा असम्भव हइत, तिनि इहलोक त्याग करिया गियाछेन। स्वर्गीय कवीश्वर चण्डाझा (चन्द्रकवि) विद्यापतिर पदावली सम्बन्धे अद्वितीय तत्त्वविद् एवं अर्थपारदर्शी ओ मिथिला-भाषाय स्वयं सुकवि छिलेन। यखन आमि पदावलीर सम्पादन आरम्भ करि तखन ताँहार वयस ७५ वत्सर तथापि तिनि असीम उत्साहेर सहित एइ कार्य योगदान करेन। पदावली संग्रह करा, कठिन शब्दादिर अर्थ प्रभृति सकलइ तिनि करेन। विद्यापतिर भाषाय तिनि आमार शिक्षागुरु।"

नगेन्द्रनाथ गुप्तहुसँ पूर्व स्वर्गीय शारदाचरणमित्र महाशयक सङ्ग कवीश्वर घुमल छलाह, विद्यापतिक पद एकत्र कएने छलाह, ओ विद्यापतिक अपना हाथें लिखल भागवतक पोथी मित्रमहाशयकें देखाए हुनक सन्देह दूर कए देने छलाह जे विद्यापति मैथिल छलाह अथवा बङ्गाली ! तथापि विद्यापतिक कतेको पद एखनहु कवीश्वरक पोथामे भेटल अछि जे अद्यापि प्रकाशित नहि अछि। परन्तु से केवल विद्यापतिहिक टा कहाँ? गोविन्ददासझाक गीतक प्रथम सङ्कलयिता इएह थिकाह, महन्थ साहेबरामदासक रचनाक संगृहीता इएह थिकाह से कथा हम पूर्वहिं कहि आएल छी। पुनि, विद्यापतिक पदावलिहिक टा नहि, विद्यापतिक प्रायः समस्त रचना हिनका उपलब्ध भए गेल छल। लिखनावलीक प्रकाशन जे स्वर्गीय म.म.डा. गङ्गानाथझा एतएसँ कराओल ताहिमे हिनके हाथ छल। विद्यापतिक कीर्तिलता नेपालसँ आनि म.म. हरप्रसादशास्त्री जे बङ्गलामे प्रथमहि छपाओल ताहिसँ बीस वर्ष पूर्वहिं ८ फरवरी १९०५ ई०कें कलकत्तामे कवीश्वर ओकरा अपना हाथें
लीखि महामना ग्रिअरसनसाहेबकें देल दे सम्प्रति इण्डिआ आफिसक लाइब्रेरीमे अछि ओ जे देखला उत्तर कीर्तिलताक प्रकाशित संस्करण सब तुच्छ बुझि पड़ैत अछि। हँ, कीर्तिपताकाक पता हिनका नहि छल ने गोरक्षविजय नाटकक ओ ज्योतिरीश्वर ठाकुरक वर्णरत्नाकरक सेहो दर्शन नहि भेल छल यद्यपि एहू, प्रसङ्ग एतबा हिनका ज्ञात छल जे हुनक एक गोट गद्यग्रन्थ खण्डित रूपमे कतहु अछि। लोचनक रागतरङ्गिणीक प्रतिलिपि ई अपना हाथें शाके १८१० पौषकृष्ण पञ्चमी सोमकें ठाढ़ीमे कएने छलाह जे पुस्तक हमरा एखन पर्यन्त हस्तगत नहि भेल

अछि परन्तु ओकर प्रतिलिपि बाबू श्रीगङ्गापतिसिंह साहेबक कएल हमरा सड़ग अछि ओ जकर उपयोग पटना विश्वविद्यालयसँ जे रागतरङ्गिणी प्रकाशित भए रहल अछि ताहिमे कएल गेल अछि। रामायणक अन्तमे जे सँएतालीस गोट मिथिलाभाषाक कविक नाम उल्लिखित अछि ताहिमे बहुतोक तँ कृतिक नाम समेत देल अछि ओ ताहिमे कए जनक परिचय ठाम ठाम हिनक लिखल देखि पूर्ण विश्वास होइत अछि जे ई प्रायः ओहि सब महापुरुषक परिचय जनैत छलाह ओ सबहिक रचना देखने छलाह, नहि तँ ई नाम सब ओ कोना दितथि। हमरालोकनि एखनहु ओहिमे कतोकक कोनो पता नहि जनैत छी। डा० श्रीजयकान्तमिश्रजीक इतिहासमे ओहि सूचीक कए जनक कोनो परिचय अथवा उल्लेख समेत नहि अछि। एतावतैव सिद्ध अछि जे वर्णरत्नाकर, कीर्तिपताका ओ गोरक्षविजयक किछु विशेष परिचय छाड़ि कवीश्वरक समयसँ अद्यपर्यन्त मैथिली-साहित्यक इतिहासक अनुसन्धान मध्य कोनो प्रगति नहि भेल अछि। एहि पचास-साठि वर्षमे हमरालोकनि एहि दिशामे किछुओ नव काज नहि कएल अछि प्रत्युत कवीश्वर जे किछु विनु लिखलें चल गेलाह से ज्ञान नष्टे भए गेल। खेद एतबए जे मैथिलीक प्राचीन साहित्य जे हिनका उपलब्ध छल से ई प्रकाशित नहि कए सकलाह? परन्तु लिखलो हिनक की सब अछि से सबटा कहाँ जनैत छी? तथापि जएह प्रकाशित अछि अथवा उपलब्ध अछि ततबहुसँ ई कहबामे कनेको तारतम्य नहि होइत अछि जे मैथिली-साहित्यक ज्ञाता एहि शताब्दीमे कवीश्वरसँ पैघ दोसर नहि भेल अछि; मैथिली-साहित्यक अनुसन्धान कार्य आइधरि हिनकासँ अधिक दोसर नहि कए सकल अछि; मैथिली-साहित्यक विकासक मार्गमे हिनकासँ अग्रसर आइ धरि दोसर नहि रहल अछि।

दोसर विषय अछि मैथिलीक छन्द, जकर ज्ञाता, जकर तत्त्वक वेत्ता एमहर कवीश्वरसँ पैघ दोसर नहि भेल अछि। केवल रामायणमे ओ गीतकें छाड़ि गोट अस्सिएक छन्दक प्रयोग कएलें छथि जाहिमे संस्कृत ओ प्राकृत दुहूसँ रङ्ग विरङ्गक छन्द सबहिक दृष्टान्त संकलित अछि। हिन्दी-साहित्यमे कवि केशवदास अपन रामचन्द्रिकामे छन्दक विन्यास देखओलें छथि परन्तु कवीश्वरक विन्यास हुनकासँ विशेष हृद्य अछि। केशवदास बड़ शीघ्रतासँ छन्दक परिवर्त्तन करैत छथि जेना हुनका इएह प्रदर्शित करब इष्ट रहैन्हि जे हम छन्दक कतेक प्रभेद जनैत थी। कवीश्वर अपन रामायणमे मुख्यतः चौपाइक प्रयोग कएलें छथि परन्तु मध्य मध्यमे स्वरभेदक उद्देश्यसँ आन छन्दक प्रयोग कए ओ अपन पाण्डित्य एहि रूपें प्रदर्शित कएल अछि जाहिमे कृत्रिमताक भान नहि होइत अछि मुदा ॡङ्क्षिं सङ्ग एहि विषयमे हुनक कौशल ओ उत्कर्ष सेहो स्पष्ट भए जाइत अछि। एहि विषयमे हिनक पाण्डित्यक प्रकर्ष देखि ई सर्वथा सङ्गत बूझि पड़ैत अछि जे ई मैथिलीक छन्दोविषयक कोनो निबन्ध सेहो लिखने होथि ओ से यदि उपलब्ध होइत तँ ताहिसँ मिथिला-भाषाक छन्दहिक टा नहि अपितु मैथिल सङ्गीतहुक प्रसङ्ग बहुत रास रहस्य प्रकट भए जाइत। मैथिलीक हेतु ई बड़ महत्त्वपूर्ण विषय अछि ओ केवल रामायणहिक छन्दक आधार पर यदि मैथिल छन्दक मूलतः अध्ययन कएल जाए तँ से एक गोट बड़ विशिष्ट वस्तु होएत। रामायणमे अनेको ठाम छन्दक उल्लेखक सङ्ग सङ्ग भेटैत अछि, मैथिलसङ्गीतानुसारेण, लोचनशर्ममतानुसारेण, ओ तखन रागक नाम सएह छन्दहुक नाम देल अछि। यथा, चौपाइक नामान्तरमे मैथिल रागक एहि पंद्रह गोट नामसँ छन्दक सेहो नाम कहल अछिः--पर्वतीय बराड़ी छन्द, केदार केदारीय, श्रीमालव, सरसासावरी, द्राविड्यासावरी, शुद्द मलारीय, शंकुकनाटीय मिथिलागौड़मालव, घनछी शाम्भवी, देवकामोद, मंगलराजविजय, धनछी पञ्चस्वरा, योगिआ

मालव, कामोदनाट, ओ जयकरी। तहिना हरिपदकें श्रीछन्द, नेपाल वराड़ीय, देवराजविजय, प्रियतमा मालव ओ वसन्त ई पाँच गोट नामान्तर अछि। दोबयकें शुद्ध
कोडारी, रूपक घनाक्षरीकें कानरा राजविजय एवं रूपमालाकें केदारमालवीय सेहो कहल अछि। मिथिलामे सङ्गीतक परम्परा अपन भिन्ने छल, स्वतन्त्र छल ओ से आइ छओ सए वर्ष सँ आबि रहल छल। एमहर कतोक दिनसँ से परम्परा टूटि गेल अछि। लोचनक रागतरङ्गिणी ओ रागसर्वस्व एहि प्रसङ्गक प्रायः अन्तिमे ग्रन्थ थिक। रागक आनो ग्रन्थ नेपालमे अछि जकर अध्ययनसँ सम्भव थिक जे मैथिलसङ्गित-शास्त्रक उद्धार भए सकए। एहिमे कोनो सन्देह नहि जे कवीश्वर रागतरङ्गिणीक तत्त्वकें जनैत छलाह ओ तद्द्वारा मैथिल सङ्गीत-शास्त्रक मर्मक वेत्ता छलाह। हुनक लेखसँ इएह प्रकट होइत अछि जे मैथिली गीतक छन्दक रीति सङ्गीतक अनुसार छल, रागहिक नामसँ छन्दहुक परिचय भए जाइत छल। परन्तु एकहि छन्दमे पन्द्रह पन्द्रह गोट रागक समावेश कोना होइत अछि ओ तखन ओकर छन्दहुक पंन्द्रह पंन्द्रह गोट नाम कोन कार्यक ई विषय समाधेय भए जाइत अछि। सङ्गीतक हम वेत्ता नहि छी अतएव एहि प्रसङ्ग किछु कहब अनधिकार चेष्टा होएत। मिथिलाक जे प्राचीन सङ्गीत-परम्परा छल से प्रायः नष्ट भए गेल ओ तकर पुनरुद्धार कार्यमे जँ कओ तत्पर होएताह तँ हमरा दृढ़ विश्वास अछि जे हुनका केवल रामायणहिटासँ नहि अपितु कवीश्वरक आनहु आन रचनामे निर्देशित राग ओ छन्दक उल्लेखसँ ओ तकर विवेचनासँ बड़ उपकार होएतैन्हि।

एवं कवीश्वरक यथार्थ प्रतिभा ओ कठोर कर्मठता सबसँ विशेष मैथिलीक साहित्यहिक क्षेत्रमे द्योतित होइत अछि, कारण, हिनक समस्त कार्य-जातक प्रत्यक्ष फल एही क्षेत्रमे सबसँ विशेष परिलक्षित होइत अछि। परन्तु हिनक अनुसन्धानक क्षेत्र एतबहि धरि सीमित नहि छल। मैथिलक इतिहासक, ओकर पुरावृत्तक, सेहो ई पूर्णरूपेण अनुसन्धान करैत रहलाह तथा महामहोपाध्याय डा० गङ्गानाथझाजीक जे उक्ति हम आदिअहिमे उद्घृत कएल अछि ताहिसँ स्पष्ट अछि जे मैथिल ब्राह्मणक पुरावृत्तक प्रसङ्ग ई बहुत लिखने छलाह। इहो परम्परया श्रुत अछि जे मैथिलब्राह्मणक मूलग्रामक विचारात्मक निबन्ध जकरा मैथिलब्राह्मणक इतिहास सेहो कहि सकैत छी कवीश्वर लिखने छलाह। मिथिलाक गामक परिचय-विषयक हिनक लेखक तीनि गोट पात जे हमरा उपलब्ध भेल अछि तकर चर्चा हम पूर्वहिं कएल अछि। ताहिसँ भिन्न एहि प्रसङ्ग विशेष किछु प्रकाशमे नहि आएल अछि। रामायणमे कवि लोकनिक उल्लेख परिचयक सङ्ग नहि अछि। केवल पुरुषपरीक्षाक अनुवादमे टिप्पणीक रूपमे किछु परिचय भेटैत अछि परञ्च ताहिसँ ई दृढ़ भए जाइत अछि जे मैथिल ब्राह्मणक इतिहासक अनुसन्धानमे ई ताहि मार्गक अवलम्बन कएलें छलाह जाही द्वारा ओकर यथार्थ अनुसन्धान भए सकैत अछि। से थिक मैथिलब्राह्मणक पञ्जी। एहि छओ सए वर्षमे मैथिल ब्राह्मणक परिचय मूलग्रामहिसँ देल जाइत अछि ओ एमहर हमरा केवल कवीश्वरहिक लेखमे ई भेटल अछि जे परिचयमे मूलग्रामक उल्लेख अवश्य रहैत अछि। उदाहरणार्थ, गोसाञि साहेब-रामदाससँ लए महन्थ वंशीदास धरि पवाढ़ी स्थानक छबो गोट महन्थक परिचय प्रकाशित अछि। पुरुषपरीक्षामे इन्द्रजालविद्यकथामे सिम्बलिवनक परिचयमे देल बलिराजगढ़ ओ ताहि सङ्ग हरिअम्बकुलक भिन्न भिन्न शाखा एवं तत्तद्कुलोद्भव महापुरुषक वर्णन थोड़मे हिनक एहि विषयक ज्ञान-भण्डारक निदर्शनस्वरूप बुझबाक थिक। हिनक एक गोट पोथामे एहि प्रसङ्ग दू गोट बड़ अद्भुत कथा भेटल अछि। प्रथमतः ई "सुकविचरितामृत" नामसँ प्राचीन मैथिल कविलोकनिक परिचय लिखए लागल

रहथि,कतेक लिखलैन्हि से तँ सब पोथा भेटलहि उत्तर बुझल भए सकैत अछि। हमरा पोथामे नलचरित-नाटककर्ता गोविन्दक परिचय लिखल अछि। आगाँ प्रायः दोसर पोथामे लिखल भेटए। परिचयमे "दिघबे" मूलक परिचयमे ई लिखैत छथि:-

"ई वंश दीर्घघोष, दीर्घोदय, दिघबै ब्राह्मण मैथिल छलाह। शाण्डिल्य गोत्र। पटना राजधानी छल ताहि समयमे दीघबाड़ामे साग्निक ब्राह्मण छलाह, जे गङ्गातटक उत्तर शालग्रामीक पश्चिम प्रदेश ओ सरयूक पूर्व भागमे अछि, जे देश अद्यपि छपरा--सारनि विख्याति अछि। तात्पर्य, छपरा नाम षट्परा, षट्कर्मकर्त्ता लोकनिक निवास भूमि। सारनि शब्दार्थ--अरणि खदिरकाष्ठ-रचित अग्नि उत्पन्नार्थ वस्तु से सहित देश। ताहि ठाम अम्बिका भगवती अधिष्ठात्री अद्यापि छथि ओ अत्युच्च दुर्गाकार दीर्घबाड़,--अग्निहोत्र स्थान।"

तहिना वररुचिक परिचयक प्रसङ्गमे ई लिखैत छथि जे विक्रमादित्यक दायाद भरक्षत्रिय मिथिलामे आएल ओ कलिगाममे (जे गाम दरिभङ्गासँ कोस तीनिएक पश्चिम अछि) ओकर केन्द्र छल। बौद्धक आक्रमणसँ कलिगाम छोड़ि ओ सब पूब दिशि पड़ाएल ओ जाहि तप्पा अथवा परगन्नामे पसरि गेल तकर नाम भेल "भरोड़ा" ओ मिथिलामे जाहि जाहि गाममे ओकर निवास भेल तकर नाममे "भर" लागल यथा भराठी, भरौली, भड़ोड़ा, भौर, भौड़ा, भराम, भरथुआ, भरहो इत्यादि। एहि रूपें गामक व्युत्पत्ति कए कए तत्तत् स्थानक प्राचीन इतिहासक ऊहि करब, हिनक वैशिष्ट्य अद्‌भुत छल।

एहि प्रसङ्ग एक गोट आओर लेख जे हमरा भेटल अछि से अपूर्व महत्त्वक अछि। भामतीकार वाचस्पति मिश्र दार्शनिक--जनिका वृद्ध वाचस्पति कहैत छिऐन्हि--मैथिल छलाह से सब मानैत छी परन्तु पञ्जीप्रबन्धसँ बहुत प्राचीन थिकाह तें ने हुनक अपन परिचय भेटैत अछि ने हुनक आश्रय महाराज नृगक कोनो पता अछि। हिनका प्रङ्ग कवीश्वरक लेख एक गोट पोथामे एहि रूपें "बड़गाम" गामक परिचयक क्रममे भेटल अछि :-

"कपरौती प्रगन्ना निशङ्कपुरकूड़ा-श्रीचण्डीदेवीसँ डेढ़ कोस पूर्वभाग

बड़गाम
कुण्डलिया
बरसम बरइठ बसनही बेलइठ ओ बड़गाम।
बलिया बड़िवन बथनहा श्रीवाचस्पतिधाम।।
श्रीवाचस्पतिधाम पाठशाला अगद्वारी।
निकट बोआरि बुधाम नाम यह गाम है भारी।।
गुप्तनृपतिको राजकाज यज्ञादिम सत्तम।
भनत चन्द्र नृगभूप भये कलिमे श्रीवर-सम।।

अगद्धारी एक बहुत उच्च डीह मौजे बड़गामसौं उत्तर ऐशान कोन बसनहीसौं नैर्ऋत

कोनमे अछि। पूरा कोस नहि होएत। सएह किंवदन्ती अछि जे वृद्ध वाचस्पतिक पाठशाला थिक।

ओ वाचस्पति राजा नृगक समय छलाह जे राजा गुप्त-वैद्यवंशी छलाह। ओ प्राचीन मिथिलामे जतए अग्निहोत्री लोक रहथि ताहि ठामक नाम "बाट" यहन यथा क्रथबाड़, सिंहबाड़, वसुबाड़ इत्यादि। तथा मङ्गुबाड़। इहो डीह चिह्नित अद्यापि अछि, यद्यपि सह्याद्रि खण्डमे राजा मङ्गुक कथा अछि से क्षत्री लोकक, मिथिला-देशान्तर्गत नहि अछि।"

एहि लेखमे कुण्डलियाक भाषा हिन्दी दृष्टव्य। स्पष्ट अछि जे कवीश्वर गाम सबहिक परिचय एहिना कुण्डलियामे लिखए चाहैत छलाह जाहिमे नाना मैथिल मनीषीक परिचय ख्यापित करितथि। एकर प्रचारकें व्यापक बनएबाक हेतु एकर भाषा ओ हिन्दी राखल। कतेक एहन परिचय ई लिखलैन्हि से बुझल नहि होइत अछि। स्थानक परिचयक हेतु ई तत्प्रान्तीय ग्रामावलीक उल्लेख करैत छथि जाहिसँ स्पष्ट अछि जे ई ओ सब गाम अपना आँखिएँ देखने छलाह नहि तँ एहन परिचय नहि दए सकितथि। गामक नामक व्युत्पत्तिक प्रसङ्ग हिनक ऊहि यथा "बाड़"कें "बाट"सँ मिलाएब ओ तकरा अर्निहोत्रीक वासस्थान कहब चमत्कारक छल। परञ्च एहि सङ्ग अप्रासङ्गिक विषयकें जोड़ि देबाक अभ्यासकें हमरा लोकनि दोष कहब, कारण "बाट" बला कोनो विषय एतए उपस्थित नहि छल। मुदा एहि रूपक परिचयक सङ्कलन करब, किंवदन्तीकें एना पड़िकें ताकब
ओ तकर एहि रूपें स्थाननिर्देश करब साधारण अनुसन्धानक काज नहि थिक ! खेद जे एकर सङ्कलन नहि भए सकल अछि, प्रायः आब भैओ नहि सकत। एहिना महाराज शिवसिंहक मन्त्री सुप्रसिद्ध कायस्थकुलभूषण कवि अमृतकरक परिचय कवीश्वर दैत छथि।

"अमृतकर नामक मैथिल कायस्थ राजा शिवसिंहक मन्त्री छलाह जे चनौर अमरावती जिला दड़िभङ्गाक निवासी छलाह जनिक निवासस्थान अमीडीहसौं अद्यपि विख्यात अछि। उक्त डीह महादेइ पोषरिसौं निकटहिं पश्चिम अछि। महादेवीपोषरि तौं मनीगाछीसों दक्षिण पर्वताकार भीड़सौं दृश्य अछि।"

परन्तु एहि सङ्ग इहो कहि देब आवश्यक अछि जे परिचयमे कवीश्वर अनेक ठाम भ्रम सेहो कएल अछि ओ एहि दिशामे सर्वप्रथम अनुसन्धानकर्त्ताक हेतु से कोनो आश्चर्यक विषय नहि। एकर प्रधान कारण ई छल जे पञ्चीक आधार पर मैथिल मनीषीक परिचय संग्रह आरम्भ तँ ओ कएल परञ्च पञ्जीक विशाल साहित्यक कोनो अंश हुनका उपलब्ध नहि भए सकल ओ तें ओ ताहि साहित्यक स्वयं अनुशीलन कए परिचयक संग्रह नहि कए सकलाह। केवल पञ्जीकारक मुहसँ सूनि तखन ओ एहि रूपें एतेक परिचय देल हमरा तँ इएह आश्चर्य प्रतीत होइत अछि। एहि प्रसङ्ग एक गोट दृष्टान्त पर्याप्त होएत। नलचरित्रनाटककारकें ई सोदरपुरमूलक कहैत छथि से भ्रम थिकैन्हि। गोविन्दठाकुर अपन मूल नहि कहलें छथि परञ्च अपन प्रपितामह धरिक नाम कहलें छथि ओ पञ्जीमे हमरा हुनक परिचय भेटि गेल अछि जे डा० श्रीजयकान्त मिश्रजीक इतिहासमे उद्धधृत अछि। सोदरपुर-मूल बड़ प्रसिद्ध अछि ओ से

थिक सिंहाश्रम मूलक शाखा। कवीश्वर कहैत छथि जे सिंहाश्रम प्रतिसरामूलक शाखा थिक ओ प्रतिसरा दीर्घघोषक, जाहि वंशक एक उज्ज्वल मणि वररुचिमिश्र छलाह। ई चारू मूल, सोदरपुर, सिंहाश्रम, प्रतिसरा ओ दीर्घघोष, शाण्डिल्यगोत्र थिक ओ तें चारू मूलतः एकहि कुलक शाखा हो ताहिमे कोनो विरोध नहि भए सकैत अछि। एहि कुलमे एक जन महापुरुष हलायुध भेल छथि ओ हलायुध सोदरमूलक बीजी पुरुष पञ्जीमे कथित छथि। कवीश्वर स्वयं ई कथा नहि कहलें छथि; हमरा हुनक लिखल एहि प्रसङ्गक व्यवस्थापत्र सेहो उपलब्ध भेल अछि ओ वारंवार हुनक पोथा सबमे एहि विषयक चर्चा भेटल अछि; परन्तु कवीश्वरक एहि परिचयक आधार पर सोदरपुरमूलक बीजी पुरुष हलायुधकें ब्राह्मणसर्वस्वकार हलायुध कहब असङ्गत। कवीश्वर जाहि हलायुधक परिचय दैत छथि से छलाह शाण्डिल्यगोत्र ओ ब्राह्मणसर्वस्वकार ओहीग्रन्थक उपोद्घातमे अपनाकें वत्स्यगोत्र कहैत छथि। अतएव केवल नामक साम्यसँ व्यक्तित्वक निर्धारण भ्रमाह भए जाइत अछि। एकर सबसँ पैघ दृष्टान्त विद्यापति छथि। मिथिलामे एहि नामक अनेक व्यक्ति भए गेल छथि ओ तीनि गोट विद्यापतिक तँ रचना समेत उपलब्ध अछि। स्वयं महाराज शिवसिंहक दरवारमे दू गोट विद्यापतिठाकुर छलाह, एक बिसैवार विद्यापतिठाकुर महाकवि, दोसर निकुतिवार विद्यापतिठाकुर, महाराजक श्वशुर।

परन्तु एहि भ्रम सबसँ कवीश्वरक अनुसन्धानक महत्त्व कनेको न्यून नहि होइत अछि ! के मनुष्य भ्रम नहि करैत अछि? अनुसन्धानक क्षेत्रमे पूर्वगामी कार्यकर्त्ताक भ्रम सर्वथा क्षन्तव्ये होइत अछि, परवर्त्ती कार्यकर्त्ताक ई कर्त्तव्य होइत अछि जे पूर्वक भ्रमकें शोधित करी। हमरा एतबए प्रतिपाद्य अछि जे मैथिल ब्राह्मणक पुरातत्त्वक प्रसङ्ग कवीश्वर अन्त धरि अनुसन्धान करैत रहलाह मुदा से कतहु क्रमबद्ध प्रकाशित नहि भए सकल तें एहि विषयक हुनक ख्याति दिनानुदिन लुप्त भए रहल अछि। यदि हुनक पोथा सबसँ ताकि ताकि एहि विषयक हुनक सबटा लेख एकत्र कएल जाए तँ नहि क्रमबद्ध तथापि अग्रिमक अनुसन्दिधित्सुक हेतु ओ बड़े विलक्षण मार्गदर्शक सिद्ध होएत।

परन्तु कवीश्वरक ओ ख्याति जे काल बितलहु उत्तर कम नहि भेल अछि ओ प्रायः जाधरि मिथिलाभाषा रहत ह्रास दिशि नहि होएत ओ थिक हिनक कवित्वक ख्याति। मैथिलीमे एतेक कविता दोसर नहि केओ रचलक। हिनक रामायण हिनका अमर कए देलक। परन्तु हिनक कविता मैथिलीक कविताक प्राचीन परम्पराकें
छोड़ि एक गोट नव मार्गक अनुसरण कएलक ओ तें हिनका मैथिलीक कविताक क्षेत्रमे नवयुगक स्रष्टा कहब कनेको अयुक्ति नहि। परन्तु लोककें से मानबामे विलम्ब भेलैक ओ आरम्भमे जे हिनका कवीश्वर कहए लागल से उपहासक दृष्टिसँ। मिथिलाभाषामे कवीश्वर भाटकें कहल जाइत छल ओ हिनका कवीश्वर कहबाक तात्पर्य छलैक जे ई कविता नहि रचैत छथि, फकड़ा बनबैत छथि। कविवर हर्षनाथझाक कविताक सङ्ग हिनक कविताक तुलना करब तँ स्पष्ट होएत जे विद्यापतिक सम्प्रदायक अन्तिम महाकवि हर्षनाथझा अपन कविताक भाषाकें ततेक संस्कृत-निष्ठ बनाए लेल जे ओ एकवर्गीय भए गेल, केवल पण्डितक बोधगम्य भए रहल। कवीश्वर अपन कविताक भाषाकें जनसाधारणक भाषा राखल जे काज किछु किछु मनबोध कएने छलाह परन्तु पूर्ण नहि कए सकलाह। वस्तुतः मिथिलाभाषाक साहित्य जनसाहित्यक रूपमे चलल ओ जन-साहित्यहिक रूपमे ओकर प्रसार ओ प्रचार होएत। वर्गीय बनओने ई भाषा ह्रासोन्मुख भए जाएत। वस्तुतः कवीश्वरक पद्यक भाषा गद्यक भाषासँ भिन्न प्रकारक किञ्चितो नहि अछि।

१९०५ ई० मे मैथिली-हितसाधनक नामसँ मैथिली मासिक पत्रक प्रकाशनक आयोजन जखन जयपुरमे होइत छल तखन कवीश्वरकें सहयोग-याचनाक एक गोट पत्र ओतएसँ पण्डित चन्द्रदत्तझा लिखलें छलथिन्ह। तकर उत्तर कवीश्वर १५ जनवरीकें कवितामे देल। एहिमे भाषाक चमत्कार द्रष्टव्यः- लिखल जाय मिथिला इतिहास--नहि हो ताहिमे शिथिल प्रयास। विषय विशेष हमहु लिखि देब--स्वप्नहु एक टका नहि लेब। गुणरत्नाकर थिक जयपूर--आग्रह ग्रह नहि एको क्रूर। पण्डित सभ्यक नियत निवास--बहुत पड़त नहि अनकर आस। पत्र बहुत जन हर्षित लेत--नियमित मूल्य पूर्व दए देत। मासिक मिथिला पत्र प्रचार--मैथिल भाषें विहित विचार। सभ तकइत अछि पत्रक बाट--पौषक दिवस रहल अछि खाँट। नमस्कार लिखइत छथि चन्द--सत्वर लिखब कुशल आनन्द।

इएह थिक हिनक कविताक भाषाक दृष्टान्त ओ हिनक जे कविता देखब सबमे, रामायणमे, गीत-कवित्तमे, पुरुषरीक्षाक अनुवादमे, भजनमे, शान्तिपदमे, देशदशावर्णनमे, महेशवानीमे, नचारीमे सर्वत्र इएह भेटत। एहिमे कतहु कतहु नीरसता अवश्य आबि जाइत छैक, पद शुष्क सन प्रतीत होइत छैक, परञ्च से तँ पण्डितामे जे भाषा संस्कृत-बहुल ताहूमे कतहु कतहु कृत्रिमताक बोध होअहि लगैत छैक। प्रशंसनीय तँ थिक हिनक कवितामे भाषाक सरलता, स्वच्छता, कोमलता, ओ तखन फेर व्यङ्ग्य ध्वनि आदिक चमत्कार। एकरा फकड़ा कहू परञ्च एहन फकड़ो लिखबाक प्रतिभा होइत छैक ओ से कवित्व-प्रतिभा कवीश्वरकें प्रचुर मात्रामे छल।

तहिना प्राचीन परम्पराक अनुसार श्रृङ्गारक कविता सेहो कवीश्वर बड़ थोड़ लिखलैन्हि। गीतिसुधामात्रमे किछु तिरहुति ओ नायिका सबहिक वर्णन अछि नहि तँ हिनक रामायणमे श्रृङ्गार रसक सर्वथा अभाव अछि ओ अन्यान्यो जे सहस्रावधि हिनक पद अछि ताहिमे गनले गूथल श्रृङ्गारक पद होएत। जेहो श्रृङ्गारक कविता ई लिखल ताहिमे बड़ झापल कथा अछि, उत्कट श्रृङ्गारक कविता तँ हिनक एखन पर्यन्त दृष्टिगोचर नहि भेल अछि। उदाहरणार्थ संयोगक,

अषाढ़मे नवीन मेघ-नीलिमा निहारि,
वृथाभिमान सौख्य-हानि चित्तमे विचारि।
लती जकाँ लपट्टि जाउ कन्त गाछ डारि,
परस्पराभिलाष पूर होउ धन्य नारि।।
अथवा वासकसज्जा, यथा
अटारि की अहाँक की अहाँक ई पलङ्ग,
प्राणनाथसौं विरोध प्रीतिपुञ्ज भङ्ग।।
की अहाँक ज्ञान की युवत्व जोर अङ्ग,
शीघ्र गर्व सर्व हारि कन्त अङ्ग सङ्ग।।
अथवा सौन्दर्यगर्विता गुप्ता यथा
मदान्ध भृङ्ग हाथसौं हटाय नै हटैछ,
सुगन्धि-पूर दूरसौं शरीरमे सटैछ।

मुखारविन्द-भ्रान्ति ओठ आबिकें चटैछ,
वृथा कलङ्क अङ्क मोर लोकमे पटैछ।।

एतबहुसँ ई कथा तँ स्पष्ट भए जाइत अछि जे विद्यापतिक समयसँ कविताक जे एक गोट परम्परा, एके गोट परम्परा आबि रहल छल, तकरा छोड़ि कवीश्वर कविताक रचनामे एक गोट नवीनता आनल जकरा हम आत्माभिव्यक्तिमूलक कहब, स्वानुभूति-प्रकाशन कहब। की श्रृङ्गारक गीत हो की भगवतीक, गङ्गाक गीत हो वा नचारी, विद्यापति जहिना कहि गेलाह तहिना कहबाक रीति इएह छोड़ल। आदिमे, यथा विद्यापतिकें, एहिमे अपन ह्रदयक उद्‌गार, भावनाक उद्रेक, अनुभूतिक अभिव्यक्ति छलैन्हि, किएक तँ, तावत ई मार्ग हुनका हेतु नवीन छल, परञ्च क्रम क्रम ई मार्ग ततेक पुरान भए गेल जे कविता कविक भावक अभिव्यक्ति नहि रहल, कविता रचबाक जे परम्परागत शैली छल तकर अनुसरण मात्र रहि नितान्त कृत्रिम भए गेल। फलतः पुरान कविलोकनिक कविता सब एकहि रङ्क लगैत अछि भावमे, भाषामे, कल्पनामे, चमत्कारमे। कवीश्वर से मार्ग त्यागि अपन ह्रदयक यथार्थ उद्‌गार प्रकाश करए लगलाह। देश-दशाक वर्णनमे चौमासाक भास पर हिनक रचनाक चमत्कार अछि :-

भदइ सुखाएल धान दहाय
गरिब किसान कि करत उपाय
कोना दिन काटत
जिउत कि खाय
बालबचा मिलि करु हाय हाय
ह्रदय जनु फाटत।।१।।
बाँधल छहर ऊँचकै आरि
राति दिना सभ धयल कोदारि
सारि छल उपजल
लेल संहारि
निर्दय कमला किदहुँ विचारि
हारि हिय बैसल ।।२।।
समटु समटु जल कमला माय
करु जनु एहन देवि अन्यान्य
असह दुख होइछ,
आस लगाय
कैलहुँ खरच करजकै खाय
विकल खरच करजकै खाय
विकल जन होइछ।।३।।
बड़ रौदी छल बरिसल पानि
मघ असरेश कयल नहि हानि
चलल छल धन्धा।
कह कवि "चन्द"

अपन बुतै की होयत काज
समय भेल मन्दा ।।४।।

तहिना हिनक शान्तिक पदमे शार्दूलविक्रीड़ित छन्दमे
जे जे वस्तु कमाय हाय धयले नै सङ्ग जाएत से।
मानू सत्य कथा व्यथा परिहरू क्यो आबि खाएत से।।
छी छी भोग वियोग योग्य गृहिणी आने लोभायत से।
ई जे देह सनेहसौं भरल छी की घूरी आएत से।।
अथवा
देह जरातुर भेल विधि अतिक्रूर भेल
मनोरथ दूर भेल दिवस कटैत छी।
कञ्चुकित साप सनरहित प्रताप सन
पराचीन चाप सन लोकसौं हटैत छी।
एकटा नै दाँत मुख भोजनमे कोन सुख
पाहुन समान भुष सेजमे सटैत छी।
"चन्द्र" भन रामचन्द्रप्रेयसी भरोस तोर
भोर उठि बैसि नाम प्रेमसौं रटैत छी।।

हिनक शत शत पद की वैराग्यक, की भक्तिक, एहिना हिनक मनोगत भावकें, यथार्थ अनुभूत सुख किंवा दुःखकें व्यक्त करैत अछि ओ ई नवीनता हिनका नवयगुक स्रष्टा बनबैत अछि। परन्तु छन्दक विषयमे ई पुराने चालि राखल। अधिकांश पद हिनक गीते अछि, किछु कवित्त अछि ओ ताहिसँ भिन्न संस्कृतक छन्दक बड़ चमत्कारक प्रयोग अछि, नवयुगमे जे छन्दक प्रसङ्ग नवीनता देखि पड़ैत अछि से टा हिनकामे ओतेक नहि बढ़ि सकल। कविता ओ सङ्गीतक परम्परागत सम्मिश्रण हिनकहु मध्य प्रबल रहल ओ ई तँ चौपाई समेतकें रागतालक संज्ञा दए ताही नामक छन्द ओकर नाम देल।

ओ मुक्तककें छोड़ि प्रबन्ध-काव्यक रचना मिथिला-भाषामे इएह कएल। हिनक रामायण मैथिलीक प्रथम महाकाव्य थिक ओ योगरूढ़ि अर्थमे नहि तँ यौगिक अर्थमे तँ निश्चये से कहाओत। हिनकासँ पूर्व मनबोध प्रसिद्ध भाषा-कवि भोलनझा कृष्णजन्मक कथा प्रबन्ध-रुपें महाकाव्य जकाँ लिखए लगलाह परन्तु ओ बड़ छोट भेल, छुछुन लगैत अछि ओ सर्वत्र एकहि छन्दमे रहबाक कारणें लगले नीरस लागए लगैत अछि। परन्तु श्रृङ्गार-रसक पुरान परम्पराकें छोड़ि वात्सल्य-रसक, ओ किछु किछु वीररसक, काव्य जन-भाषामे लीखि ओ मैथिली-काव्यकें पुनः जनसाहित्यक रूप देल। परन्तु मनबोध प्रसिद्धो तत्सम शब्दक तद्भव रूपमे प्रयोग कए भाषाकें ततेक प्राकृत बनाओल जे ओ ठाम ठाम कृत्रिम भए गेल अछि ओ नीरस लगैत अछि। कवीश्वर ओही शैलीक अवलम्बन कएल परन्तु भाषाक स्वरूप ओ विकृत नहि कएल। शिष्ट जन जहिना बजैत छथि कवीश्वर तहिना कवितो लिखल। तें हिनक कवितामे ने कतहु भाषाक कृत्रिमताक भान होइत अछि, ने अर्थक कठिनताक बोध होइत अछि; भाषा ने पण्डितामे अधिक अछि ने अपशब्दिते, स्वाभाविक अछि।

रामायणक प्रसङ्ग किछुओ समालोचना एहि छोट निबन्धमे नहि भए सकैत अछि परन्तु एतबा धरि सूचित कए देब आवश्यक जे कवीश्वर अपन रामायणक रचना अथ्यात्म-रामायणक आधार पर कएल ओ से मूलसँ ततेक अधिक मिलैत अछि जे एकरा अधिकांशतः अध्यात्म-रामायणक अनुवादो कही तँ दोष नहि। बहुत
स्थल अछि जाहिठाम कवीश्वरक वर्णन मौलिक अछि ओ से अंश अद्‌भुत अछि, सब दृष्टिएँ अपूर्व अछि--यथा मिथिलावर्णन, लक्ष्मण-परशुराम संवाद, लङ्का-दाह-वर्णन, रावण-अङ्गद-संवाद इत्यादि। परन्तु जतए मूलक अनुसरण अनुवाद जकाँ अछि ततए कृत्रिमताक भान होअए लगैत अछि, अर्थ ओझराए लगैत अछि, उक्तिमे विच्छित्तिक उत्कर्ष नहि भेटैत अछि। अध्यात्म रामायण पुराण जकाँ अछि, काव्य नहि थिक, ओ तें ओहि आधार पर लिखल रामायणमे काव्यत्वक आशा कोना करू। तखन उत्तम काव्य ई ओतहि ओतहि अछि जतए कवीश्वर मूलकें त्यागि अपन प्रतिभासँ मौलिक प्रतिपादन कएल अछि। कवीश्वरक रामचन्द्र भगवानक अवतार छथि, सीता लक्ष्मी-स्वरूपा थिकीह। रामक वृत्तान्त भगवल्लीला। जकाँ स्वरचित वर्णित अछि, काव्यक गुण जे साधारणीकरण थिकैक से एहिमे नहि घटैत अछि। वाल्मीकिमे ई विषय नहि अछि ओ तें वाल्मीकिक रामायण काव्य थिक। काव्यक उद्देश्य जे "रामवत् प्रवर्त्तितव्यं" ई कोना चरितार्थ होएत जँ राम ईश्वर छलाह। ईश्वर जकाँ मनुष्यक आचरण कोना भए सकैत अछि? तँहि तँ संस्कृत-साहित्यृ-शास्त्रमे ईश्वर-विषया रति, रस नहि, भाव कहबैत अछि।

परन्तु काव्यत्वमे जे हानि अछि, भक्तिमे से लाभ भए जाइत अछि। रामायण भक्ति-काव्य थिक, भक्तिक उद्रेक थिक, पाठककें भक्तिक उद्‌बोधन दैत अछि। ईश्वरक नाम गुण ओ लीलाक कीर्तन एहि ग्रन्थक विषय थिक जाहिसँ सीता-रामक महिमा ख्यापित हो। काव्यक जे गुण थिकैक आनन्द से कवीश्वरक रामायणमे ओतेक नहि भेटत, एकर लक्ष्य थिक परमार्थ-साधन। से एहन सरल ओ सरस रीतिएँ गोस्वामी तुलसीदास जकाँ गेय पदमे रचि कवीश्वर मिथिलाभाषाभाषी जनताकें श्रेयसाधनक एक गोट एहन विलक्षण, एहन चमत्कारक, एहन मनोरञ्जक कृति दए गेलाह अछि जकर महिमा अनन्त अछि। जेना वाल्मीकि रामचरितक कीर्तनक प्रसादें आदिकविक ख्याति पाबि अमर छथि, महात्मा तुलसीदासजी समस्त आर्यावर्तमे घर घर श्रद्धा ओ भक्तिसँ पूजित भए अमर भए गेल छथि, तहिना कवीश्वर जानकीक जन्मभूमि एहि मिथिला-देशमे अमर रहताह। ह्रदय छल हुनक भक्तिसँ ओतप्रोत, जीवनक तुमुल संघर्षमे अवलम्ब छल हुनक एक गोट मात्र, भगवद्‌विषय अटल ओ अनन्त भक्ति। कवीश्वर किछु योगाभ्यास सेहो करथि ओ योगी जकाँ स्थिर-प्रज्ञ भए भगवद्‌भजनमे अपन जीवन यापन कएल। हुनक शत शत भक्तिक गीत कवित्त इएह द्योतित करैत अछि जे स्वान्तःसुखाय ओ जन्म भरि भगवद्‌भजनमे कविता रचैत रहलाह। ओही पुण्यक प्रसादें हुनकासँ एहन रामायण रचित भेल जे हुनक स्थिर भक्तिक परिचायक अछि ओ लोकविषय भक्तिक प्रचार कए हुनक यशःशरीरमे जरामरणज भयकें नहि आबए देत। कोनो आश्चर्य नहि जे लोकप्रियतामे हुनक आओर सब कृतिकें दबाए ई रामायण हुनक अक्षय यशक एक मात्र स्तम्भ रहि गेल अछि। चन्दाझाक नामक सङ्ग सङ्ग रामायणक सहसा उद्धोध हिनक महत्त्वक ज्ञापक थिक।

कविश्वरकें अमरत्व प्रदान करबाक हेतु रामायण पर्याप्त हो, लोकप्रियतामे कवीश्वरक

रामायण विद्यापतिक गीतक सदृश बुझल जाओ, मैथिलीक प्रचारमे रामायणक महिमा अपरिमित हो, परन्तु मैथिली-साहित्यक इतिहासमे कवीश्वरक मिथिला, मैथिल ओ मैथिलीक पुरावृत्त्क अनुसन्धान-कार्य कनेको कम महत्त्वक नहि अछि ओ से ख्याति हिनक अमर रहए ई प्रत्येक सत्यजिज्ञासुक कर्त्तव्य थिक।

इति